मल्हार

कक्षा 6 के लिए हिंदी की पाठ्यपुस्तक

सत्र 2026—27

विद्यया ऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

यह पाठ्यपुस्तक शासकीय संपत्ति है। इसका क्रय-विक्रय अवैधानिक है।

निःशुल्क वितरण हेतु

प्रकाशन वर्ष - 2026

छत्तीसगढ़ शासन, स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा स्वीकृत

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली के सौजन्य से छत्तीसगढ़ राज्य के द्वारा अनुकूलित

आवरण पृष्ठ एवं ले आउट डिजाइनिंग

रेखराज चौरागड़े, राजेंद्र सिंह ठाकुर, हिमांशु वर्मा

प्रकाशक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

मुद्रक

छत्तीसगढ़ पाठ्यपुस्तक निगम, रायपुर (छ.ग.)

मुद्रणालय

मुद्रित पुस्तकों की संख्या - ____________________

प्राक्कथन

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के नए पाठ्यक्रम के आलोक में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली द्वारा विकसित पाठ्यपुस्तकों में छत्तीसगढ़ की संस्कृति एवं संदर्भों को जोड़कर उन्हें राज्य के परिप्रेक्ष्य में अनुकूलित किया गया है।

यह पाठ्यपुस्तक विद्यार्थियों के लिए ज्ञानवर्धन, दक्षता विकास एवं 21वीं सदी के उन्नत कौशलों के विकास में सहायक सिद्ध होगी। पाठ्यपुस्तक के रोचक विषयवस्तु से राज्य के विद्यार्थियों को स्थानीय संस्कृति एवं संदर्भों को समझने के अवसर मिलेंगे। विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास, वैश्विक नागरिक निर्माण एवं शैक्षिक उद्देश्यों की पूर्ति होगी।

हम राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली के निदेशक के प्रति कृतज्ञ हैं, जिन्होंने हमें एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा सृजित पाठ्यपुस्तकों को छत्तीसगढ़ राज्य के संदर्भ में अनुकूलित किए जाने हेतु स्वीकृति दी है। इस दिशा में एन.सी.ई.आर.टी. के विषय विशेषज्ञों द्वारा समय-समय पर दिए गए समुचित मार्गदर्शन, सुझाव एवं सहयोग के लिए हृदय से आभारी हैं।

हम 'छत्तीसगढ़ राज्य शिक्षा स्थायी समिति' को पाठ्यपुस्तक निर्माण कार्य में उनके सक्रिय योगदान के लिए तथा प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से इस कार्य से जुड़े समस्त विद्वतजन के प्रति आभार व्यक्त करते हैं।

यद्यपि संवर्धन एवं परिष्करण की संभावनाएँ सर्वदा भविष्य के लिए बनी रहती हैं इसलिए पाठ्यपुस्तक के परिमार्जन एवं उपयोगिता के संबंध में राज्य के विद्यार्थियों, अभिभावकों, शिक्षकों, शिक्षाविदों एवं अन्य जनों से प्राप्त होने वाले प्रत्येक सुझाव राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़ के लिए स्वागत योग्य होगा। हमारा लक्ष्य छत्तीसगढ़ राज्य को शिक्षा के क्षेत्र में अग्र पंक्ति में स्थापित करना है।

संचालक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
छत्तीसगढ़, रायपुर

आमुख

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एक परिवर्तनकारी पाठ्यचर्या और शैक्षणिक संरचना की अनुशंसा करती है जिसके मूल में भारतीय संस्कृति, सभ्यता और भारतीय ज्ञान परंपरा निहित है। यह नीति विद्यार्थियों को इक्कीसवीं सदी की संभावनाओं और चुनौतियों के साथ रचनात्मक रूप से जुड़ने के लिए तैयार करती है। नई शिक्षा नीति में निहित चुनौतियों और सुझावों को आधार बनाते हुए विद्यालयी शिक्षा के लिए निर्मित *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023* में सभी स्तरों की पाठ्यचर्या क्षेत्रों को तैयार किया गया है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2023 का उद्देश्य है कि बुनियादी और आरंभिक स्तर पर बच्चों के पंचकोशीय विकास को सुनिश्चित करते हुए मध्य स्तर पर उनके विकासात्मक स्वरूप को अग्रसर किया जाए। इस प्रकार, मध्य स्तर कक्षा 6 से कक्षा 8 तक तीन वर्षों को समाहित करते हुए आरंभिक और माध्यमिक स्तरों के बीच एक सेतु के रूप में कार्य करता है।

मध्य स्तर पर इस राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा का उद्देश्य है, विद्यार्थियों को उन आवश्यक कौशलों में दक्ष करना जो बच्चों की विश्लेषणात्मक, वर्णनात्मक और सृजनात्मक क्षमताओं को प्रोत्साहित करे और उन्हें आने वाली चुनौतियों और अवसरों के लिए तैयार करे। मध्य स्तर पर राष्ट्रीय पाठ्यचर्या के आधार पर विकसित बहुआयामी पाठ्यक्रम में ऐसे नौ विषयों को शामिल किया गया है जो बच्चों के समग्र विकास को बढ़ावा देते हैं। इसमें तीन भाषाओं (कम से कम दो भारतीय मूल की भाषाएँ) सहित विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान, कला शिक्षा, शारीरिक शिक्षा एवं कल्याण और व्यावसायिक शिक्षा शामिल हैं।

ऐसी परिवर्तनकारी शिक्षण संस्कृति के लिए अनुकूल परिस्थितियों की आवश्यकता होती है। इसे व्यावहारिक रूप देने के लिए विभिन्न विषयों की उपयुक्त पाठ्यपुस्तकें भी होनी चाहिए। पाठ्यसामग्री और पढ़ने-पढ़ाने के उपागमों के बीच इन पाठ्यपुस्तकों की महत्वपूर्ण भूमिका होगी। ऐसी निर्णायक भूमिका जो बच्चों की जिज्ञासा और खोजी प्रवृत्ति के बीच एक विवेकपूर्ण संतुलन बनाएगी। कक्षा नियोजन और विषयों की पढ़ाई के बीच उचित संतुलन बनाने के लिए शिक्षकों की तैयारी भी आवश्यक है।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् निरंतर गुणवत्तापूर्ण पाठ्यपुस्तकें तैयार करने के लिए एक प्रतिबद्ध संस्था है। पाठ्यपुस्तकों के निर्माण हेतु संबंधित विषय विशेषज्ञों, शिक्षाशास्त्रियों और अध्यापकों को समितियों में शामिल किया जाता है। कक्षा 6 के लिए निर्मित **'मल्हार'** पुस्तक में साहित्य की प्रमुख विधाएँ सम्मिलित हैं। ये रचनाएँ देशप्रेम, पर्यावरण, विज्ञान, कला, इतिहास, खेल और

भारतीय समाज के अनुभवों का भाषिक चित्र प्रस्तुत करती हैं। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* की संस्तुतियों और विद्यालयी शिक्षा के लिए *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023* का अनुपालन करते हुए यह पाठ्यपुस्तक बच्चों में अवधारणात्मक समझ, तार्किक चिंतन, रचनात्मकता, आधारभूत मानवीय मूल्यों और प्रवृत्तियों के विकास पर समान बल देती है, जो राष्ट्रीय स्तर की शिक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। इस उद्देश्य के साथ ही समावेशन, बहुभाषिकता, जेंडर समानता और सांस्कृतिक जुड़ाव के साथ-साथ सूचना एवं प्रौद्योगिकी का उचित समन्वयन और स्कूल-आधारित समग्र मूल्यांकन आदि समस्त विषयों से संयोजित होने वाले क्षेत्रों को पाठ्यपुस्तक में सम्मिलित किया गया है। इसमें दी गई गतिविधियों और प्रश्न अभ्यासों को बच्चे स्वयं तथा सहपाठियों के साथ समूह में सीखेंगे। सहपाठियों के समूह में सीखना न केवल रोचक होता है अपितु यह बहुत महत्वपूर्ण भी है क्योंकि इससे बच्चों का बहुआयामी विकास होता है, साथ ही सीखने की प्रक्रिया रोचक ही नहीं अपितु आनंदमय और सहज हो जाती है। इस बहुआयामी पाठ्यपुस्तक में दी गई सामग्री और गतिविधियाँ विद्यार्थी और शिक्षक दोनों को सृजनात्मक अनुभव से संपृक्त करने में सक्षम हैं।

इस पाठ्यपुस्तक के अलावा इस स्तर पर विद्यार्थियों को विभिन्न अन्य शिक्षण संसाधनों का पता लगाने हेतु भी प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। ऐसे संसाधन उपलब्ध कराने में विद्यालय के पुस्तकालय महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसके अतिरिक्त विद्यार्थियों को ऐसा करने के लिए मार्गदर्शन और प्रोत्साहित करने में अभिभावकों और शिक्षकों की भूमिका भी महत्वपूर्ण होगी।

मैं इस पाठ्यपुस्तक के विकास में सम्मिलित सभी व्यक्तियों का आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने इस उत्कृष्ट प्रयास को साकार किया है और आशा करता हूँ कि यह पुस्तक सभी हितधारकों की अपेक्षाओं को पूरा करेगी। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् व्यवस्थागत सुधारों और अपने प्रकाशनों को निरंतर परिष्कृत करने के प्रति समर्पित है। हम आपकी टिप्पणियों एवं सुझावों का स्वागत करते हैं जिनसे भावी संशोधनों में सहायता ली जा सकती है।

दिनेश प्रसाद सकलानी

नई दिल्ली
निदेशक

31 मई 2024
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

यह पुस्तक

सम्पूर्ण शिक्षा प्रक्रिया में भाषा का केंद्रीय स्थान है। भाषा की शिक्षा ही विभिन्न स्तरों पर विद्यार्थियों के दृष्टिकोण और मूल्यों का विकास करती है। किसी भी नागरिक से क्या-क्या अपेक्षाएँ होती हैं, इन्हें ध्यान में रखते हुए औपचारिक विद्यालयी शिक्षा व्यवस्था के सभी चरणों में भाषा शिक्षण के मुख्य लक्ष्य इस तरह से रेखांकित किए जा सकते हैं— सृजनशीलता; ज्ञान परंपरा और प्रयोग; स्वतंत्र अध्येता एवं आलोचनात्मक चिंतन; राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना; और स्वास्थ्य एवं खुशहाली। भाषा की सृजनशीलता से आशय है कि विद्यार्थियों में भाषा के संवादधर्मी स्वरूप के रचनात्मक पक्ष के प्रति समझ बने और वे विभिन्न वैयक्तिक, सामाजिक, सांस्कृतिक निर्मितियों के अनुरूप भाषा का सृजनशील प्रयोग कर सकें। विद्यार्थी अपनी बात को अपने ढंग से कह सकें और अपनी स्वाभाविक सृजनशीलता एवं कल्पना को पोषित कर सकें। ज्ञान-परंपरा और प्रयोग भाषा का एक महत्वपूर्ण लक्ष्य है। इसमें परंपरागत ज्ञान और उसका अभिनव प्रयोग शामिल है जिससे विद्यार्थियों में अपने रीति-रिवाज़ों और परंपराओं के प्रति विवेकपूर्ण सुरुचि पैदा हो सके। भाषा पढ़ने-पढ़ाने का लक्ष्य यह भी है कि विद्यार्थी स्वतंत्र अध्येता एवं आलोचनात्मक चिंतक बनें। साथ ही साथ वर्तमान और अतीत की घटनाओं का तार्किक विश्लेषण कर सकें। विद्यार्थियों में राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना के विकास को ध्यान में रखते हुए परिवेशीय सजगता व आत्मीय सम्बद्धता का भाव पैदा हो, जो भारतीय सभ्यता और अस्मिता निर्माण की बहुविध रंगतों की सतत निर्मिति है। भाषा को समझने की क्षमता विकसित करना व्यक्तिगत, सामाजिक, नैतिक, राष्ट्रीय मूल्यों का विकास करना भी है। स्वास्थ्य एवं खुशहाली से आशय है कि विद्यार्थी शारीरिक व मानसिक रूप से स्फूर्त हों, उनमें स्वस्थ दृष्टिकोण एवं आदतों का विकास हो और भावनात्मक एवं सामाजिक रूप से परिपक्वता आए। भाषा का सीखना-सिखाना सभी विषय क्षेत्रों के प्रति समझ बनाने के साथ-साथ शिक्षार्थी के भावात्मक, संज्ञानात्मक और सामाजिक स्वास्थ्य के लिए भी महत्वपूर्ण हो तथा वे भाषिक, प्राकृतिक एवं सामाजिक पर्यावरण, खेल, कला, विज्ञान, पर्यटन और नीति के प्रति सचेत हों।

कक्षा 6 की हिंदी पाठ्यपुस्तक **'मल्हार'** आपको सीखने-सिखाने की एक अनोखी और आनंददायक यात्रा पर ले जाने के लिए तैयार की गई है। यह पुस्तक आज के विद्यार्थियों, समाज और राष्ट्र की आवश्यकताओं, रुचियों और अपेक्षाओं को पूरा करने के उद्देश्य से विकसित की गई है। हमारे विद्यार्थी अपने आस-पास के समाज, अपने महान राष्ट्र के गौरवशाली इतिहास और संस्कृति को समझ सकें,

भारत की लोकतांत्रिक, प्रेम, भाईचारे, पर्यावरण संरक्षण, जेंडर समानता, वसुधैव कुटुंबकम, शांति और सहिष्णुता की हज़ारों वर्षों पुरानी परंपराओं और विरासत को आगे बढ़ा सकें और अपने दैनिक जीवन में हिंदी का आत्मविश्वासपूर्वक उपयोग कर सकें, इसके लिए पुस्तक में पर्याप्त सामग्री दी गई है। सामग्री चयन में भारत के विभिन्न राज्यों, कलाओं, परिवेश का भी समावेशन किया गया है।

इस पुस्तक में हिंदी साहित्य की अनेक प्रसिद्ध रचनाओं को सम्मिलित किया गया है ताकि विद्यार्थी हिंदी साहित्य के गौरवशाली और समृद्ध इतिहास से परिचित हो सकें और एक जागरूक पाठक बनने की दिशा में अग्रसर हो सकें। इस पुस्तक की रचना करते समय इस बात को ध्यान में रखा गया है कि यह आज के भारत की आवश्यकताओं के अनुरूप सक्षम, आत्मविश्वास से पूर्ण और चिंतनशील नागरिक के निर्माण में सहायक हो सके।

इस पुस्तक का पूर्ण-क्षमताओं के साथ उपयोग करने के लिए अध्यापकों को इसके निम्नलिखित पक्षों के बारे में जान लेना होगा—

बहुभाषिकता हमारे देश की अनूठी विशेषता और ताकत है। इस पुस्तक में बहुभाषिकता के कई स्वरूप मिलेंगे। विभिन्न भाषाओं का समन्वय, भारतीय भाषाओं की एकात्मकता, विभिन्न साहित्यिक अभिव्यक्तियों या विषयों का समन्वय, हिंदी भाषा के भिन्न-भिन्न रूपों का समन्वय, अनुवाद में भाषाएँ आदि। अपेक्षा है कि पढ़ने-पढ़ाने के संदर्भ में बहुभाषिक स्रोतों या संदर्भों को एक ताकत और अवसर की तरह प्रयोग कर सकें।

पुस्तक के चित्र रचनाओं को समृद्ध करने के दृष्टिकोण से दिए गए हैं। ये पाठ के संदर्भों को नए विस्तार और आयाम देते हैं तथा समझने-समझाने में आसान बनाते हैं। इन चित्रों पर बातचीत, लेखन और अन्य गतिविधियों के लिए सुझाव पुस्तक में जगह-जगह पर दिए गए हैं। अपनी कल्पना का उपयोग करते हुए स्वयं भी अनेक गतिविधियों की रचना की जा सकती है।

पुस्तक में संदर्भ में व्याकरण की स्तरानुकूल अवधारणाएँ सम्मिलित की गई हैं। यहाँ यह ध्यान देना आवश्यक है कि इस कक्षा-स्तर पर व्याकरण का उद्देश्य विद्यार्थियों को परिभाषाओं को याद करवाना न होकर उन्हें दैनिक जीवन में भाषा का प्रभावशाली उपयोग कर सकने में सक्षम बनाना है। विद्यार्थियों का भाषाई प्रयोगों पर ध्यान जाए, उनका शब्द-भंडार विकसित हो, वे विभिन्न उद्देश्यों के लिए अनुकूल और संगत भाषा का प्रयोग कर सकें, इसके लिए अनेक रोचक गतिविधियाँ पुस्तक में सम्मिलित की गई हैं।

पाठों को संवादात्मक शैली में प्रस्तुत किया गया है कि विद्यार्थी इस पुस्तक को एक मित्र और अनुभवी मार्गदर्शक के रूप में देख सकें। इसलिए अनेक स्थानों पर पुस्तक पाठकों से वार्तालाप करती हुई

प्रतीत होती है। यह संवादात्मक शैली पुस्तक को सहज, सरल और उपयोगी बनाने में सहायक है। यही सहजता पुस्तक के अभ्यासों में भी दिखाई देती है।

मौलिक और स्वतंत्र अभिव्यक्ति के अवसर देते हुए पुस्तक के अनेक प्रश्नों में विद्यार्थियों को उनके अपने विचारों को बोलकर और लिखकर अभिव्यक्त करने के अवसर दिए गए हैं। इसके लिए यह आवश्यक है कि कक्षा में उनके विचारों को सम्मानपूर्वक सुना जाए। भले ही किसी विद्यार्थी के विचार सबसे अलग हों, फिर भी तर्कों और उदाहरणों द्वारा उसे उचित निष्कर्ष तक पहुँचने में सहायता करना आवश्यक है।

पठन के तरीके को विस्तार देते हुए पुस्तक में दिए गए पाठ कई प्रकार के हैं। यह पुस्तक फिल्म, चित्रात्मक सूचना, पोस्टर सभी को पढ़ने की ओर ध्यान दिलाती है। सभी के पढ़ने के अलग-अलग तरीके होते हैं। पठन विस्तार की दृष्टि से पुस्तकालय, वेबलिंक इत्यादि की ओर भी ध्यान दिलाया गया है।

पुस्तक में अनेक रोचक समावेशी गतिविधियाँ दी गई हैं। विद्यार्थियों को उनमें से कुछ गतिविधियों को अकेले करना होगा, कुछ को अपने समूह में और कुछ को पूरी कक्षा को मिलकर करना होगा। पुस्तक की अनेक गतिविधियों को करने के लिए विद्यार्थियों को अपने समूह के साथ चर्चा करनी होगी। इसके लिए आवश्यक है कि समय-समय पर कक्षा में विद्यार्थियों के समूह बनाए जाएँ। एक समूह में 4 से 8 विद्यार्थी सम्मिलित हो सकते हैं। यदि कक्षा में विशेष रूप से सक्षम या दिव्यांग (शारीरिक या मानसिक) विद्यार्थी हैं तो वे भी इन्हीं समूहों में होने चाहिए। अभ्यास को इस प्रकार निर्मित किया गया है कि सभी तरह के विद्यार्थी (दिव्यांग सहित) उसे करने में सक्षम होंगे।

पुस्तक के प्रत्येक प्रश्न के साथ एक चित्रात्मक संकेत (आइकॉन) दिया गया है। इससे विद्यार्थियों को यह समझने में सहायता मिलेगी कि उस प्रश्न में उन्हें क्या करना है— चर्चा करनी है, लिखना है, बोलकर उत्तर देना है या कोई गतिविधि करनी है। इसलिए सत्र के प्रारंभ में ही विद्यार्थियों को इन चित्र-संकेतों के अर्थ और उपयोग समझा दें।

हिंदी शब्दकोश का उपयोग करना एक महत्वपूर्ण कौशल है। इस कौशल के विकास के लिए पुस्तक के अंत में शब्दकोश दिया गया है। इसका उद्देश्य यह है कि विद्यार्थी कक्षा 6 से ही हिंदी शब्दकोश का उपयोग करना प्रारंभ कर दें। इस शब्दकोश में पुस्तक के विभिन्न पाठों में आए ऐसे शब्दों को स्थान दिया गया है जो कक्षा 6 के अधिकांश बच्चों के लिए नए या अपरिचित हो सकते हैं। शब्दकोश के साथ हिंदी वर्णमाला और देवनागरी लिपि के भारतीय ब्रेल रूप 'भारती' को भी दिया गया है ताकि विद्यार्थी देवनागरी के ब्रेल रूप के प्रति जागरूक हो सकें।

पाठ की संरचना

पाठ— सबसे पहले पाठ का शीर्षक, पाठ संख्या और मूल पाठ दिया गया है। निबंध पाठों में पाठ का संक्षिप्त परिचय भी दिया गया है।

रचनाकार से परिचय— रचना के अंत में रचनाकार का स्तरानुरूप 4–5 पंक्तियों में सरल, सृजनात्मक परिचय दिया गया है। यह परिचय सूचनात्मक न होकर सृजनात्मक लेखन के उदाहरण हैं ताकि विद्यार्थियों को परिचय लेखन के विविध रूपों और सृजनात्मक लेखन का आनंद लेने के अवसर मिल सकें। यह परिचय लेखक की जीवनी न होकर उनके कृतित्व और व्यक्तित्व के किन्हीं विशेष पक्षों का रोचक वर्णन है। इस बात पर विशेष ध्यान दें कि यह परिचय विद्यार्थियों की औपचारिक (लिखित) आकलन प्रक्रिया का अंग नहीं है।

गतिविधियाँ और अभ्यास— पाठ और रचनाकार के परिचय के बाद गतिविधियाँ और अभ्यास दिए गए हैं। इन्हें सीखने की प्रक्रिया के अंग के रूप में दिया गया है। ये गतिविधियाँ 'सीखने का आकलन' न होकर 'सीखने के लिए आकलन' सिद्धांत पर आधारित हैं। इन गतिविधियों से विद्यार्थियों को पाठ को समझने में, उसे अपने जीवन और अनुभवों से जोड़ने में और अपनी भाषाई कुशलताओं को प्रखर करने में सहायता मिलेगी। इन अभ्यासों में अनेक स्थानों पर विद्यार्थियों के लिए संकेत भी दिए गए हैं जिनसे उन्हें चर्चा करने और अपने मौलिक उत्तरों तक पहुँचने में सहायता मिलेगी। यहाँ अनेक प्रश्न ऐसे हैं जिनके अनेक उत्तर हो सकते हैं क्योंकि प्रत्येक विद्यार्थी के अनुभव और कल्पना अन्य विद्यार्थियों से भिन्न हो सकती है। अपेक्षा है कि आप मौलिक उत्तरों का कक्षा में स्वागत करें और उनकी सराहना हो।

मेरी समझ से— इस गतिविधि में विद्यार्थियों को 2–3 बहुविकल्पी प्रश्नों को हल करने के अवसर दिए गए हैं। ये प्रश्न इस प्रकार तैयार किए गए हैं कि इनके उत्तर चुनने के लिए विद्यार्थियों को पूरे पाठ को समझने के अपने कौशलों के प्रयोग करने के अवसर मिल सकें। हो सकता है कि किसी प्रश्न के लिए विद्यार्थी अपनी समझ से अलग-अलग विकल्प चुन लें। ऐसी स्थिति में विद्यार्थियों को अपने उत्तर को चुनने के कारण स्पष्ट करने के लिए कहा गया है ताकि उनके मौखिक अभिव्यक्ति के कौशल, तर्क करने, उदाहरण देने, सुनने और उसका विश्लेषण करने जैसे महत्वपूर्ण भाषाई कौशलों का विकास हो सके। इस चर्चा के आधार पर विद्यार्थी एक सर्वसम्मत विकल्प के चयन तक पहुँचने में सक्षम हो सकेंगे।

मिलकर करें मिलान— प्रत्येक पाठ में कुछ ऐसे संदर्भ सम्मिलित रहते हैं जो उस पाठ को और समृद्ध बना देते हैं। उदाहरण के लिए 'मातृभूमि' कविता में राम, गौतम, हिमालय आदि अनेक संदर्भ आए हैं।

यदि विद्यार्थी पाठ में आए ऐसे संदर्भों पर ध्यान दे सकें तो वे पाठ को और अच्छी तरह समझ सकेंगे। इसलिए इस प्रश्न में पाठ में से चुनकर कुछ ऐसे शब्दों या शब्द-समूहों को दिया गया है जिनका अर्थ या संदर्भ जानना-समझना पाठ को समझने के लिए अत्यंत आवश्यक है। इनकी व्याख्या भी दे दी गई है। विद्यार्थियों को इन शब्दों को उनके संदर्भों से मिलान करना है। यह कार्य वे स्वयं, शिक्षकों, अभिभावकों, पुस्तकालय और इंटरनेट की सहायता से कर सकेंगे।

पंक्तियों पर चर्चा— इस गतिविधि में पाठ में से चुनकर कुछ पंक्तियाँ दी गई हैं। विद्यार्थियों से अपेक्षा है कि वे इन पंक्तियों को ध्यान से पढ़ें और इन पर विचार करें। उन्हें इनका क्या अर्थ समझ में आया, उन्हें अपने विचार अपने समूह में साझा करने हैं और अपनी लेखन पुस्तिका में लिखना है। इस प्रकार इस गतिविधि में उन्हें सुनने, बोलने और लिखने-पढ़ने के भरपूर अवसर मिलेंगे।

सोच-विचार के लिए— इस प्रश्न में विद्यार्थियों से अपेक्षा है कि वे पाठ पर आधारित बोध-प्रश्नों पर स्वयं सोच-विचार करेंगे और स्वतंत्र रूप से उनके उत्तर अपनी लेखन पुस्तिका में लिख सकेंगे। आवश्यकता होने पर इस कार्य में भी विद्यार्थियों को शिक्षकों का उत्साहवर्धन और सहयोग अपेक्षित है।

साहित्य की रचना— इस प्रश्न द्वारा विद्यार्थियों को साहित्य की विधा-विशेष की विशेषताओं और संरचनात्मक पहलुओं की ओर ध्यान देने का अवसर मिलेगा। इसके लिए हो सकता है उन्हें पाठ को एक बार पुन: ध्यान से पढ़ने की आवश्यकता का अनुभव हो। उन्हें पाठ की जो बातें विशेष लगेंगी, उन्हें वे आपस में साझा करेंगे और लिख लेंगे। इस प्रकार पूरी कक्षा की एक विस्तृत सूची तैयार हो जाएगी। उदाहरण के लिए, संभव है कि कविताओं में वे अलंकारों की शब्दावली या नामों के परिचय के बिना भी पहचान कर लें कि इस पंक्ति में तीन-चार शब्द एक ही अक्षर से शुरू हो रहे हैं। विद्यार्थियों की सुविधा के लिए यहाँ इस गतिविधि में भी एक उदाहरण दे दिया गया है।

अनुमान या कल्पना से— इस गतिविधि में पाठ से संबंधित ऐसे प्रश्न दिए गए हैं जिनके उत्तर पाठ में सीधे-सीधे नहीं मिल सकते हैं। इनके उत्तर खोजने के लिए विद्यार्थियों को पाठ के संदर्भों, अपनी कल्पना और अनुमान का सहारा लेना होगा। ये प्रश्न विद्यार्थियों की कल्पनाशक्ति को विस्तार देने में विशेष रूप से सहायक सिद्ध होंगे।

शब्दों की बात— विद्यार्थियों का शब्द-भंडार बढ़ाना और भाषा-शब्दों का सार्थक उपयोग करने का कौशल विकसित करना भाषा शिक्षण के सबसे महत्वपूर्ण कौशलों में से एक है। इसी दृष्टिकोण से यहाँ शब्दों से जुड़ी कुछ गतिविधियाँ दी गई हैं। यहाँ संदर्भगत व्याकरण की भी कुछ स्तरानुकूल अवधारणाएँ दे दी गई हैं। इन्हें करने के लिए विद्यार्थी शब्दकोश, अपने शिक्षकों और साथियों की सहायता भी ले सकते हैं।

आपकी बात— जब हम किसी साहित्यिक रचना को अपने जीवन से जोड़ पाते हैं तो वह भी हमारे जीवन और अनुभव संसार का अभिन्न अंग बन जाती है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए विद्यार्थियों को इस प्रश्न के अंतर्गत पाठ के संदर्भों को अपने जीवन और अनुभवों से जोड़ने के अवसर दिए गए हैं। इन प्रश्नों के माध्यम से विद्यार्थियों को अपने जीवन के अनुभवों को अभिव्यक्त करने के अवसर मिलेंगे और इससे उनका भाषा की कक्षा से जुड़ाव और प्रबल हो सकेगा। ये प्रश्न मौखिक रूप से चर्चा और संवाद को कक्षा में स्थान देने की दिशा में एक और प्रभावशाली कदम हैं।

आज की पहेली— पहेलियाँ किसी भी भाषा के मौखिक और लिखित साहित्य का महत्वपूर्ण अंग होती हैं। ये समाज, संस्कृति और इतिहास का अभिन्न अंग होती हैं। भारत की प्रत्येक भाषा के पास पहेलियों की अनूठी धरोहर और संपदा उपलब्ध है। इसी संपदा को हमारे विद्यार्थियों तक पहुँचाने के दृष्टिकोण से प्रत्येक पाठ में एक अनोखी और रोचक पहेली को हल करने का अवसर विद्यार्थियों को दिया गया है। इससे उन्हें स्वयं भी पहेलियों की रचना करने, उन्हें बूझने और उनका आनंद उठाने के अनुभव प्राप्त हो सकेंगे।

झरोखे से— भाषा की पुस्तक अपने आप में एक माध्यम है साहित्य की दुनिया की झलक विद्यार्थियों को दिखलाने का। यह झलक जितनी समृद्ध हो सके, उतना विद्यार्थियों के भाषाई विकास के लिए अच्छा होगा। भाषा की पाठ्यपुस्तक की कुछ सीमाएँ भी हैं। इसमें असीमित सामग्री को स्थान नहीं दिया जा सकता। इसी सीमा को कुछ असीम बनाने का प्रयास है झरोखा। यहाँ पाठ के संदर्भ को ध्यान में रखते हुए कुछ ऐसी रचनाएँ दी गई हैं जो पाठ के प्रति विद्यार्थियों की रुचि और समझ को और अधिक विस्तार दे सकेंगी। ये रचनाएँ ऐसे झरोखे हैं जिनसे झाँककर विद्यार्थी साहित्य की विशाल दुनिया का आनंद उठा सकेंगे। दूसरी ओर इन झरोखों के माध्यम से साहित्य, कक्षा और विद्यार्थियों के जीवन में प्रवेश पा सकेगा।

साझी समझ— झरोखे में दी गई रचनाओं को पढ़ने के बाद विद्यार्थी अवश्य ही उनके बारे में अपने विचार साझा करना चाहेंगे। ऐसे अवसर देता है गतिविधियों का यह भाग 'साझी समझ'। इसके अंतर्गत 'झरोखे से' में दी गई रचनाओं के किसी विशेष पक्ष या पूरी रचना पर विद्यार्थी अपने-अपने समूह में चर्चा करेंगे और उसे कक्षा में सबके साथ साझा करेंगे।

पुस्तक को शिक्षण का आधार बनाते समय यह ध्यान देना होगा कि भाषा का परिदृश्य समय के साथ-साथ तेज़ी से बदल रहा है। भाषा के स्वरूप, उसके अध्ययन के उद्देश्य तथा शिक्षण के तौर-तरीकों से लेकर आकलन की पद्धतियों तक में नित नवीन परिवर्तन हो रहे हैं। इन परिवर्तनों को ध्यान में रखते हुए भाषा शिक्षण की पद्धतियों में नवीनता, विविधता व विस्तार लाने की आवश्यकता है। आज भाषा की कक्षा केवल कक्षा की चारदीवारी या पाठ्यपुस्तक तक ही सीमित नहीं रह गई है बल्कि घर-परिवार,

परिवेश, इंटरनेट और मीडिया के माध्यम से उसका विस्तार दूर तक हो चला है। सीखने-सिखाने की प्रक्रियाओं के संदर्भ में इस विस्तार को समझने तथा इसके विविध आयामों को एक-दूसरे से जोड़ने की आवश्यकता है। भाषा शिक्षण के संदर्भ में एक और महत्वपूर्ण बात यह भी है कि भाषा ज्ञान की सतत प्रक्रिया हमारे पूरे परिवेश (जिसमें घर, पास-पड़ोस, सामाजिक समुदाय तथा विद्यालय सभी शामिल हैं) में चलती रहती है। यदि हम भाषा की कक्षा को बाहरी परिवेश में उपलब्ध सीखने के अवसरों से सीधे जोड़ सकें तो भाषा शिक्षण के लक्ष्यों को बखूबी प्राप्त किया जा सकता है।

संध्या सिंह
प्रोफेसर, भाषा शिक्षा विभाग एवं
संयोजक, पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह, हिंदी
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

मिल-जुल कर स्कूल में जाएँ, साथ पढ़ें और
साथ में खाएँ। रंग-बिरंगी प्यारी दुनिया,
साथ मिलकर इसे सजाएँ।

राष्ट्रीय पाठ्यक्रम एवं शिक्षण-अधिगम सामग्री समिति (एन.एस.टी.सी.)

महेश चंद्र पंत, *कुलाधिपति*, राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन संस्थान (**अध्यक्ष**)

मञ्जुल भार्गव, *प्रोफेसर*, प्रिंसटन यूनिवर्सिटी (**सह-अध्यक्ष**)

सुधा मूर्ति, *प्रतिष्ठत लेखिका* एवं *शिक्षाविद*

बिबेक देबरॉय, *अध्यक्ष*, प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद् (ई.ए.सी.-पी.एम.)

शेखर मांडे, *पूर्व महानिदेशक*, सी.एस.आई.आर. एवं *प्रतिष्ठत प्रोफेसर*, सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे

सुजाता रामदोरई, *प्रोफेसर*, ब्रिटिश कोलंबिया विश्वविद्यालय, कनाडा

शंकर महादेवन, संगीत विशेषज्ञ, मुंबई

यू. विमल कुमार, *निदेशक*, प्रकाश पादुकोण बैडमिंटन अकादमी, बेंगलुरू

मिशेल डैनिनो, *विज़िटिंग प्रोफेसर*, आई.आई.टी., गांधीनगर

सुरीना राजन, *आई.ए.एस.* (सेवानिवृत्त), हरियाणा एवं *पूर्व महानिदेशक*, एच.पी.ए.

चमू कृष्ण शास्त्री, *अध्यक्ष*, भारतीय भाषा समिति, शिक्षा मंत्रालय

संजीव सान्याल, *सदस्य*, प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद् (ई.ए.सी.-पी.एम.)

एम.डी. श्रीनिवास, *अध्यक्ष*, सेंटर फॉर पॉलिसी स्टडीज़, चेन्नई

गजानन लोंढे, हेड, प्रोग्राम ऑफिस, एन.एस.टी.सी.

रेबिन छेत्री, *निदेशक*, एस.सी.ई.आर.टी., सिक्किम

प्रत्यूष कुमार मंडल, *प्रोफेसर*, सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

दिनेश कुमार, *प्रोफेसर*, योजना एवं अनुवीक्षण प्रभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

कीर्ति कपूर, *प्रोफेसर*, भाषा शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

रंजना अरोड़ा, *प्रोफेसर* एवं *अध्यक्ष*, पाठ्यचर्या अध्ययन एवं विकास विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली (**सदस्य-सचिव**)

पाठ्यपुस्तक निर्माण समूह

मार्गदर्शन

महेश चंद्र पंत, *अध्यक्ष*, राष्ट्रीय पाठ्यक्रम एवं शिक्षण-अधिगम सामग्री समूह, (एन.एस.टी.सी.) तथा भाषा समूह

मञ्जुल भार्गव, *सह-अध्यक्ष*, राष्ट्रीय पाठ्यक्रम एवं शिक्षण-अधिगम सामग्री समूह, (एन.एस.टी.सी.) तथा भाषा समूह

अध्यक्ष, उप-समूह (हिंदी)

चमन लाल गुप्त, *प्रोफेसर* एवं *पूर्व अध्यक्ष*, हिंदी विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

सहयोग

अक्षय कुमार दीक्षित, *हिंदी अध्यापक*, आचार्य तुलसी सर्वोदय बाल विद्यालय, छतरपुर, नई दिल्ली

अनुराधा, *हिंदी शिक्षक (अवकाश प्राप्त)*, सरदार पटेल विद्यालय, लोधी स्टेट, नई दिल्ली

आर.एस. सर्राजु, *प्रोफेसर,* हिंदी विभाग, हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद

नंद किशोर पाण्डेय, *प्रोफेसर*, हिंदी विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

नीरा नारंग, *प्रोफेसर,* शिक्षा विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

नीलकंठ कुमार, *असिस्टेंट प्रोफेसर,* भाषा शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

प्रणय कुमार, *अध्यक्ष,* हिंदी, संस्कृत विभाग, एल.के. सिंघानिया एजूकेशन सेंटर, गोटन

मंजरी शुक्ला, *लेखक,* प्रयागराज

मृदुल कीर्ति, *लेखक,* मेरठ

मैथिली प्र. राव, *शिक्षाविद एवं अनुवादक,* बेंगलुरु

राम प्रसाद भट्ट, हैमबर्ग विश्वविद्यालय, जर्मनी

विश्वामित्र दायमा, *शिक्षक,* राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, लालपुरा, चित्तौड़गढ़

शचींद्र आर्य, *अध्यापक*, राजकीय सह-शिक्षा उच्चतर माध्यमिक विद्यालय (गाँधी) ब्रह्मपुरी, नई दिल्ली

शारदा कुमारी, *प्राचार्य* (सेवानिवृत्त), डी.आई.ई.टी., आर.के. पुरम, सेक्टर-7, नई दिल्ली

शिव शरण कौशिक, *प्रोफेसर* एवं *अध्यक्ष,* हिंदी विभाग, राजकीय महाविद्यालय, राजगढ़, अलवर

श्याम सिंह सुशील, *लेखक,* हिंदी, ए-13, दैनिक जनयुग अपार्टमेंट्स, वसुंधरा एन्क्लेव, दिल्ली

साकेत बहुगुणा, *सहायक प्रोफेसर,* केंद्रीय हिंदी संस्थान-दिल्ली केंद्र, नई दिल्ली

सुमन कुमार सिंह, *शिक्षक,* गवर्मेंट सेकेण्डरी स्कूल कौड़िया, वसंती भगवानपुर हाट, सिवान

सैयद मतीन अहमद, *अध्यक्ष,* हिंदी, एस.सी.ई.आर.टी., तेलंगाना

सदस्य-समन्वयक एवं संयोजक

संध्या सिंह, *प्रोफेसर,* भाषा शिक्षा विभाग एवं संयोजक पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह
(हिंदी भाषा उप-समूह), रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

सदस्य सह-समन्वयक

नरेश कोहली, *एसोसिएट प्रोफेसर,* भाषा शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर अनुकूलन समूह

संयोजक

व्ही. के. तिवारी , कौस्तुभ चटर्जी , डॉ. ललित साहू

संपादन सहयोग

दानीराम वर्मा (से.नि.प्राचार्य), डॉ.आर.एस.चौहान (से.नि.प्राचार्य), डॉ.ओ.पी.मिश्रा (सचिव, राज्य शिक्षा आयोग), बी.आर.साहू (पूर्व फैकल्टी एस.सी.ई.आर.टी. भाषाविद्)

विषय समन्वयक

डॉ. जयभारती चंद्राकर (सहायक प्राध्यापक), एस.सी.ई.आर.टी., छत्तीसगढ़

सहयोग

नरेंद्र जांगड़े, व्याख्याता (एस.सी.ई.आर.टी., छत्तीसगढ़), विनती श्रीवास्तव ,व्याख्याता (डाइट रायपुर, छत्तीसगढ़) अजय मिश्रा,व्याख्याता(डाइट रायपुर, छत्तीसगढ़), बी.आर.साहू, विनयशरण सिंह, कृपा शर्मा

राज्य शिक्षा स्थायी समिति

क्रं	नाम व पदनाम	
1.	श्री आलोक चक्रवाल, कुलपति गुरु घासीदास केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिलासपुर	**अध्यक्ष**
2.	संचालक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर	**सदस्य सचिव**
3.	संचालक, लोक शिक्षण संचालनालय, छत्तीसगढ़	**सदस्य**
4.	मिशन संचालक, समग्र शिक्षा, रायपुर, छत्तीसगढ़	**सदस्य**
5.	डॉ. वासुदेव साहसी, सहा.प्रा., शा.जे. योगानंदम छ.ग. महाविद्यालय, रायपुर	**सदस्य**
6.	डॉ. सुभाष चन्द्राकर, प्राध्या., दुर्गा महाविद्यालय, रायपुर	**सदस्य**
7.	श्री मनीष देवांगन, वि.खं. शिक्षा अधिकारी, कार्या. धरसींवा, जिला-रायपुर	**सदस्य**
8.	श्री नरेन्द्र सिंह राजपूत, सहा. शिक्षक, प्राथ. विद्या. सिवनी खुर्द (बोडला), जिला-कबीरधाम	**सदस्य**
9.	श्री मनोज सिंह, शा. शिक्षा महाविद्यालय, बिलासपुर	**सदस्य**
10.	श्री दिलीप केसरवानी, पूर्व प्राचार्य, कबीर नगर, रायपुर	**सदस्य**

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक [1][**संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य**] बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन **सब में**

व्यक्ति की गरिमा और [2][**राष्ट्र की एकता**

और अखंडता] सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

---

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''राष्ट्र की एकता'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।

आभार

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा की रूपरेखा पर्यवेक्षण समिति के अध्यक्ष एवं सदस्यों; पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह भाषा के सभी सदस्यों तथा अन्य अंतःसंबंधी विषयों के लिए गठित पाठ्यचर्या क्षेत्र समूहों के अध्यक्षों एवं सदस्यों के प्रति इस पुस्तक के निर्माण की प्रक्रिया में मार्गदर्शन एवं समीक्षा हेतु बहुमूल्य योगदान के लिए आभार व्यक्त करती है।

इस पुस्तक के निर्माण में जिन रचनाओं को सम्मिलित किया गया है, उसकी स्वीकृति देने के लिए सभी रचनाकारों, उनके परिजनों एवं उनसे संबद्ध प्रकाशकों के प्रति परिषद् अपना आभार व्यक्त करती है।

परिषद्, भाषा शिक्षा विभाग के वंदना शर्मा, *असिस्टेंट प्रोफेसर,* गिरीश कुमार तिवारी, *असिस्टेंट प्रोफेसर*; रमेश कुमारी, *वरिष्ठ शोध सहायक*; *कनिष्ठ परियोजना अध्येता* सुनीत मिश्र, शुभम सिंह, प्रिया और सत्यम सिंह; तकनीकी सहयोग हेतु संविदा पर कार्यरत *डी.टी.पी. ऑपरेटर* अमजद हुसैन और फरहीन फातिमा तथा संविदा पर कार्यरत *प्रूफ रीडर* सोनम सिंह और राम भवन यादव का हार्दिक आभार व्यक्त करती है।

परिषद् इस पाठ्यपुस्तक को अंतिम रूप देने के लिए प्रकाशन प्रभाग के प्रति आभारी है। परिषद् पाठ्यपुस्तक के संपादन के लिए दिनेश वशिष्ट, *संपादक* (संविदा); प्रियंका, *प्रूफरीडर* (संविदा) और पुस्तक को प्रकाशन हेतु अंतिम रूप से तैयार करने के लिए पवन कुमार बरियार, *प्रभारी*, डी.टी.पी. प्रकोष्ठ; संविदा पर कार्यरत *डी.टी.पी. ऑपरेटर* राजश्री सैनी और बिट्टू कुमार महतो, प्रकाशन प्रभाग, रा.शै.अ.प्र.प. के प्रति भी आभार प्रकट करती है।

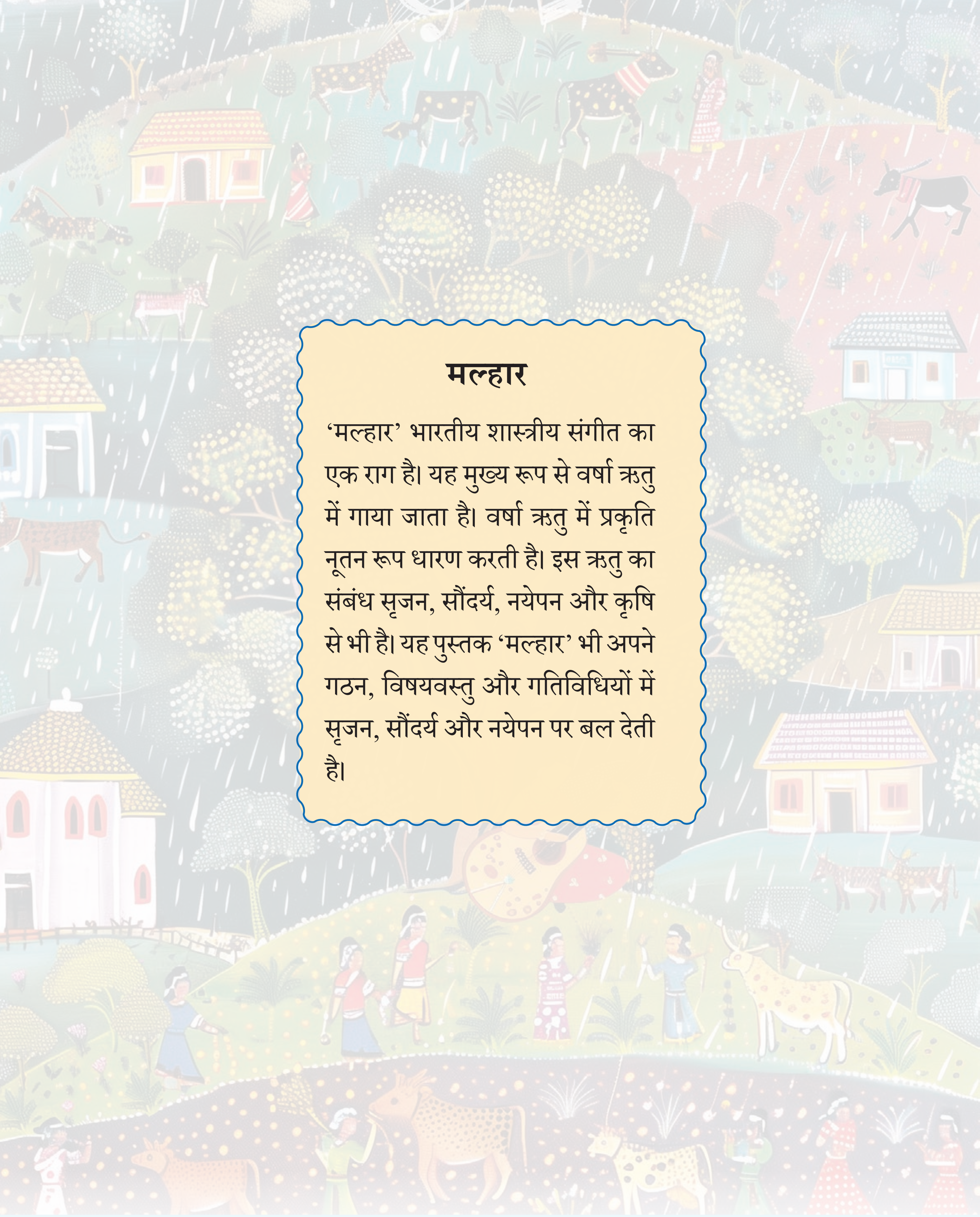

मल्हार

'मल्हार' भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक राग है। यह मुख्य रूप से वर्षा ऋतु में गाया जाता है। वर्षा ऋतु में प्रकृति नूतन रूप धारण करती है। इस ऋतु का संबंध सृजन, सौंदर्य, नयेपन और कृषि से भी है। यह पुस्तक 'मल्हार' भी अपने गठन, विषयवस्तु और गतिविधियों में सृजन, सौंदर्य और नयेपन पर बल देती है।

विषय-क्रम

आमुख			*iv*
यह पुस्तक			*vi*
भाषा संगम (तमिल कविता का हिंदी अनुवाद)			*xxii*
1.	मातृभूमि (कविता)	*सोहनलाल द्विवेदी*	1
	पुष्प की अभिलाषा (पढ़ने के लिए)	*माखनलाल चतुर्वेदी*	12
2.	गोल (संस्मरण)	*मेजर ध्यानचंद*	13
	एक दौड़ ऐसी भी (पढ़ने के लिए)		24
3.	पहली बूँद (कविता)	*गोपालकृष्ण कौल*	25
4.	हार की जीत (कहानी)	*सुदर्शन*	33
5.	रहीम के दोहे (दोहा)	*अब्दुर्रहीम खानखाना*	45
6.	मेरी माँ (आत्मकथा)	*रामप्रसाद 'बिस्मिल'*	51
7.	हम पंछी उन्मुक्त गगन के (कविता)	डॉ. शिवमंगल सिंह 'सुमन'	60
8.	सत्रिया और बिहू नृत्य (निबंध)	*जया मेहता*	75
9.	मैया मैं नहिं माखन खायो (पद)	*सूरदास*	94
10.	परीक्षा (कहानी)	*प्रेमचंद*	105
11.	चेतक की वीरता (कविता)	*श्यामनारायण पांडेय*	122
12.	हिंद महासागर में छोटा-सा हिंदुस्तान (यात्रा वृतांत)	*रामधारी सिंह 'दिनकर'*	128
13.	पेड़ की बात (निबंध)	*जगदीशचंद्र बसु*	145
	आओ बच्चो तुम्हें दिखाएँ झाँकी हिंदुस्तान की (पढ़ने के लिए)	*कवि प्रदीप*	155
14.	विनम्र एवं उदार शासक- अहिल्याबाई होल्कर (निबंध)	*बलदाऊ राम साहू*	*157*
	शब्दकोश		*169*
	पहेलियों के उत्तर		*178*

भाषा संगम

भारतवर्ष

अखिल विश्व में अतुलनीय उत्कर्ष !
हमारा भारतवर्ष !
ज्ञान और विज्ञान, अर्थ-परमार्थ-ध्यान;
मान, आत्म-सम्मान, प्राण, धन-धान्य-दान;
सुधा सिंधु रस-गान, काव्य-कृतियाँ महान;
सब-कुछ जिसका है जग का आदर्श !
हमारा भारतवर्ष !
अखिल विश्व में अतुलनीय उत्कर्ष !
हमारा भारतवर्ष !

— सुब्रह्मण्य भारती

(तमिल कविता का हिंदी अनुवाद)

1

मातृभूमि

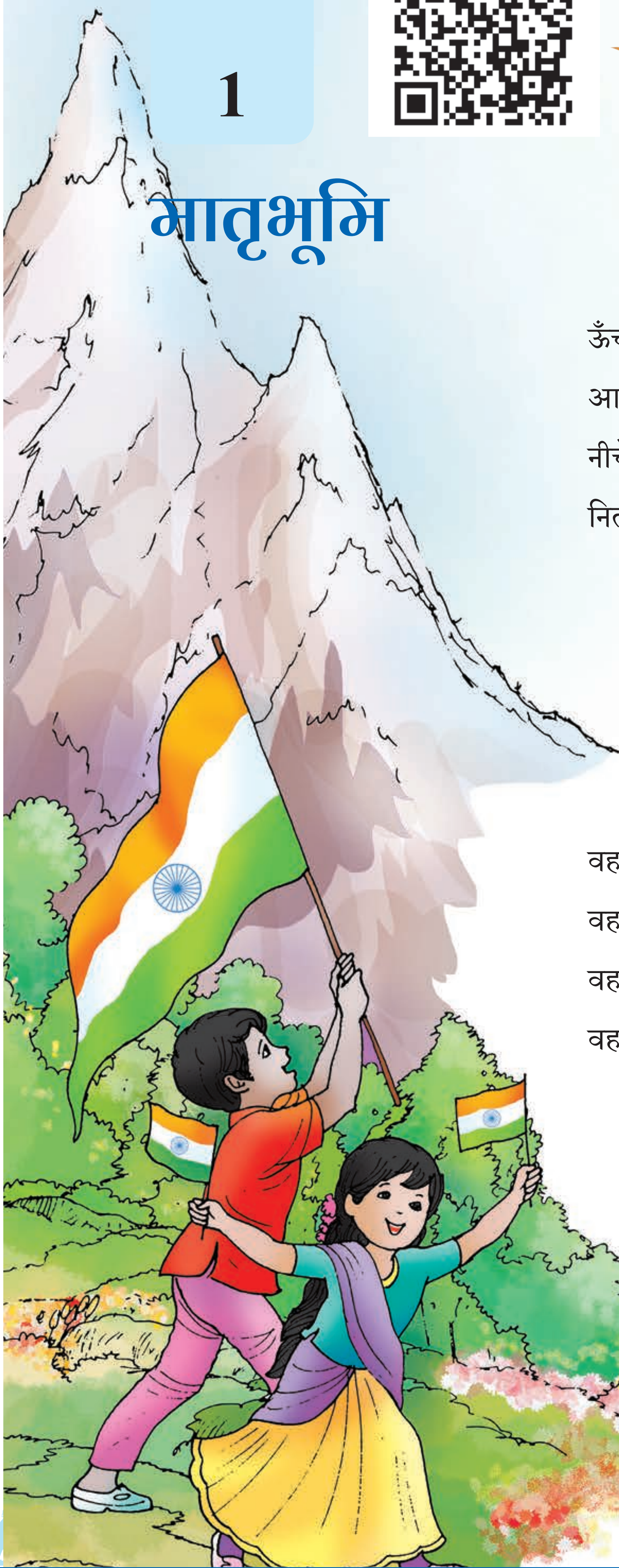

ऊँचा खड़ा हिमालय
आकाश चूमता है,
नीचे चरण तले झुक,
नित सिंधु झूमता है।

गंगा यमुन त्रिवेणी
नदियाँ लहर रही हैं,
जगमग छटा निराली,
पग पग छहर रही हैं।

वह पुण्य-भूमि मेरी,
वह स्वर्ण-भूमि मेरी।
वह जन्मभूमि मेरी
वह मातृभूमि मेरी।

झरने अनेक झरते
जिसकी पहाड़ियों में,
चिड़ियाँ चहक रही हैं,
हो मस्त झाड़ियों में।

अमराइयाँ घनी हैं
कोयल पुकारती है,
बहती मलय पवन है,
तन-मन सँवारती है।

वह धर्मभूमि मेरी,
वह कर्मभूमि मेरी।
वह जन्मभूमि मेरी
वह मातृभूमि मेरी।

जन्मे जहाँ थे रघुपति,
जन्मी जहाँ थी सीता,
श्रीकृष्ण ने सुनाई,
वंशी पुनीत गीता।

गौतम ने जन्म लेकर,
जिसका सुयश बढ़ाया,
जग को दया सिखाई,
जग को दिया दिखाया।

वह युद्ध-भूमि मेरी,
वह बुद्ध-भूमि मेरी।
वह मातृभूमि मेरी,
वह जन्मभूमि मेरी।

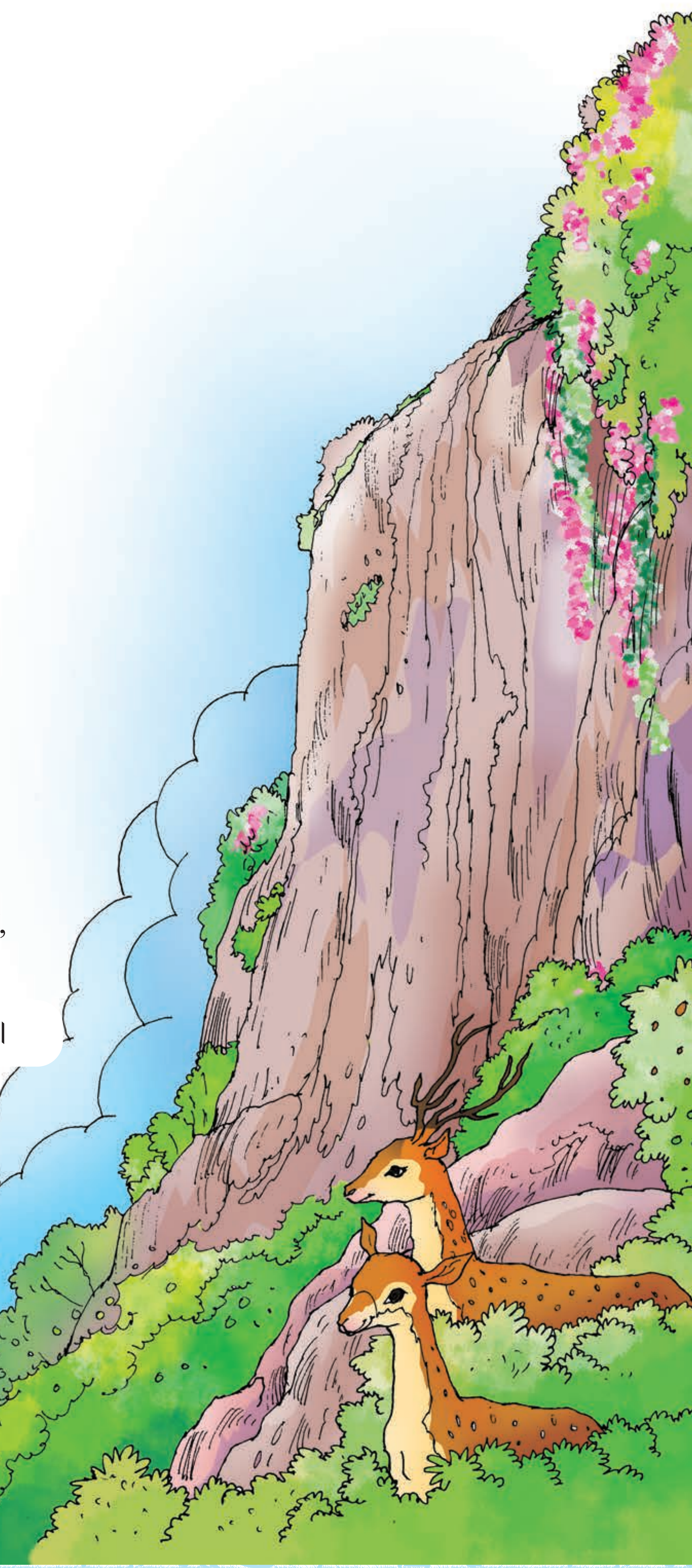

— सोहनलाल द्विवेदी

कवि से परिचय

(1906–1988)

इस कविता को हिंदी के प्रसिद्ध कवियों में से एक सोहनलाल द्विवेदी जी ने लिखा है। उनका जन्म आज से लगभग सवा सौ साल पहले हुआ था। उस समय अंग्रेजों का भारत पर आधिपत्य था। उन्होंने अपनी लेखनी से अंग्रेज़ों का विरोध किया। उनकी लेखनी का सबसे प्रिय विषय था 'देशभक्ति'। भारत के गौरव का गान करना उन्हें बहुत प्रिय था। उनकी कुछ और चर्चित रचनाएँ हैं— 'बढ़े चलो, बढ़े चलो', 'कोशिश करने वालों की हार नहीं होती' आदि।

पाठ से

आइए, अब हम इस कविता पर विस्तार से चर्चा करें। आगे दी गई गतिविधियाँ इस कार्य में आपकी सहायता करेंगी।

मेरी समझ से

(क) नीचे दिए गए प्रश्नों का सटीक उत्तर कौन-सा है? उसके सामने तारा (☆) बनाइए—

(1) हिंद महासागर के लिए कविता में कौन-सा शब्द आया है?

- चरण
- हिमालय
- वंशी
- सिंधु

(2) मातृभूमि कविता में मुख्य रूप से—

- भारत की प्रशंसा की गई है।
- भारत के महापुरुषों की जय की गई है।
- भारत की प्राकृतिक सुंदरता की सराहना की गई है।
- भारतवासियों की वीरता का बखान किया गया है।

(ख) अब अपने मित्रों के साथ चर्चा कीजिए और कारण बताइए कि आपने ये उत्तर ही क्यों चुने?

मिलकर करें मिलान

पाठ में से चुनकर कुछ शब्द नीचे दिए गए हैं। अपने समूह में इन पर चर्चा कीजिए और इन्हें इनके सही अर्थों या संदर्भों से मिलाइए। इसके लिए आप शब्दकोश, इंटरनेट या अपने शिक्षकों की सहायता ले सकते हैं।

शब्द	अर्थ या संदर्भ
1. हिमालय	1. एक प्रसिद्ध महापुरुष, बौद्ध धर्म के प्रवर्तक।
2. त्रिवेणी	2. वसुदेव के पुत्र वासुदेव।
3. मलय पवन	3. भारत की प्रसिद्ध नदियाँ।
4. सिंधु	4. तीन नदियों की मिली हुई धारा, संगम।
5. गंगा-यमुना	5. श्री रामचंद्र का एक नाम, दशरथ के पुत्र।
6. रघुपति	6. दक्षिणी भारत के मलय पर्वत से चलने वाली सुगंधित वायु।
7. श्रीकृष्ण	7. एक प्रसिद्ध और प्राचीन ग्रंथ 'श्रीमद्‌भगवदगीता', इसमें वे प्रश्न-उत्तर और संवाद हैं जो महाभारत में श्री कृष्ण और अर्जुन के बीच हुए थे।
8. सीता	8. समुद्र, एक नदी का नाम।
9. गीता	9. जनक की पुत्री जानकी।
10. गौतम बुद्ध	10. भारत की उत्तरी सीमा पर फैली पर्वत-माला।

पंक्तियों पर चर्चा

कविता में से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। इन्हें ध्यान से पढ़िए और इन पर विचार कीजिए। आपको इनका क्या अर्थ समझ में आया? अपने विचार कक्षा में अपने समूह में साझा कीजिए और अपनी लेखन पुस्तिका में लिखिए—

"वह युद्ध-भूमि मेरी, वह बुद्ध-भूमि मेरी।
वह मातृभूमि मेरी, वह जन्मभूमि मेरी।"

सोच-विचार के लिए

(क) कविता को एक बार फिर से पढ़िए और निम्नलिखित के बारे में पता लगाकर अपनी लेखन पुस्तिका में लिखिए।

1. कोयल कहाँ रहती है?
2. तन-मन कौन सँवारती है?
3. झरने कहाँ से झरते हैं?
4. श्रीकृष्ण ने क्या सुनाया था?
5. गौतम ने किसका यश बढ़ाया?

(ख) "नदियाँ लहर रही हैं
पग पग छहर रही हैं"

'लहर' का अर्थ होता है— पानी का हिलोरा, मौज, उमंग, वेग, जोश

'छहर' का अर्थ होता है— बिखरना, छितराना, छिटकना, फैलना

कविता पढ़कर पता लगाइए और लिखिए—

- कहाँ-कहाँ छटा छहर रही हैं?
- किसका पानी लहर रहा है?

कविता की रचना

" गंगा यमुन त्रिवेणी
नदियाँ लहर रही हैं "

'यमुन' शब्द यहाँ 'यमुना' नदी के लिए आया है। कभी-कभी कवि कविता की लय और सौंदर्य को बढ़ाने के लिए इस प्रकार से शब्दों को थोड़ा बदल देते हैं। यदि आप कविता को थोड़ा और ध्यान से पढ़ेंगे तो आपको और भी बहुत-सी विशेषताएँ पता चलेंगी। आपको जो विशेष बातें दिखाई दें, उन्हें आपस में साझा कीजिए और लिखिए। जैसे सबसे ऊपर इस कविता का एक शीर्षक है।

मिलान

स्तंभ 1 और स्तंभ 2 में कुछ पंक्तियाँ दी गई हैं। मिलते-जुलते भाव वाली पंक्तियों को रेखा खींचकर जोड़िए—

स्तंभ 1	स्तंभ 2
1. वह जन्मभूमि मेरी वह मातृभूमि मेरी।	1. यहाँ आम के घने उद्यान हैं जिनमें कोयल आदि पक्षी चहचहा रहे हैं।
2. चिड़ियाँ चहक रही हैं, हो मस्त झाड़ियों में।	2. मैंने उस भूमि पर जन्म लिया है। वह भूमि मेरी माँ समान है।
3. अमराइयाँ घनी हैं कोयल पुकारती है	3. वहाँ की जलवायु इतनी सुखदायी है कि पक्षी पेड़-पौधों के बीच प्रसन्नता से गीत गा रहे हैं।

अनुमान या कल्पना से

अपने समूह में मिलकर चर्चा कीजिए—

(क) "अमराइयाँ घनी हैं
कोयल पुकारती है"
कोयल क्यों पुकार रही होगी? किसे पुकार रही होगी? कैसे पुकार रही होगी?

(ख) "बहती मलय पवन है,
तन मन सँवारती है"
पवन किसका तन-मन सँवारती है? वह यह कैसे करती है?

शब्दों के रूप

नीचे शब्दों से जुड़ी कुछ गतिविधियाँ दी गई हैं। इन्हें करने के लिए आप शब्दकोश, अपने शिक्षकों और साथियों की सहायता भी ले सकते हैं।

(क) नीचे दी गई पंक्तियों को पढ़िए—

"जगमग छटा निराली,
पग पग छहर रही हैं"

इन पंक्तियों में 'पग' शब्द दो बार आया है। इसका अर्थ है 'हर पग' या 'हर कदम' पर।

शब्दों के ऐसे ही कुछ जोड़े नीचे दिए गए हैं। इनके अर्थ लिखिए—

घर-घर --

बाल-बाल --

साँस-साँस --

देश-देश --

पर्वत-पर्वत --

(ख) "वह युद्ध-भूमि मेरी
वह बुद्ध-भूमि मेरी"

कविता में 'भूमि' शब्द में अलग-अलग शब्द जोड़कर नए-नए शब्द बनाए गए हैं। आप भी कुछ नए शब्द बनाइए और उनके अर्थ पता कीजिए—

(संकेत— तप, देव, भारत, जन्म, कर्म, कर्तव्य, मरु, मलय, मल्ल, यज्ञ, रंग, रण, सिद्ध आदि)

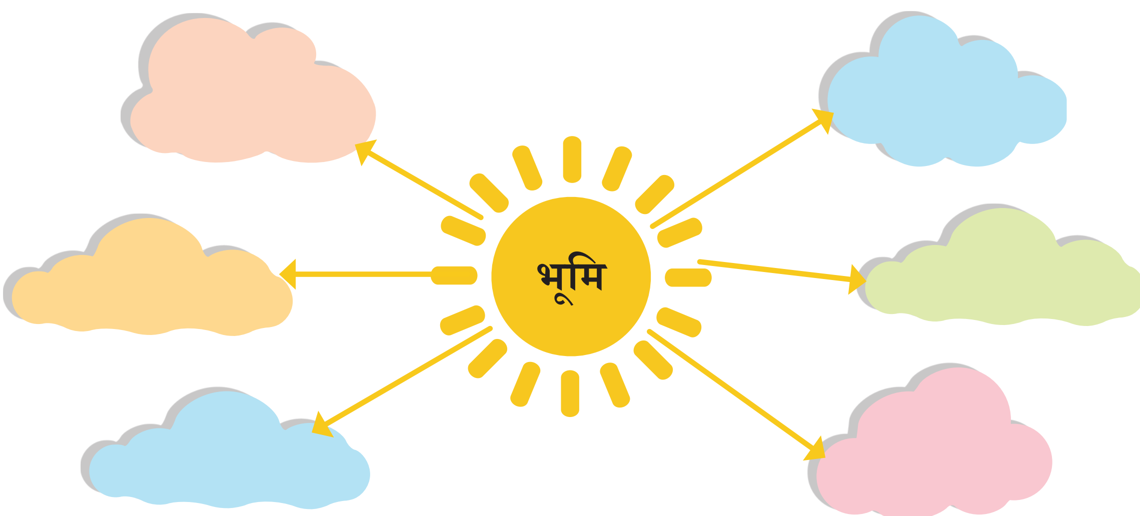

थोड़ा भिन्न, थोड़ा समान

नीचे दी गई पंक्तियों को पढ़िए—

"जग को दया सिखाई,
जग को दिया दिखाया।"

'दया' और 'दिया' में केवल एक मात्रा का अंतर है, लेकिन इस एक मात्रा के कारण शब्द का अर्थ पूरी तरह बदल गया है। आप भी अपने समूह में मिलकर ऐसे शब्दों की सूची बनाइए जिनमें केवल एक मात्रा का अंतर हो, जैसे घड़ा-घड़ी।

पाठ से आगे

आपकी बात

(क) इस कविता में भारत का सुंदर वर्णन किया गया है। आप भारत के किस स्थान पर रहते हैं? वह स्थान आपको कैसा लगता है? उस स्थान की विशेषताएँ बताइए।

(संकेत— प्रकृति, खान-पान, जलवायु, प्रसिद्ध स्थान आदि)

(ख) अपने परिवार के किसी सदस्य या मित्र के बारे में लिखिए। उसकी कौन-कौन सी बातें आपको अच्छी लगती हैं?

वंशी-से

"श्रीकृष्ण ने सुनाई,
वंशी पुनीत गीता"

'वंशी' बाँसुरी को कहते हैं। यह मुँह से फूँक कर बजाया जाने वाला एक 'वाद्य' यानी बाजा है। नीचे फूँक कर बजाए जाने वाले कुछ वाद्यों के चित्र दिए गए हैं। इनके नाम शब्द-जाल से खोजिए और सही चित्र के नीचे लिखिए।

वाद्यों के नामों का शब्द-जाल

श	ह	ना	ई	बाँ
अ	भं	द	शं	सु
ल	को	स्व	ख	री
गो	रा	र	बी	न
जा		म	सीं	गी

अ ________

बी ________

बाँ ________

सीं ________

श ________

ना ________

भं ________

शं ________

आज की पहेली

आज हम आपके लिए एक अनोखी पहेली लाए हैं। नीचे कुछ अक्षर दिए गए हैं। आप इन्हें मिलाकर कोई सार्थक शब्द बनाइए। अक्षरों को आगे-पीछे किया जा सकता है यानी उनका क्रम बदला जा सकता है। आप अपने मन से किसी भी अक्षर के साथ कोई मात्रा भी लगा सकते हैं। पहला शब्द हमने आपके लिए पहले ही बना दिया है।

क्रम संख्या	अक्षर	शब्द
1	स म ह ग र	महासागर
2	ह म य ल	________
3	ग ग	________
4	भ त र	________
5	ल क य	________
6	व न प	________

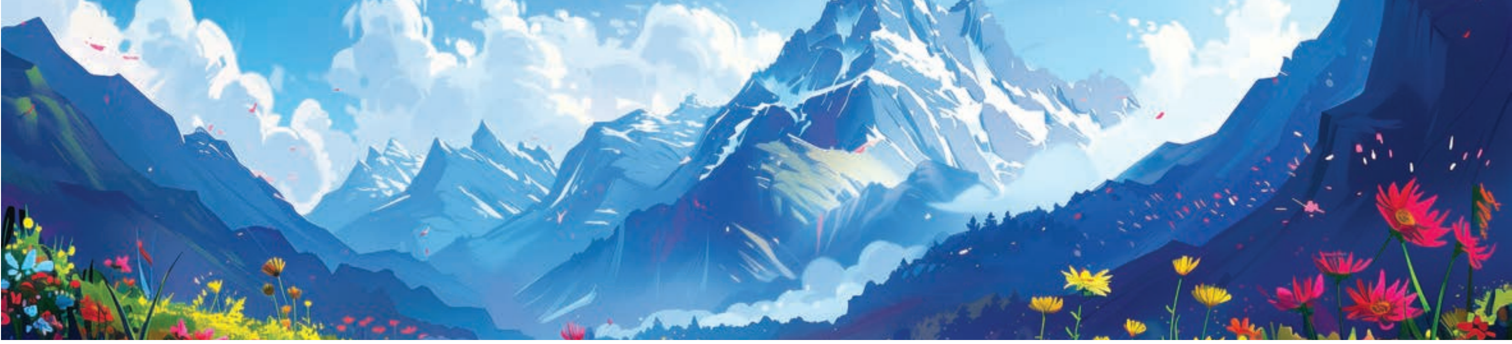

झरोखे से

आप अपने विद्यालय में 'वन्दे मातरम्' गाते होंगे। 'वन्दे मातरम्' बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय द्वारा रचा गया था। यह गीत स्वतंत्रता की लड़ाई में लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत था। भारत में इसका स्थान 'जन गण मन' के समान है। क्या आप इसका अर्थ जानते-समझते हैं? आइए, आज हम पहले इसका अर्थ समझ लेते हैं, फिर समूह में चर्चा करेंगे–

वंदे मातरम्	भावार्थ
वन्दे मातरम्, वन्दे मातरम्!	हे माता, मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ!
सुजलां, सुफलां,	तुम जल से भरी हुई हो, फलों से परिपूर्ण हो,
मलयजशीतलां,	तुम्हें मलय से आती हुई पवन शीतलता प्रदान करती है,
शस्यश्यामलां, मातरम्!	तुम अन्न के खेतों से परिपूर्ण वंदनीय माता हो!
वन्दे मातरम्!	हे माँ मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ!
शुभ्र-ज्योत्सना-पुलकित-यामिनीम्,	जिसकी रमणीय रात्रि को चंद्रमा का प्रकाश शोभायमान करता है,
फुल्ल-कुसुमितद्रुमदलशोभिनीम्,	जो खिले हुए फूलों के पेड़ों से सुसज्जित है,
सुहासिनीं सुमधुरभाषिणीम्,	सदैव हँसने वाली, मधुर भाषा बोलने वाली,
सुखदां वरदां, मातरम्!	सुख देने वाली, वरदान-देने वाली माँ,
वन्दे मातरम्, वन्दे मातरम्॥	मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ!

आप नीचे दी गई इंटरनेट कड़ी पर इसे संगीत के साथ सुन भी सकते हैं—
https://knowindia.india.gov.in/hindi/national-identity-elements/national-song.php

'वन्दे मातरम्' के नीचे दिए गए इन पंक्तियों को भी जानें, समूह में चर्चा करें, साथ ही अपने शिक्षक से अर्थ भी जानें -

सप्तकोटिकंठ-कलकल निनादकराले,
द्विसप्तकोटि भुजै धृतखर-करवाले,
अबला केन मा एत बले।
बहुबलधारिणीं नमामि तारिणीं
रिपु दलवारिणीं मातरम् ।।
तुमि विद्या तुमि धर्म
तुमि हृदय तुमि मर्म
त्वं हि प्राणाः शरिरे ।
बाहुते तुमि मा शक्ति
हृदये तुमि मा भक्ति
तोमारइ प्रतिमा गड़ि
मन्दिरे! मन्दिरे!
त्वं हि दुर्गा दशप्रहरणधारिणी
कमला कमल-दल विहारिणी
वाणी विद्या दायिनी
नमामि त्वां नमामि कमलाम्
अमलां अतुलाम्
सुजलां सुफलां मातरम् ।।
वन्दे मातरम्
श्यामलां सरलाम् सुस्मितां भूषिताम्।
धरणीं भरणीम् मातरम् ।। वन्दे मातरम् ।।

साझी समझ

आपने 'मातृभूमि' कविता को भी पढ़ा और 'वन्दे मातरम्' को भी। अब कक्षा में चर्चा कीजिए और पता लगाइए कि इन दोनों में कौन-कौन सी बातें एक जैसी हैं और कौन-कौन सी बातें कुछ अलग हैं।

खोजबीन के लिए

नीचे पाठ से संबंधित कुछ रचनाएँ दी गई हैं, इन्हें पुस्तक में दिए गए क्यू.आर.कोड की सहायता से पढ़ें, देखें व समझें।

- स्वाधीनता की सरगम— वंदना के इन स्वरों में
- ना हाथ एक शस्त्र हो
- पुष्प की अभिलाषा
- यह महिमामय अपना भारत

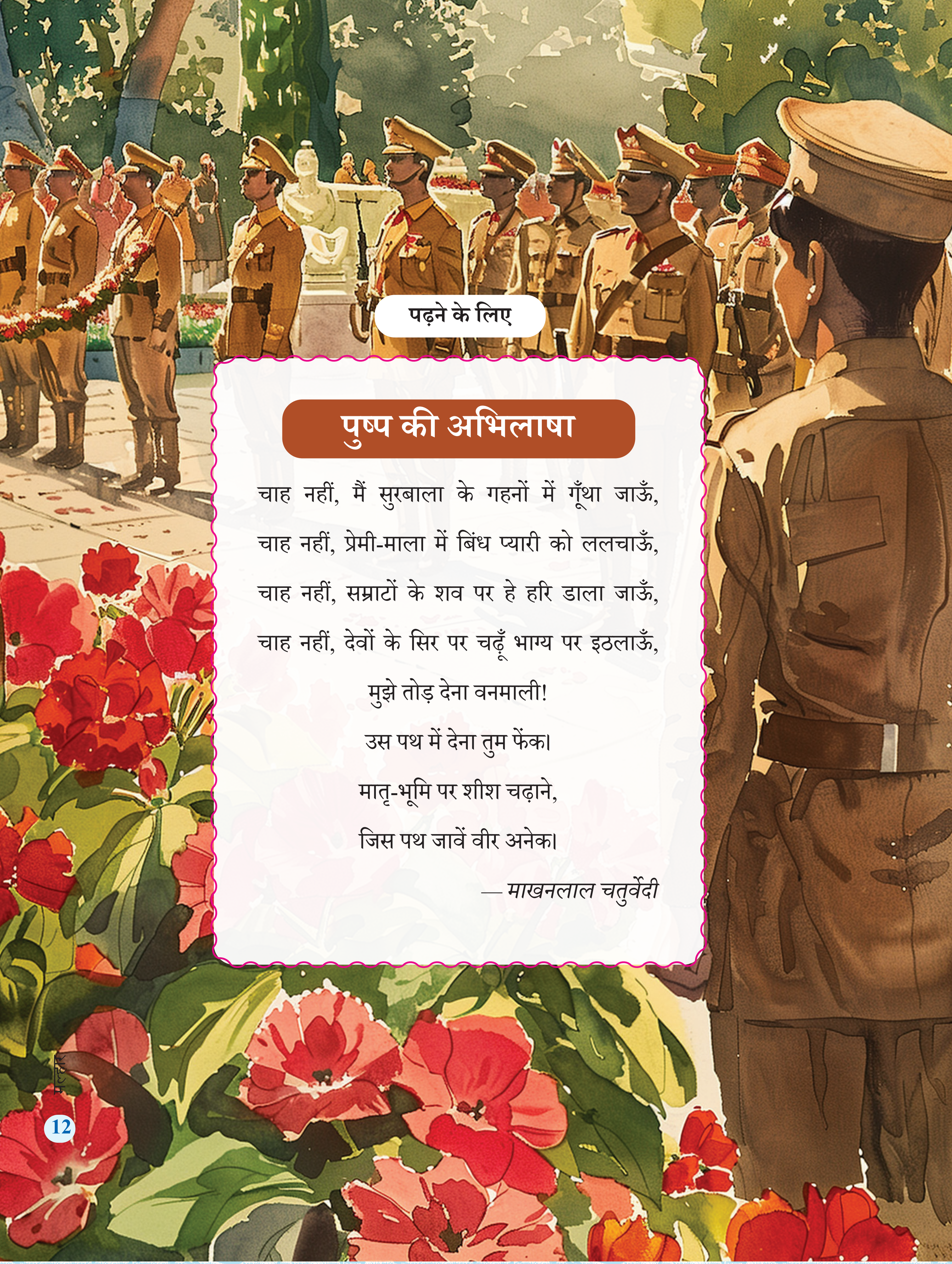

पढ़ने के लिए

पुष्प की अभिलाषा

चाह नहीं, मैं सुरबाला के गहनों में गूँथा जाऊँ,
चाह नहीं, प्रेमी-माला में बिंध प्यारी को ललचाऊँ,
चाह नहीं, सम्राटों के शव पर हे हरि डाला जाऊँ,
चाह नहीं, देवों के सिर पर चढ़ूँ भाग्य पर इठलाऊँ,
मुझे तोड़ देना वनमाली!
उस पथ में देना तुम फेंक।
मातृ-भूमि पर शीश चढ़ाने,
जिस पथ जावें वीर अनेक।

— माखनलाल चतुर्वेदी

2

गोल

इस पाठ का नाम पढ़कर आपके मन में कुछ गोल वस्तुओं के नाम या चित्र उभरे होंगे, गोल गेंद, गोल रोटी, गोल चंद्रमा आदि। लेकिन यह पाठ एक विशेष प्रकार के गोल और उसे करने वाले के बारे में है। यह पाठ एक प्रसिद्ध खिलाड़ी के संस्मरण का एक अंश है। आइए, इसे पढ़ते हैं और जानते हैं कि कौन थे वे प्रसिद्ध खिलाड़ी!

खेल के मैदान में धक्का-मुक्की और नोंक-झोंक की घटनाएँ होती रहती हैं। खेल में तो यह सब चलता ही है। जिन दिनों हम खेला करते थे, उन दिनों भी यह सब चलता था।

सन् 1933 की बात है। उन दिनों में, मैं पंजाब रेजिमेंट की ओर से खेला करता था। एक दिन 'पंजाब रेजिमेंट' और 'सैंपर्स एंड माइनर्स टीम' के बीच मुकाबला हो रहा था। 'माइनर्स टीम' के खिलाड़ी मुझसे गेंद छीनने की कोशिश करते, लेकिन उनकी हर कोशिश बेकार जाती। इतने में एक खिलाड़ी ने गुस्से में आकर हॉकी स्टिक मेरे सिर पर दे मारी। मुझे मैदान से बाहर ले जाया गया।

थोड़ी देर बाद मैं पट्टी बाँधकर फिर मैदान में आ पहुँचा। आते ही मैंने उस खिलाड़ी की पीठ पर हाथ रखकर कहा, "तुम चिंता मत करो, इसका बदला मैं जरूर लूँगा।" मेरे इतना कहते ही वह खिलाड़ी घबरा गया। अब हर समय मुझे ही देखता रहता कि मैं कब उसके सिर पर हॉकी स्टिक मारने वाला हूँ। मैंने एक के बाद एक झटपट छह गोल कर दिए। खेल खत्म होने के बाद मैंने फिर उस खिलाड़ी की पीठ थपथपाई और कहा, "दोस्त, खेल में इतना गुस्सा अच्छा नहीं। मैंने तो अपना बदला ले ही लिया है। अगर तुम मुझे हॉकी नहीं मारते तो शायद मैं तुम्हें दो ही गोल से हराता।" वह खिलाड़ी सचमुच बड़ा शर्मिंदा हुआ। तो देखा आपने मेरा बदला लेने का ढंग? सच मानो, बुरा काम करने वाला आदमी हर समय इस बात से डरता रहता है कि उसके साथ भी बुराई की जाएगी।

आज मैं जहाँ भी जाता हूँ बच्चे व बूढ़े मुझे घेर लेते हैं और मुझसे मेरी सफलता का राज जानना चाहते हैं। मेरे पास सफलता का कोई गुरु-मंत्र तो है नहीं। हर किसी से यही कहता कि लगन, साधना और खेल भावना ही सफलता के सबसे बड़े मंत्र हैं।

मेरा जन्म सन् 1904 में प्रयाग में एक साधारण परिवार में हुआ। बाद में हम झाँसी आकर बस गए। 16 साल की उम्र में मैं 'फर्स्ट ब्राह्मण रेजिमेंट' में एक साधारण सिपाही के रूप में भर्ती हो गया। मेरी रेजिमेंट का हॉकी खेल में काफी नाम था। पर खेल में मेरी कोई दिलचस्पी नहीं थी। उस समय हमारी रेजिमेंट के सूबेदार मेजर तिवारी थे। वे बार-बार मुझे हॉकी खेलने के लिए कहते। हमारी छावनी में हॉकी खेलने का कोई निश्चित समय नहीं था। सैनिक जब चाहे मैदान में पहुँच जाते और अभ्यास शुरू कर देते। उस समय तक मैं एक नौसिखिया खिलाड़ी था।

जैसे-जैसे मेरे खेल में निखार आता गया, वैसे-वैसे मुझे तरक्की भी मिलती गई। सन् 1936 में बर्लिन ओलंपिक में मुझे कप्तान बनाया गया। उस समय मैं सेना में लांस नायक था। बर्लिन ओलंपिक में लोग मेरे हॉकी खेलने के ढंग से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने मुझे 'हॉकी का जादूगर' कहना शुरू कर दिया। इसका यह मतलब नहीं कि सारे गोल मैं ही करता था। मेरी तो हमेशा यह कोशिश रहती कि मैं गेंद को

भारतीय हॉकी टीम ने 1936 के बर्लिन ओलंपिक में जीत दर्ज की।

गोल के पास ले जाकर अपने किसी साथी खिलाड़ी को दे दूँ ताकि उसे गोल करने का श्रेय मिल जाए। अपनी इसी खेल भावना के कारण मैंने दुनिया के खेल प्रेमियों का दिल जीत लिया। बर्लिन ओलंपिक में हमें स्वर्ण पदक मिला। खेलते समय मैं हमेशा इस बात का ध्यान रखता था कि हार या जीत मेरी नहीं, बल्कि पूरे देश की है।

— मेजर ध्यानचंद

लेखक से परिचय

(1905–1979)

यदि कोई खिलाड़ी अपनी आत्मकथा का नाम 'गोल' रखे, तो इस नाम को पढ़कर इतना तो तुरंत समझ में आ जाता है कि उसे खेल से कितना प्यार रहा होगा। जी हाँ, वे अमर खिलाड़ी हैं 'हॉकी के जादूगर' कहे जाने वाले मेजर ध्यानचंद। इतने महान कि भारत उनके जन्मदिन को 'राष्ट्रीय खेल दिवस' के रूप में मनाता है, जिससे लाखों भारतवासी उनके जीवन से प्रेरणा ले सकें। इतने महान खिलाड़ी कि भारत का सर्वोच्च खेल पुरस्कार 'खेल रत्न' उनके नाम पर दिया जाता है।

पाठ से

मेरी समझ से

(क) नीचे दिए गए प्रश्नों का सटीक उत्तर कौन-सा है? उसके सामने तारा (☆) बनाइए—

(1) "दोस्त, खेल में इतना गुस्सा अच्छा नहीं। मैंने तो अपना बदला ले ही लिया है। अगर तुम मुझे हॉकी नहीं मारते तो शायद मैं तुम्हें दो ही गोल से हराता।" मेजर ध्यानचंद की इस बात से उनके बारे में क्या पता चलता है?

- वे अत्यंत क्रोधी थे।
- वे अच्छे ढंग से बदला लेते थे।
- उन्हें हॉकी से मारने पर वे अधिक गोल करते थे।
- वे जानते थे कि खेल को सही भावना से खेलना चाहिए।

(2) लोगों ने मेजर ध्यानचंद को 'हॉकी का जादूगर' कहना क्यों शुरू कर दिया?

- उनके हॉकी खेलने के विशेष कौशल के कारण
- उनकी हॉकी स्टिक की अनोखी विशेषताओं के कारण
- हॉकी के लिए उनके विशेष लगाव के कारण
- उनकी खेल भावना के कारण

(ख) अब अपने मित्रों के साथ चर्चा कीजिए कि आपने ये उत्तर ही क्यों चुने?

मिलकर करें मिलान

पाठ में से चुनकर कुछ शब्द नीचे दिए गए हैं। अपने समूह में इन पर चर्चा कीजिए और इन्हें इनके सही अर्थों या संदर्भों से मिलाइए। इसके लिए आप शब्दकोश, इंटरनेट या अपने शिक्षकों की सहायता ले सकते हैं।

शब्द	अर्थ या संदर्भ
1. लांस नायक	1. स्वतंत्रता से पहले सूबेदार भारतीय सैन्य अधिकारियों का दूसरा सबसे बड़ा पद था।
2. बर्लिन ओलंपिक	2. भारतीय सेना का एक पद (रैंक) है।
3. पंजाब रेजिमेंट	3. सैनिकों के रहने का क्षेत्र।
4. सैंपर्स एंड माइनर्स टीम	4. वर्ष 1936 में जर्मनी के बर्लिन शहर में आयोजित ओलंपिक खेल प्रतियोगिता, जिसमें 49 देशों ने भाग लिया था।
5. सूबेदार	5. स्वतंत्रता से पहले अंग्रेज़ों की भारतीय सेना का एक दल।
6. छावनी	6. अंग्रेज़ों के समय का एक हॉकी दल।

पंक्तियों पर चर्चा

पाठ में से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। इन्हें ध्यान से पढ़िए और इन पर विचार कीजिए। आपको इनका क्या अर्थ समझ में आया? अपने विचार कक्षा में अपने समूह में साझा कीजिए और अपनी लेखन पुस्तिका में लिखिए।

(क) "बुरा काम करने वाला आदमी हर समय इस बात से डरता रहता है कि उसके साथ भी बुराई की जाएगी।"

(ख) "मेरी तो हमेशा यह कोशिश रहती कि मैं गेंद को गोल के पास ले जाकर अपने किसी साथी खिलाड़ी को दे दूँ ताकि उसे गोल करने का श्रेय मिल जाए। अपनी इसी खेल भावना के कारण मैंने दुनिया के खेल प्रेमियों का दिल जीत लिया।"

सोच-विचार के लिए

संस्मरण को एक बार फिर से पढ़िए और निम्नलिखित के बारे में पता लगाकर अपनी लेखन पुस्तिका में लिखिए—

(क) ध्यानचंद की सफलता का क्या रहस्य था?

(ख) किन बातों से ऐसा लगता है कि ध्यानचंद स्वयं से पहले दूसरों को रखते थे?

संस्मरण की रचना

"उन दिनों में मैं, पंजाब रेजिमेंट की ओर से खेला करता था।"

इस वाक्य को पढ़कर ऐसा लगता है मानो लेखक आपसे यानी पाठक से अपनी यादों को साझा कर रहा है। ध्यान देंगे तो इस पाठ में ऐसी और भी अनेक विशेष बातें आपको दिखाई देंगी। इस पाठ को एक बार फिर से पढ़िए।

(क) अपने-अपने समूह में मिलकर इस संस्मरण की विशेषताओं की सूची बनाइए।

(ख) अपने समूह की सूची को कक्षा में सबके साथ साझा कीजिए।

शब्दों के जोड़े, विभिन्न प्रकार के

(क) "जैसे-जैसे मेरे खेल में निखार आता गया, वैसे-वैसे मुझे तरक्की भी मिलती गई।"

इस वाक्य में 'जैसे-जैसे' और 'वैसे-वैसे' शब्दों के जोड़े हैं जिनमें एक ही शब्द दो बार उपयोग में लाया गया है। ऐसे जोड़ों को 'शब्द-युग्म' कहते हैं। शब्द-युग्म में दो शब्दों के बीच में छोटी-सी रेखा लगाई जाती है जिसे योजक चिह्न कहते हैं। योजक यानी जोड़ने वाला।

आप भी ऐसे पाँच शब्द-युग्म लिखिए।

(ख) "खेल के मैदान में धक्का-मुक्की और नोंक-झोंक की घटनाएँ होती रहती हैं।"

इस वाक्य में भी आपको दो शब्द-युग्म दिखाई दे रहे हैं, लेकिन इन शब्द-युग्मों के दोनों शब्द भिन्न-भिन्न हैं, एक जैसे नहीं हैं। आप भी ऐसे पाँच शब्द-युग्म लिखिए जिनमें दोनों शब्द भिन्न-भिन्न हों।

(ग) "हार या जीत मेरी नहीं, बल्कि पूरे देश की है।"

"आज मैं जहाँ भी जाता हूँ बच्चे व बूढ़े मुझे घेर लेते हैं।"

इन वाक्यों में जिन शब्दों के नीचे रेखा खिंची है, उन्हें ध्यान से पढ़िए। हम इन शब्दों को योजक की

सहायता से भी लिख सकते हैं, जैसे— हार-जीत, बच्चे-बूढ़े आदि।

आप नीचे दिए गए शब्दों को योजक की सहायता से लिखिए—

- अच्छा या बुरा
- छोटा या बड़ा
- अमीर और गरीब
- उत्तर और दक्षिण
- गुरु और शिष्य
- अमृत या विष

बात पर बल देना

"मैंने तो अपना बदला ले ही लिया है।"

"मैंने तो अपना बदला ले लिया है।"

इन दोनों वाक्यों में क्या अंतर है? ध्यान दीजिए और बताइए। सही पहचाना! दूसरे वाक्य में एक शब्द कम है। उस एक शब्द के न होने से वाक्य के अर्थ में भी थोड़ा अंतर आ गया है।

हम अपनी बात पर बल देने के लिए कुछ विशेष शब्दों का प्रयोग करते हैं जैसे— 'ही', 'भी', 'तो' आदि। पाठ में से इन शब्दों वाले वाक्यों को चुनकर लिखिए। ध्यान दीजिए कि यदि उन वाक्यों में ये शब्द न होते तो उनके अर्थ पर इसका क्या प्रभाव पड़ता।

पाठ से आगे

आपकी बात

(क) ध्यानचंद के स्थान पर आप होते तो क्या आप बदला लेते? यदि हाँ, तो बताइए कि आप बदला किस प्रकार लेते?

(ख) आपको कौन-से खेल और कौन-से खिलाड़ी सबसे अधिक अच्छे लगते हैं? क्यों?

समाचार-पत्र से

(क) क्या आप समाचार-पत्र पढ़ते हैं? समाचार-पत्रों में प्रतिदिन खेल के समाचारों का एक पृष्ठ प्रकाशित होता है। अपने घर या पुस्तकालय से पिछले सप्ताह के समाचार पत्रों को देखिए। अपनी पसंद का एक खेल-समाचार अपनी लेखन पुस्तिका में लिखिए।

(ख) मान लीजिए कि आप एक खेल-संवाददाता हैं और किसी खेल का आँखों देखा प्रसारण कर रहे हैं। अपने समूह के साथ मिलकर कक्षा में उस खेल का आँखों देखा हाल प्रस्तुत कीजिए।

(संकेत— इस कार्य में आप आकाशवाणी या दूरदर्शन पर प्रसारित होने वाले खेल-प्रसारणों की कमेंटरी की शैली का उपयोग कर सकते हैं। बारी-बारी से प्रत्येक समूह कक्षा में सामने डेस्क या कुर्सियों पर बैठ जाएगा और पाँच मिनट के लिए किसी खेल के सजीव प्रसारण की कमेंटरी का अभिनय करेगा।)

डायरी का प्रारंभ

कुछ लोग प्रतिदिन थोड़ी-थोड़ी बातें किसी स्थान पर लिख लेते हैं। जो वे सोचते हैं, या जो उनके साथ उस दिन हुआ या जो उन्होंने देखा, उसे ईमानदारी से लिख लेते हैं या टाइप कर लेते हैं। इसे डायरी लिखना कहते हैं।

क्या आप भी अपने मन की बातों और विचारों को लिखना चाहते हैं? यदि हाँ, तो आज से ही प्रारंभ कर दीजिए—

- आप जहाँ लिखेंगे, वह माध्यम चुन लीजिए। आप किसी लेखन-पुस्तिका में या ऑनलाइन मंचों पर लिख सकते हैं।
- आप प्रतिदिन, कुछ दिनों में एक बार या जब कुछ लिखने का मन करे तब लिख सकते हैं।
- शब्दों या वाक्यों की कोई सीमा नहीं है चाहे दो वाक्य हों या दो पृष्ठ। आप जो मन में आए उसे उचित और शालीन शब्दों में लिख सकते हैं।

आज की पहेली

यहाँ एक रोचक पहेली दी गई है। इसमें आपको तीन खिलाड़ी दिखाई दे रहे हैं। आपको पता लगाना है कि कौन-से खिलाड़ी द्वारा गोल किया जाएगा—

झरोखे से

आपने हॉकी के बारे में बहुत-कुछ बात की होगी। अब हम हॉकी जैसे ही अनोखे खेल के बारे में पढ़ेंगे जिसे आप जैसे लाखों बच्चे अपने गली-मुहल्लों में खेलते हैं। इस खेल का नाम है— डाँडी या गोथा।

गिल्ली-डंडा

छत्तीसगढ़ का पारंपरिक खेल गिल्ली-डंडा है। यह खेल ग्रामीण अंचल का सबसे लोकप्रिय खेल है। गिल्ली-डंडा खेलने के लिए आँख और हाथ का अच्छा समन्वय होना चाहिए।

गिल्ली-डंडा दक्षिण एशिया का एक प्राचीन एवं लोकप्रिय खेल है, जो आज भी व्यापक रूप से पूरे भारतवर्ष में खेला जाता है। इस खेल में कुछ हद तक क्रिकेट के बल्ले और गेंद की तरह गिल्ली और डंडे का प्रयोग किया जाता है, परंतु इसे खेलने का ढंग और खेल के नियम क्रिकेट से बिल्कुल भिन्न हैं। इसे भारत के विभिन्न भाषायी क्षेत्रों में अलग-अलग नामों से जाना जाता है। जैसे- उड़िया में गुली-बाड़ी, बंगाली में डांग-गली, असमिया में तांग-गुटी, कन्नड़ में चिन्नी-कोलू, मलयालम में कुट्टियुम-कौलम, आंध्रप्रदेश में गूटी-बिल्ला, पंजाबी में गुल्ली-डंडा आदि।

गिल्ली-डंडा खेल को खेलने के लिए मैदान के आकार, खिलाड़ियों की संख्या और समय-सीमा का कोई निश्चित मापदंड नहीं होता है। खिलाड़ियों की संख्या के आधार पर खेल के नियमों का निर्धारण किया जाता है। इस खेल को खेलने के लिए कम से कम दो खिलाड़ियों का होना आवश्यक होता है तथा अधिकतम खिलाड़ियों की संख्या निर्धारित नहीं होती है। मैदान का चयन खिलाड़ियों की संख्या के आधार पर किया जाता है। इसे खेलने से शारीरिक एवं मानसिक विकास के साथ-साथ सामाजिक सौहार्द्र भी बढ़ता है। यह खेल ग्रामीण अँचल के बच्चों में बहुत लोकप्रिय है, जिसे बच्चे उत्साह से खेलते हैं।

गिल्ली और डंडा वस्तुतः लकड़ी के दो छोटे-छोटे टुकड़े होते हैं। गिल्ली एक छोटा अंडाकार लकड़ी का टुकड़ा होता है और डंडा एक लकड़ी की लंबी छड़ी होती है, जिसमें गिल्ली 4 से 6 इंच की दोनों तरफ से नुकीली और लगभग 1 इंच मोटी लकड़ी का टुकड़ा होती है। डंडा लगभग 2 फीट लंबा और 1 इंच मोटी लकड़ी का एक टुकड़ा होता है, जिसकी सहायता से यह खेल खेला जाता है।

खेल सामग्री –

1. गिल्ली और डंडा।
2. लकड़ी की सहायता से बनाया गया 2 से 6 फीट व्यास का एक गोल घेरा।
3. गोल घेरे के बीच ज़मीन पर बनाया गया लगभग 4 से 6 इंच लंबा और 2 इंच गहरा एक गड्ढा जिसे गुच्ची या (घुच्ची)कहते हैं।

कैसे खेलें –

1. जैसा कि पहले बताया गया है, इस खेल के संबंध में कोई पूर्व निर्धारित नियम नहीं हैं। इसके

नियम देशकाल और परिस्थिति के अनुसार बदलते रहते हैं।

2. इसे खेलने के पूर्व दोनों समूहों के बीच टॉस किया जाता है और टॉस जीतने वाले खिलाड़ी समूह खेल प्रारंभ करते हैं।
3. गोल घेरे के अंदर बने गढ्डे (गुच्ची) पर गिल्ली को रखकर डंडे की सहायता से खिलाड़ी दूर तक उसे फेंकने की कोशिश करता है।
4. विपक्षी खिलाड़ी समूह के द्वारा उसे हवा में लपकने अथवा पकड़ने की कोशिश की जाती है।
5. गिल्ली को लपकने अथवा पकड़ने के पश्चात विपक्षी खिलाड़ी समूह को खेलने का अवसर मिलता है।
6. यदि विपक्षी खिलाड़ी समूह गिल्ली को नहीं लपक सका, तो उसे गोल घेरे में गिल्ली को पहुँचाना होता है।
7. अगर विपक्षी खिलाड़ी समूह गिल्ली को गोल घेरे में पहुँचाने सफल हो जाते है, तो उसे खेलने का अवसर प्राप्त होता है। यदि विपक्षी खिलाड़ी समूह गोल घेरे तक गिल्ली को नहीं फेंक सके, तो खिलाड़ी गिल्ली को उछाल कर मारता है और विपक्षी खिलाड़ी समूह को दाम अर्थात् दंड देना होता है।

साझी समझ

(क) आपने इस खेल के नियम पढ़कर अच्छी तरह समझ लिए हैं। अब अपने मित्रों के साथ मिलकर 'गिल्ली-डंडा' खेल खेलिए।

(ख) आप भी 'गिल्ली-डंडा' जैसे अनेक स्वदेशी खेल अपने मित्रों के साथ मिलकर अपने विद्यालय, घर या मोहल्ले में खेलते होंगे। अब आप ऐसे ही किसी एक खेल के नियम इस प्रकार से लिखिए कि उन्हें पढ़कर कोई भी बच्चा उस खेल को समझ सके और खेल सके।

खोजबीन के लिए

नीचे ध्यानचंद जी के विषय में कुछ सामग्री दी गई है जैसे— फिल्में, साक्षात्कार आदि, इन्हें पुस्तक में दिए गए क्यू.आर.कोड की सहायता से पढ़ें, देखें व समझें।

- हॉकी के जादूगर - मेजर ध्यानचंद - प्रेरक गाथाएँ
- हॉकी के जादूगर- मेजर ध्यानचंद
- ओलंपिक
- मेजर ध्यानचंद से साक्षात्कार

पढ़ने के लिए

एक दौड़ ऐसी भी

कई साल पहले ओलंपिक खेलों के दौरान एक विशेष दौड़ होने जा रही थी। सौ मीटर की इस दौड़ में एक आश्चर्यजनक घटना हुई। नौ प्रतिभागी आरंभिक रेखा पर तैयार खड़े थे। उन सभी को कोई-न-कोई शारीरिक विकलांगता थी।

सीटी बजी, सभी दौड़ पड़े। बहुत तीव्र तो नहीं, पर उनमें जीतने की होड़ अवश्य तेज़ थी। सभी जीतने की उत्सुकता के साथ आगे बढ़े। सभी, बस एक छोटे से लड़के को छोड़कर। तभी छोटा लड़का ठोकर खाकर लड़खड़ाया, गिरा और रो पड़ा।

उसकी पुकार सुनकर बाकी प्रतिभागी दौड़ना छोड़ देखने लगे कि क्या हुआ? फिर, एक-एक करके वे सब उस बच्चे की सहायता के लिए उसके पास आने लगे। सब के सब लौट आए। उसे दोबारा खड़ा किया। उसके आँसू पोंछे, धूल साफ़ की। वह छोटा लड़का एक ऐसी बीमारी से ग्रस्त था, जिसमें शरीर के अंगों की बढ़त धीमी होती है और उनमें तालमेल की कमी भी रहती है।

फिर तो सारे बच्चों ने एक-दूसरे का हाथ पकड़ा और साथ मिलकर दौड़ लगाई और सब के सब अंतिम रेखा तक एक साथ पहुँच गए। दर्शक मंत्रमुग्ध होकर देखते रहे, इस प्रश्न के साथ कि सब के सब एक साथ यह दौड़ जीते हैं, इनमें से किसी एक को स्वर्ण पदक कैसे दिया जा सकता है? निर्णायकों ने सबको स्वर्ण पदक देकर समस्या का बढ़िया हल ढूँढ़ निकाला। उस दिन मित्रता का अनोखा दृश्य देख दर्शकों की तालियाँ थमने का नाम नहीं ले रही थीं।

3

पहली बूँद

वह पावस का प्रथम दिवस जब,
पहली बूँद धरा पर आई।
अंकुर फूट पड़ा धरती से,
नव-जीवन की ले अँगड़ाई।

धरती के सूखे अधरों पर,
गिरी बूँद अमृत-सी आकर।
वसुंधरा की रोमावलि-सी,
हरी दूब पुलकी-मुसकाई।
पहली बूँद धरा पर आई॥

आसमान में उड़ता सागर,
लगा बिजलियों के स्वर्णिम पर।
बजा नगाड़े जगा रहे हैं,
बादल धरती की तरुणाई।
पहली बूँद धरा पर आई॥

नीले नयनों-सा यह अंबर,
काली पुतली-से ये जलधर।
करुणा-विगलित अश्रु बहाकर,
धरती की चिर-प्यास बुझाई।
बूढ़ी धरती शस्य-श्यामला
बनने को फिर से ललचाई।
पहली बूँद धरा पर आई।।

— गोपालकृष्ण कौल

कवि से परिचय

धरती के सूखे अधरों पर 'पहली बूँद' के गिरने का अद्भुत दृश्य रचने वाले बाल साहित्यकार गोपालकृष्ण कौल (1923–2007) ने बच्चों के लिए देश-प्रेम, प्रकृति और जीव-जंतुओं से जुड़ी बहुत-सी मनोरम कविताएँ लिखी हैं। अपनी एक अन्य कविता 'हम कुछ सीखें' में वे कहते हैं— "देश हमें देता है सब कुछ, हम भी तो कुछ देना सीखें।"

पाठ से

मेरी समझ से

(क) नीचे दिए गए प्रश्नों का सटीक उत्तर कौन-सा है? उसके सामने तारा (☆) बनाइए-

1. कविता में 'नव-जीवन की ले अँगड़ाई' किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?

   - बादल
   - अंकुर
   - बूँद
   - पावस

2. 'नीले नयनों-सा यह अंबर, काली पुतली- से ये जलधर' में 'काली पुतली' है—

   - बारिश की बूँदें
   - नगाड़ा
   - वृद्ध धरती
   - बादल

(ख) अब अपने मित्रों के साथ चर्चा कीजिए कि आपने ये उत्तर क्यों चुने?

मिलकर करें मिलान

कविता की कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। इन पंक्तियों में कुछ शब्द रेखांकित हैं। दाहिनी ओर रेखांकित शब्दों के भावार्थ दिए गए हैं। इनका मिलान कीजिए।

कविता की पंक्तियाँ	भावार्थ
1. आसमान में उड़ता सागर, लगा बिजलियों के स्वर्णिम पर	1. मेघ-गर्जना
2. बजा नगाड़े जगा रहे हैं, बादल धरती की तरुणाई	2. बादल
3. नीले नयनों सा यह अम्बर, काली पुतली-से ये जलधर।	3. हरी दूब
4. वसुंधरा की रोमावलि-सी, हरी दूब पुलकी-मुसकाई।	4. आकाश

पंक्तियों पर चर्चा

कविता में से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। इन्हें ध्यान से पढ़िए और इन पर विचार कीजिए। आपको इनका क्या अर्थ समझ में आया? अपने विचार कक्षा में अपने समूह में साझा कीजिए और अपनी लेखन पुस्तिका में लिखिए—

- "आसमान में उड़ता सागर, लगा बिजलियों के स्वर्णिम पर,
  बजा नगाड़े जगा रहे हैं, बादल धरती की तरुणाई।"
- "नीले नयनों-सा यह अंबर, काली पुतली-से ये जलधर।
  करुणा-विगलित अश्रु बहाकर, धरती की चिर-प्यास बुझाई।"

सोच-विचार के लिए

कविता को एक बार फिर से पढ़िए और निम्नलिखित के बारे में पता लगाकर अपनी लेखन पुस्तिका में लिखिए—

- बारिश की पहली बूँद से धरती का हर्ष कैसे प्रकट होता है?
- कविता में आकाश और बादलों को किनके समान बताया गया है?

कविता की रचना

'आसमान में उड़ता सागर, लगा बिजलियों के स्वर्णिम पर' कविता की इस पंक्ति का सामान्य अर्थ देखें तो समुद्र का आकाश में उड़ना असंभव होता है। लेकिन जब हम इस पंक्ति का भावार्थ समझते हैं तो अर्थ इस प्रकार निकलता है— समुद्र का जल बिजलियों के सुनहरे पंख लगाकर आकाश में उड़ रहा है। ऐसे प्रयोग न केवल कविता की सुंदरता बढ़ाते हैं बल्कि उसे आनंददायक भी बनाते हैं। इस कविता में ऐसे दृश्यों को पहचानें और उन पर चर्चा करें।

शब्द एक अर्थ अनेक

'अंकुर फूट पड़ा धरती से, नव-जीवन की ले अँगड़ाई' कविता की इस पंक्ति में 'फूटने' का अर्थ पौधे का अंकुरण है। 'फूट' का प्रयोग अलग-अलग अर्थों में किया जाता है, जैसे— फूट डालना, घड़ा फूटना आदि। अब फूट शब्द का प्रयोग ऐसे वाक्यों में कीजिए जहाँ इसके भिन्न-भिन्न अर्थ निकलते हों, जैसे— अंग्रेज़ों की नीति थी फूट डालो और राज करो।

अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

'नीले नयनों-सा यह अंबर, काली पुतली-से ये जलधर' कविता की इस पंक्ति में 'जलधर' शब्द आया है। 'जलधर' दो शब्दों से बना है, जल और धर। इस प्रकार जलधर का शाब्दिक अर्थ हुआ जल को धारण करने वाला। बादल और समुद्र; दोनों ही जल धारण करते हैं। इसलिए दोनों जलधर हैं। वाक्य के संदर्भ या प्रयोग से हम जान सकेंगे कि जलधर का अर्थ समुद्र है या बादल। शब्दकोश या इंटरनेट की सहायता से 'धर' से मिलकर बने कुछ शब्द और उनके अर्थ ढूँढ़कर लिखिए।

शब्द पहेली

दिए गए शब्द-जाल में प्रश्नों के उत्तर खोजें —

न	य	न	ल
गा	दू	ब	अं
ड़ा	अ	श्रु	ब
ज	ल	ध	र

क. एक प्रकार का वाद्य यंत्र ----------------------------------

ख. आँख के लिए एक अन्य शब्द ----------------------------------

ग. जल को धारण करने वाला ----------------------------------

घ. एक प्रकार की घास ----------------------------------

ङ. आँसू का समानार्थी ----------------------------------

च. आसमान का समानार्थी शब्द ----------------------------------

पाठ से आगे

आपकी बात

- बारिश को लेकर हर व्यक्ति का अनुभव भिन्न होता है। बारिश आने पर आपको कैसा लगता है? बताइए।
- आपको कौन-सी ऋतु सबसे अधिक प्रिय है और क्यों? बताइए।

समाचार माध्यमों से

प्रत्येक मौसम समाचार के विभिन्न माध्यमों (इलेक्ट्रॉनिक या प्रिंट या सोशल मीडिया) के प्रमुख समाचारों में रहता है। संवाददाता कभी बाढ़ तो कभी सूखे या भीषण ठंड के समाचार देते दिखाई देते हैं। आप भी बन सकते हैं संवाददाता या लिख सकते हैं समाचार।

- अत्यधिक गर्मी, सर्दी या बारिश में आपने जो स्थिति देखी है उसका आँखों देखा हाल अपनी कक्षा में प्रस्तुत कीजिए।

सृजन

नाम देना भी सृजन है। ऊपर दिए गए चित्र को ध्यान से देखिए और इसे एक नाम दीजिए।

इन्हें भी जानें

इस कविता में नगाड़े की ध्वनि का उल्लेख है— "बजा नगाड़े जगा रहे हैं, बादल धरती की तरुणाई।" नगाड़ा भारत का एक पारंपरिक वाद्ययंत्र है। कुछ वाद्ययंत्रों को उन पर चोट कर बजाया जाता है, जैसे— ढोलक, नगाड़ा, डमरू, डफली आदि। नगाड़ा प्राय: लोक उत्सवों के अवसर पर बजाया जाता है। होली जैसे लोकपर्व के अवसर पर गाए जाने वाले गीतों में इसका प्रयोग होता है। नगाड़ों को जोड़े में भी बजाया जाता है जिसमें एक की ध्वनि पतली तथा दूसरे की मोटी होती है।

खोजबीन

आपके यहाँ उत्सवों में कौन-से वाद्ययंत्र बजाए जाते हैं? उनके बारे में जानकारी एकत्र करें और अपने समूह में उस पर चर्चा करें।

आइए इंद्रधनुष बनाएँ

बारिश की बूँदें न केवल जीव-जंतुओं को राहत पहुँचाती हैं बल्कि धरती को हरा-भरा भी बनाती हैं। कभी-कभी ये बूँदें आकाश में बहुरंगी छटा बिखेरती हैं जिसे 'इंद्रधनुष' कहा जाता है। आप भी एक सुंदर इंद्रधनुष बनाइए और उस पर एक छोटी-सी कविता लिखिए। इसे कोई प्यारा सा नाम भी दीजिए।

झरोखे से

एक बूँद

ज्यों निकल कर बादलों की गोद से
थी अभी एक बूँद कुछ आगे बढ़ी
सोचने फिर-फिर यही मन में लगी
आह! क्यों घर छोड़कर मैं यों बढ़ी।

— अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

4

हार की जीत

माँ को अपने बेटे और किसान को अपने लहलहाते खेत देखकर जो आनंद आता है, वही आनंद बाबा भारती को अपना घोड़ा देखकर आता था। भगवत भजन से जो समय बचता, वह घोड़े को अर्पण हो जाता। वह घोड़ा बड़ा सुंदर था, बड़ा बलवान। उसके जोड़ का घोड़ा सारे इलाके में न था। बाबा भारती उसे सुलतान कह कर पुकारते, अपने हाथ से खरहरा करते, खुद दाना खिलाते और देख-देखकर प्रसन्न होते थे। उन्होंने रुपया, माल, असबाब, ज़मीन आदि अपना सब-कुछ छोड़ दिया था, यहाँ तक कि उन्हें नगर के जीवन से भी घृणा थी। अब गाँव से बाहर एक छोटे-से मंदिर में रहते और भगवान का भजन करते थे। "मैं सुलतान के बिना नहीं रह सकूँगा", उन्हें ऐसी भ्रांति-सी हो गई थी। वे उसकी चाल पर लट्टू थे। कहते, "ऐसे चलता है जैसे मोर घटा को देखकर नाच रहा हो।" जब तक संध्या समय सुलतान पर चढ़कर आठ-दस मील का चक्कर न लगा लेते, उन्हें चैन न आता।

खड्गसिंह उस इलाके का प्रसिद्ध डाकू था। लोग उसका नाम सुनकर काँपते थे। होते-होते सुलतान की कीर्ति उसके कानों तक भी पहुँची। उसका हृदय उसे देखने के लिए अधीर हो उठा। एक दिन वह दोपहर के समय बाबा भारती के पास पहुँचा और नमस्कार करके बैठ गया। बाबा भारती ने पूछा, "खड्गसिंह, क्या हाल है?"

खड्गसिंह ने सिर झुकाकर उत्तर दिया, "आपकी दया है।"

"कहो, इधर कैसे आ गए?"

"सुलतान की चाह खींच लाई।"

"विचित्र जानवर है। देखोगे तो प्रसन्न हो जाओगे।"

"मैंने भी बड़ी प्रशंसा सुनी है।"

"उसकी चाल तुम्हारा मन मोह लेगी!"

"कहते हैं देखने में भी बहुत सुंदर है।"

"क्या कहना! जो उसे एक बार देख लेता है, उसके हृदय पर उसकी छवि अंकित हो जाती है।"

"बहुत दिनों से अभिलाषा थी, आज उपस्थित हो सका हूँ।"

बाबा भारती और खड्गसिंह दोनों अस्तबल में पहुँचे। बाबा ने घोड़ा दिखाया घमंड से, खड्गसिंह ने घोड़ा देखा आश्चर्य से। उसने सैकड़ों घोड़े देखे थे, परंतु ऐसा बाँका घोड़ा उसकी आँखों से कभी न गुजरा था। सोचने लगा, 'भाग्य की बात है। ऐसा घोड़ा खड्गसिंह के पास होना चाहिए था। इस साधु को ऐसी चीज़ों से क्या लाभ?' कुछ देर तक आश्चर्य से चुपचाप खड़ा रहा। इसके पश्चात उसके हृदय में हलचल होने लगी। बालकों की-सी अधीरता से बोला, "परंतु बाबाजी, इसकी चाल न देखी तो क्या?"

बाबा भारती भी मनुष्य ही थे। अपनी चीज़ की प्रशंसा दूसरे के मुख से सुनने के लिए उनका हृदय भी अधीर हो गया। घोड़े को खोलकर बाहर लाए और उसकी पीठ पर हाथ फेरने लगे। एकाएक उचककर सवार हो गए, घोड़ा हवा से बातें करने लगा। उसकी चाल को देखकर खड्गसिंह के हृदय पर साँप लोट गया। वह डाकू था और जो वस्तु उसे पसंद आ जाए उस पर वह अपना अधिकार समझता था। उसके पास बाहुबल था, आदमी थे और बेरहमी थी। जाते-जाते उसने कहा, "बाबाजी, मैं यह घोड़ा आपके पास न रहने दूँगा।"

बाबा भारती डर गए। अब उन्हें रात को नींद न आती। सारी रात अस्तबल की रखवाली में कटने लगी। प्रतिक्षण खड्गसिंह का भय लगा रहता, परंतु कई मास बीत गए और वह न आया। यहाँ तक कि बाबा भारती कुछ असावधान हो गए और इस भय को स्वप्न के भय की नाईं मिथ्या समझने लगे।

संध्या का समय था। बाबा भारती सुलतान की पीठ पर सवार होकर घूमने जा रहे थे। इस समय उनकी आँखों में चमक थी, मुख पर प्रसन्नता। कभी घोड़े के शरीर को देखते, कभी उसके रंग को और मन में फूले न समाते थे।

सहसा एक ओर से आवाज़ आई, “ओ बाबा, इस कंगले की सुनते जाना।”

आवाज़ में करुणा थी। बाबा ने घोड़े को रोक लिया। देखा, एक अपाहिज वृक्ष की छाया में पड़ा कराह रहा है। बोले, "क्यों तुम्हें क्या कष्ट है?"

अपाहिज ने हाथ जोड़कर कहा, "बाबा, मैं दुखियारा हूँ। मुझ पर दया करो। रामावाला यहाँ से तीन मील है, मुझे वहाँ जाना है। घोड़े पर चढ़ा लो, परमात्मा भला करेगा।"

"वहाँ तुम्हारा कौन है?"

"दुर्गादत्त वैद्य का नाम आपने सुना होगा। मैं उनका सौतेला भाई हूँ।"

बाबा भारती ने घोड़े से उतरकर अपाहिज को घोड़े पर सवार किया और स्वयं उसकी लगाम पकड़कर धीरे-धीरे चलने लगे। सहसा उन्हें एक झटका-सा लगा और लगाम हाथ से छूट गई। उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा, जब उन्होंने देखा कि अपाहिज घोड़े की पीठ पर तनकर बैठा है और घोड़े को दौड़ाए लिए जा रहा है। उनके मुख से भय, विस्मय और निराशा से मिली हुई चीख निकल गई। वह अपाहिज डाकू खड्गसिंह था। बाबा भारती कुछ देर तक चुप रहे और कुछ समय पश्चात कुछ निश्चय करके पूरे बल से चिल्लाकर बोले, "ज़रा ठहर जाओ।"

खड्गसिंह ने यह आवाज़ सुनकर घोड़ा रोक लिया और उसकी गरदन पर प्यार से हाथ फेरते हुए कहा, "बाबाजी, यह घोड़ा अब न दूँगा।"

"परंतु एक बात सुनते जाओ।"

खड्गसिंह ठहर गया।

बाबा भारती ने निकट जाकर उसकी ओर ऐसी आँखों से देखा जैसे बकरा कसाई की ओर देखता है और कहा, "यह घोड़ा तुम्हारा हो चुका है। मैं तुमसे इसे वापस करने के लिए न कहूँगा। परंतु खड्गसिंह, केवल एक प्रार्थना करता हूँ, इसे अस्वीकार न करना; नहीं तो मेरा दिल टूट जाएगा।"

"बाबाजी, आज्ञा कीजिए। मैं आपका दास हूँ, केवल यह घोड़ा न दूँगा।"

"अब घोड़े का नाम न लो। मैं तुमसे इस विषय में कुछ न कहूँगा। मेरी प्रार्थना केवल यह है कि इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना।"

खड्गसिंह का मुँह आश्चर्य से खुला रह गया। उसे लगा था कि उसे घोड़े को लेकर यहाँ से भागना पड़ेगा, परंतु बाबा भारती ने स्वयं उसे कहा कि इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना। इससे क्या प्रयोजन

सिद्ध हो सकता है? खड्गसिंह ने बहुत सोचा, बहुत सिर मारा, परंतु कुछ समझ न सका। हारकर उसने अपनी आँखें बाबा भारती के मुख पर गड़ा दीं और पूछा, "बाबाजी, इसमें आपको क्या डर है?"

सुनकर बाबा भारती ने उत्तर दिया, "लोगों को यदि इस घटना का पता चला तो वे किसी गरीब पर विश्वास न करेंगे। दुनिया से विश्वास उठ जाएगा।" यह कहते-कहते उन्होंने सुलतान की ओर से इस तरह मुँह मोड़ लिया जैसे उनका उससे कभी कोई संबंध ही न रहा हो।

बाबा भारती चले गए। परंतु उनके शब्द खड्गसिंह के कानों में उसी प्रकार गूँज रहे थे। सोचता था, 'कैसे ऊँचे विचार हैं, कैसा पवित्र भाव है! उन्हें इस घोड़े से प्रेम था, इसे देखकर उनका मुख फूल की नाईं खिल जाता था। कहते थे, "इसके बिना मैं रह न सकूँगा।" इसकी रखवाली में वे कई रात सोए नहीं। भजन-भक्ति न कर रखवाली करते रहे। परंतु आज उनके मुख पर दुख की रेखा तक दिखाई न पड़ती थी। उन्हें केवल यह खयाल था कि कहीं लोग गरीबों पर विश्वास करना न छोड़ दें।'

रात के अँधेरे में खड्‌गसिंह बाबा भारती के मंदिर में पहुँचा। चारों ओर सन्नाटा था। आकाश में तारे टिमटिमा रहे थे। थोड़ी दूर पर गाँवों के कुत्ते भौंक रहे थे। मंदिर के अंदर कोई शब्द सुनाई न देता था। खड्‌गसिंह सुलतान की बाग पकड़े हुए था। वह धीरे-धीरे अस्तबल के फाटक पर पहुँचा। फाटक खुला पड़ा था। किसी समय वहाँ बाबा भारती स्वयं लाठी लेकर पहरा देते थे, परंतु आज उन्हें किसी चोरी, किसी डाके का भय न था। खड्‌गसिंह ने आगे बढ़कर सुलतान को उसके स्थान पर बाँध दिया और बाहर निकलकर सावधानी से फाटक बंद कर दिया। इस समय उसकी आँखों में पश्चाताप के आँसू थे।

रात्रि का तीसरा पहर बीत चुका था। चौथा पहर आरंभ होते ही बाबा भारती ने अपनी कुटिया से बाहर निकल ठंडे जल से स्नान किया। उसके पश्चात, इस प्रकार जैसे कोई स्वप्न में चल रहा हो, उनके पाँव अस्तबल की ओर बढ़े। परंतु फाटक पर पहुँचकर उनको अपनी भूल प्रतीत हुई। साथ ही घोर निराशा ने पाँव को मन-मन-भर का भारी बना दिया। वे वहीं रुक गए। घोड़े ने अपने स्वामी के पाँवों की चाप को पहचान लिया और ज़ोर से हिनहिनाया। अब बाबा भारती आश्चर्य और प्रसन्नता से दौड़ते हुए अंदर घुसे और अपने घोड़े के गले से लिपटकर इस प्रकार रोने लगे मानो कोई पिता बहुत दिन से बिछड़े पुत्र से मिल रहा हो। बार-बार उसकी पीठ पर हाथ फेरते, बार-बार उसके मुँह पर थपकियाँ देते। और कहते थे, "अब कोई गरीबों की सहायता से मुँह न मोड़ेगा।"

थोड़ी देर के बाद जब वह अस्तबल से बाहर निकले तो उनकी आँखों से आँसू बह रहे थे। ये आँसू उसी भूमि पर ठीक उसी जगह गिर रहे थे, जहाँ बाहर निकलने के बाद खड्‌गसिंह खड़ा होकर रोया था। दोनों के आँसुओं का उस भूमि की मिट्टी पर परस्पर मेल हो गया।

— *सुदर्शन*

लेखक से परिचय

(1896–1983)

यह कहानी हिंदी की प्रसिद्ध कहानियों में से एक है और इसे हिंदी के प्रसिद्ध लेखक सुदर्शन ने लिखा है। सुदर्शन का वास्तविक नाम बदरीनाथ भट्ट था। उन्होंने पहली कहानी तब लिखी थी जब ये आप ही की तरह छठी कक्षा में पढ़ते थे। सुदर्शन ने कहानियों के अतिरिक्त कविताएँ, लेख, नाटक और उपन्यास भी लिखे। इसके अलावा उन्होंने अनेकों फ़िल्मों की पटकथाएँ और गीत भी लिखे।

पाठ से

मेरी समझ से

आइए, अब हम 'हार की जीत' कहानी को थोड़ा और निकटता से समझ लेते हैं।

(क) नीचे दिए गए प्रश्नों का सटीक उत्तर कौन-सा है? उसके सामने तारा (☆) बनाइए—

(1) सुलतान के छीने जाने का बाबा भारती पर क्या प्रभाव हुआ?

- बाबा भारती के मन से चोरी का डर समाप्त हो गया।
- बाबा भारती ने गरीबों की सहायता करना बंद कर दिया।
- बाबा भारती ने द्वार बंद करना छोड़ दिया।
- बाबा भारती असावधान हो गए।

(2) "बाबा भारती भी मनुष्य ही थे।" इस कथन के समर्थन में लेखक ने कौन-सा तर्क दिया है?

- बाबा भारती ने डाकू को घमंड से घोड़ा दिखाया।
- बाबा भारती घोड़े की प्रशंसा दूसरों से सुनने के लिए व्याकुल थे।
- बाबा भारती को घोड़े से अत्यधिक लगाव और मोह था।
- बाबा भारती हर पल घोड़े की रखवाली करते रहते थे।

(ख) अब अपने मित्रों के साथ चर्चा कीजिए कि आपने ये उत्तर ही क्यों चुने?

शीर्षक

(क) आपने अभी जो कहानी पढ़ी है, इसका नाम सुदर्शन ने 'हार की जीत' रखा है। अपने समूह में चर्चा करके लिखिए कि उन्होंने इस कहानी को यह नाम क्यों दिया होगा? अपने उत्तर का कारण भी लिखिए।

(ख) यदि आपको इस कहानी को कोई अन्य नाम देना हो तो क्या नाम देंगे? आपने यह नाम क्यों सोचा, यह भी बताइए।

(ग) बाबा भारती ने डाकू खड्गसिंह से कौन-सा वचन लिया?

पंक्तियों पर चर्चा

कहानी में से चुनकर कुछ वाक्य नीचे दिए गए हैं। इन्हें ध्यान से पढ़िए और इन पर विचार कीजिए। आपको इनका क्या अर्थ समझ में आया? अपने विचार लिखिए—

- "भगवत-भजन से जो समय बचता, वह घोड़े को अर्पण हो जाता।"
- "बाबा ने घोड़ा दिखाया घमंड से, खड्गसिंह ने घोड़ा देखा आश्चर्य से।"
- "वह डाकू था और जो वस्तु उसे पसंद आ जाए उस पर अपना अधिकार समझता था।"
- "बाबा भारती ने निकट जाकर उसकी ओर ऐसी आँखों से देखा जैसे बकरा कसाई की ओर देखता है और कहा, यह घोड़ा तुम्हारा हो चुका है।"
- "उनके पाँव अस्तबल की ओर मुड़े। परंतु फाटक पर पहुँचकर उनको अपनी भूल प्रतीत हुई।"

सोच-विचार के लिए

कहानी को एक बार फिर से पढ़िए और निम्नलिखित पंक्ति के विषय में पता लगाकर अपनी लेखन पुस्तिका में लिखिए।

"दोनों के आँसुओं का उस भूमि की मिट्टी पर परस्पर मेल हो गया।"

(क) किस-किस के आँसुओं का मेल हो गया था?

(ख) दोनों के आँसुओं में क्या अंतर था?

दिनचर्या

(क) कहानी पढ़कर आप बाबा भारती के जीवन के विषय में बहुत कुछ जान चुके हैं। अब आप कहानी के आधार पर बाबा भारती की दिनचर्या लिखिए। वे सुबह उठने से लेकर रात को सोने तक क्या-क्या करते होंगे, लिखिए। इस काम में आप थोड़ा-बहुत अपनी कल्पना का सहारा भी ले सकते हैं।

(ख) अब आप अपनी दिनचर्या भी लिखिए।

कहानी की रचना

(क) इस कहानी की कौन-कौन सी बातें आपको पसंद आईं? आपस में चर्चा कीजिए।

(ख) कोई भी कहानी पाठक को तभी पसंद आती है जब उसे अच्छी तरह लिखा गया हो। लेखक कहानी को अच्छी तरह लिखने के लिए अनेक बातों का ध्यान रखते हैं, जैसे— शब्द, वाक्य, संवाद आदि। इस कहानी में आए संवादों के विषय में अपने विचार लिखें।

मुहावरे कहानी से

(क) कहानी से चुनकर कुछ मुहावरे नीचे दिए गए हैं— लट्टू होना, हृदय पर साँप लोटना, फूले न समाना, मुँह मोड़ लेना, मुख खिल जाना, न्योछावर कर देना। कहानी में इन्हें खोजकर इनका प्रयोग समझिए।

(ख) अब इनका प्रयोग करते हुए अपने मन से नए वाक्य बनाइए।

कैसे-कैसे पात्र

इस कहानी में तीन मुख्य पात्र हैं— बाबा भारती, डाकू खड्गसिंह और सुलतान घोड़ा। इनके गुणों को बताने वाले शब्दों से दिए गए शब्द-चित्रों को पूरा कीजिए—

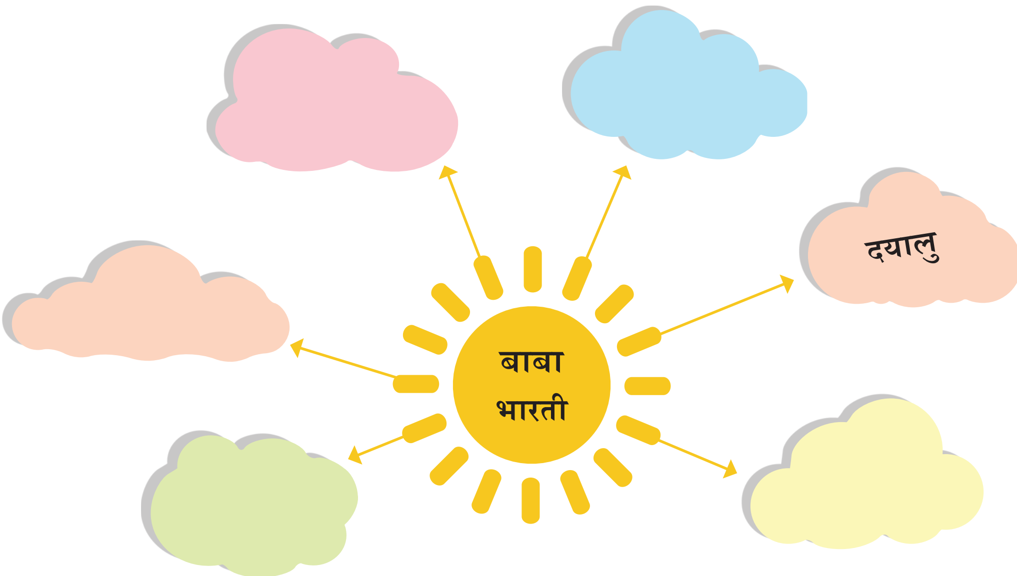
बाबा भारती
दयालु

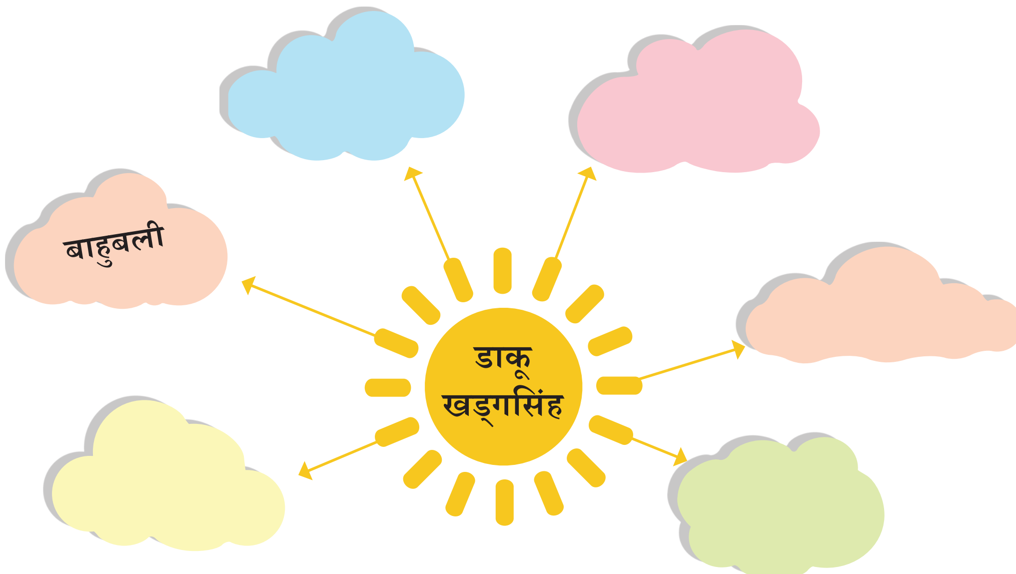
डाकू खड्गसिंह
बाहुबली

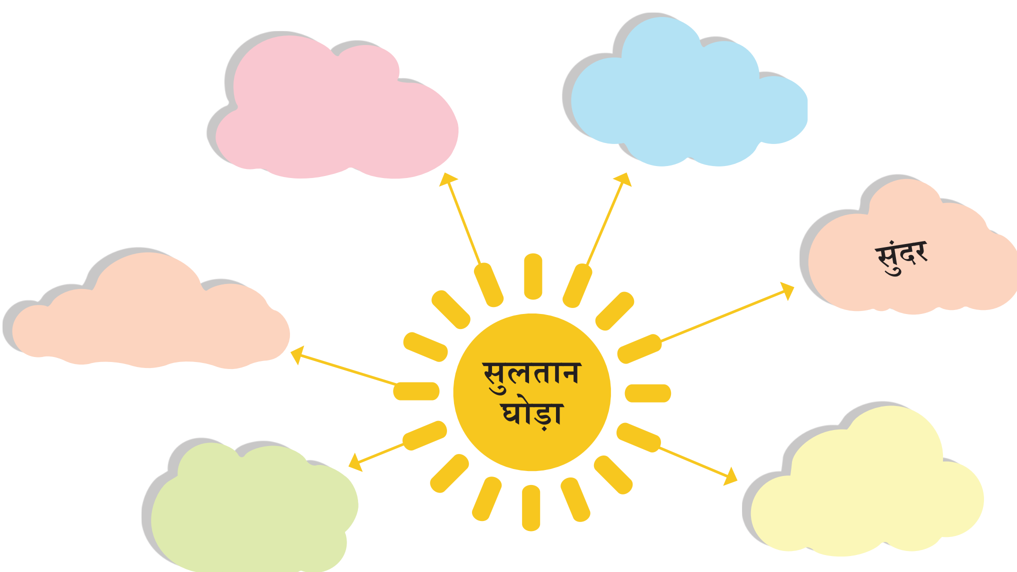
सुलतान घोड़ा
सुंदर

आपने जो शब्द लिखे हैं, वे किसी की विशेषता, गुण और प्रकृति के बारे में बताने के लिए उपयोग में लाए जाते हैं। ऐसे शब्दों को विशेषण कहते हैं।

पाठ से आगे

सुलतान की कहानी

मान लीजिए, यह कहानी सुलतान सुना रहा है। तब कहानी कैसे आगे बढ़ती? स्वयं को सुलतान के स्थान पर रखकर कहानी बनाइए।

(संकेत— आप कहानी को इस प्रकार बढ़ा सकते हैं — *मेरा नाम सुलतान है। मैं एक घोड़ा हूँ.....*)

मन के भाव

(क) कहानी में से चुनकर कुछ शब्द नीचे दिए गए हैं। बताइए, कहानी में कौन, कब, ऐसा अनुभव कर रहा था—

- चकित
- अधीर
- डर
- प्रसन्नता
- करुणा
- निराशा

(ख) आप उपर्युक्त भावों को कब-कब अनुभव करते हैं? लिखिए।

(संकेत— जैसे गली में किसी कुत्ते को देखकर डर या प्रसन्नता या करुणा आदि का अनुभव करना)

झरोखे से

आप जानते ही हैं कि लेखक सुदर्शन ने अनेक कविताएँ भी लिखी हैं। आइए, उनकी लिखी एक कविता पढ़ते हैं—

वह चली हवा

वह चली हवा,
वह चली हवा।
ना तू देखे
ना मैं देखूँ

पर पत्तों ने तो देख लिया
वरना वे खुशी मनाते क्यों?
वह चली हवा,
वह चली हवा।

— सुदर्शन

साझी समझ

आपको इस कविता में क्या अच्छा लगा? आपस में चर्चा कीजिए और अपनी लेखन-पुस्तिका में लिखिए।

खोजबीन के लिए

सुदर्शन की कुछ अन्य रचनाएँ पुस्तक में दिए गए क्यू.आर. कोड या इंटरनेट या पुस्तकालय की सहायता से पढ़ें, देखें व समझें।

5

रहीम के दोहे*

रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिये डारि।
जहाँ काम आवे सुई, कहा करे तलवारि ॥

तरुवर फल नहिं खात हैं सरवर पियहिं न पान।
कहि रहीम पर काज हित, संपति सँचहि सुजान ॥

रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो छिटकाय।
टूटे से फिर ना मिले, मिले गाँठ परि जाय ॥

रहिमन पानी राखिये, बिनु पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरै, मोती, मानुष, चून ॥

रहिमन बिपदाहू भली, जो थोरे दिन होय।
हित अनहित या जगत में, जानि परत सब कोय ॥

रहिमन जिह्वा बावरी, कहि गइ सरग पताल।
आपु तो कहि भीतर रही, जूती खात कपाल ॥

कहि रहीम संपति सगे, बनत बहुत बहु रीत।
बिपति कसौटी जे कसे, ते ही साँचे मीत ॥

— *अब्दुर्रहीम खानखाना*

*संदर्भ— *रहीम ग्रंथावली* (सं.) विद्यानिवास मिश्र

कवि से परिचय

रहीम भक्तिकाल के एक प्रसिद्ध कवि थे। ऐसा माना जाता है कि उनका जन्म 16वीं शताब्दी में हुआ था। उन्होंने नीति, भक्ति और प्रेम संबंधी रचनाएँ कीं। उन्होंने अवधी और ब्रजभाषा दोनों में कविताएँ लिखी हैं। रहीम रामायण, महाभारत आदि प्रसिद्ध ग्रंथों के अच्छे जानकार थे। उनकी मृत्यु 17वीं शताब्दी में हुई थी। आज भी आम जन-जीवन में उनके दोहे बहुत लोकप्रिय हैं।

पाठ से

मेरी समझ से

(क) नीचे दिए गए प्रश्नों का सबसे सही (सटीक) उत्तर कौन-सा है? उसके सामने तारा (☆) बनाइए—

(1) "रहिमन जिह्वा बावरी, कहि गइ सरग पताल। आपु तो कहि भीतर रही, जूती खात कपाल।" दोहे का भाव है—

- सोच-समझकर बोलना चाहिए।
- मधुर वाणी में बोलना चाहिए।
- धीरे -धीरे बोलना चाहिए।
- सदा सच बोलना चाहिए।

(2) "रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिये डारि। जहाँ काम आवे सुई, कहा करे तलवारि।" इस दोहे का भाव क्या है?

- तलवार सुई से बड़ी होती है।
- सुई का काम तलवार नहीं कर सकती।
- तलवार का महत्व सुई से ज्यादा है।
- हर छोटी-बड़ी चीज़ का अपना महत्व होता है।

(ख) अब अपने मित्रों के साथ चर्चा कीजिए और कारण बताइए कि आपने यही उत्तर क्यों चुने?

मिलकर करें मिलान

पाठ में से कुछ दोहे स्तंभ 1 में दिए गए हैं और उनके भाव स्तंभ 2 में दिए गए हैं। अपने समूह में इन पर चर्चा कीजिए और रेखा खींचकर सही भाव से मिलान कीजिए।

स्तंभ 1	स्तंभ 2
1. रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो छिटकाय। टूटे से फिर ना मिले, मिले गाँठ परि जाय।।	1. सज्जन परहित के लिए ही संपत्ति संचित करते हैं।
2. कहि रहीम संपति सगे, बनत बहुत बहु रीत। बिपति कसौटी जे कसे, ते ही साँचे मीत।।	2. सच्चे मित्र विपत्ति या विपदा में भी साथ रहते हैं
3. तरुवर फल नहिं खात हैं, सरवर पियहिं न पान। कहि रहीम पर काज हित, संपति सँचहि सुजान।।	3. प्रेम या रिश्तों को सहेजकर रखना चाहिए।

पंक्तियों पर चर्चा

नीचे दिए गए दोहों पर समूह में चर्चा कीजिए और उनके अर्थ या भावार्थ अपनी लेखन पुस्तिका में लिखिए—

(क) “रहिमन बिपदाहू भली, जो थोरे दिन होय।
हित अनहित या जगत में, जानि परत सब कोय।।”

(ख) “रहिमन जिह्वा बावरी, कहि गइ सरग पताल।
आपु तो कहि भीतर रही, जूती खात कपाल।।”

सोच-विचार के लिए

दोहों को एक बार फिर से पढ़िए और निम्नलिखित के बारे में पता लगाकर अपनी लेखन पुस्तिका में लिखिए—

1. “रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो छिटकाय।
टूटे से फिर ना मिले, मिले गाँठ परि जाय।।”

(क) इस दोहे में 'मिले' के स्थान पर 'जुड़े' और 'छिटकाय' के स्थान पर 'चटकाय' शब्द का प्रयोग भी लोक में प्रचलित है। जैसे—

"रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो चटकाय।
टूटे से फिर ना जुड़े, जुड़े गाँठ पड़ जाय।।"

इसी प्रकार पहले दोहे में 'डारि' के स्थान पर 'डार', 'तलवारि' के स्थान पर 'तरवार' और चौथे दोहे में 'मानुष' के स्थान पर 'मानस' का उपयोग भी प्रचलित हैं। ऐसा क्यों होता है?

(ख) इस दोहे में प्रेम के उदाहरण में धागे का प्रयोग ही क्यों किया गया है? क्या आप धागे के स्थान पर कोई अन्य उदाहरण सुझा सकते हैं? अपने सुझाव का कारण भी बताइए।

2. "तरुवर फल नहिं खात हैं, सरवर पियहिं न पान।
कहि रहीम पर काज हित, संपति सँचहि सुजान।।"

इस दोहे में प्रकृति के माध्यम से मनुष्य के किस मानवीय गुण की बात की गई है? प्रकृति से हम और क्या-क्या सीख सकते हैं?

शब्दों की बात

हमने शब्दों के नए-नए रूप जाने और समझे। अब कुछ करके देखें—

- **शब्द-संपदा**

कविता में आए कुछ शब्द नीचे दिए गए हैं। इन शब्दों को आपकी मातृभाषा में क्या कहते हैं? लिखिए।

कविता में आए शब्द	मातृभाषा में समानार्थक शब्द
तरुवर	
बिपति	
छिटकाय	
सुजान	
सरवर	
साँचे	
कपाल	

- **शब्द एक अर्थ अनेक**

“रहिमन पानी राखिये, बिनु पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरै, मोती, मानुष, चून।।”

इस दोहे में ‘पानी’ शब्द के तीन अर्थ हैं— सम्मान, जल, चमक।

इसी प्रकार कुछ शब्द नीचे दिए गए हैं। आप भी इन शब्दों के तीन-तीन अर्थ लिखिए। आप इस कार्य में शब्दकोश, इंटरनेट, शिक्षक या अभिभावकों की सहायता भी ले सकते हैं।

कल – ------------------, ------------------, ------------------

पत्र – ------------------, ------------------, ------------------

कर – ------------------, ------------------, ------------------

फल – ------------------, ------------------, ------------------

पाठ से आगे

आपकी बात

“रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिये डारि।
जहाँ काम आवे सुई, कहा करे तलवारि।।”

इस दोहे का भाव है— न कोई बड़ा है और न ही कोई छोटा है। सबके अपने-अपने काम हैं, सबकी अपनी-अपनी उपयोगिता और महत्ता है। चाहे हाथी हो या चींटी, तलवार हो या सुई, सबके अपने-अपने आकार-प्रकार हैं और सबकी अपनी-अपनी उपयोगिता और महत्व है। सिलाई का काम सुई से ही किया जा सकता है, तलवार से नहीं। सुई जोड़ने का काम करती है जबकि तलवार काटने का। कोई वस्तु हो या व्यक्ति, छोटा हो या बड़ा, सबका सम्मान करना चाहिए।

अपने मनपसंद दोहे को इस तरह की शैली में अपने शब्दों में लिखिए। दोहा पाठ से या पाठ से बाहर का हो सकता है।

सरगम

- रहीम, कबीर, तुलसी, वृंद आदि के दोहे आपने दृश्य-श्रव्य (टी.वी.-रेडियो) माध्यमों से कई बार सुने होंगे। कक्षा में आपने दोहे भी बड़े मनोयोग से गाए होंगे। अब बारी है इन दोहों की रिकॉर्डिंग (ऑडियो या विजुअल) की। रिकॉर्डिंग सामान्य मोबाइल से की जा सकती है। इन्हें अपने दोस्तों के साथ समूह में या अकेले गा सकते हैं। यदि संभव हो तो वाद्ययंत्रों के साथ भी गायन करें। रिकॉर्डिंग के बाद दोहे स्वयं भी सुनें और लोगों को भी सुनाएँ।
- रहीम, वृन्द, कबीर, तुलसी, बिहारी आदि के दोहे आज भी जनजीवन में लोकप्रिय हैं। दोहे का प्रयोग लोग अपनी बात पर विशेष ध्यान दिलाने के लिए करते हैं। जब दोहे समाज में इतने लोकप्रिय हैं तो क्यों न इन दोहों को एकत्र करें और अंत्याक्षरी खेलें। अपने समूह में मिलकर दोहे एकत्र कीजिए। इस कार्य में आप इंटरनेट, पुस्तकालय और अपने शिक्षकों या अभिभावकों की सहायता भी ले सकते हैं।

आज की पहेली

1. दो अक्षर का मेरा नाम, आता हूँ खाने के काम
   उल्टा होकर नाच दिखाऊँ, मैं क्यों अपना नाम बताऊँ।
2. एक किले के दो ही द्वार, उनमें सैनिक लकड़ीदार
   टकराएँ जब दीवारों से, जल उठे सारा संसार।

खोजबीन के लिए

रहीम के कुछ अन्य दोहे पुस्तकालय या इंटरनेट की सहायता से पढ़ें, देखें व समझें।

6

मेरी माँ

"श्री रामप्रसाद 'बिस्मिल' बड़े होनहार नौजवान थे। गज़ब के शायर थे। देखने में भी बहुत सुंदर थे। योग्य बहुत थे। जानने वाले कहते हैं कि यदि किसी और जगह या किसी और देश या किसी और समय पैदा हुए होते तो सेनाध्यक्ष बनते।" यह कहना है हमारे देश के प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी भगत सिंह का बिस्मिल के बारे में।

रामप्रसाद 'बिस्मिल' का जन्म जब हुआ, उस समय भारत पर अंग्रेज़ों का आधिपत्य था। 'बिस्मिल' छोटी-सी आयु से ही भारत की स्वतंत्रता के लिए अंग्रेज़ों से लड़ते रहे। अंग्रेज़ों ने उन्हें जेल भेज दिया और फ़ाँसी की सज़ा दे दी। जेल में भी उन्होंने अंग्रेज़ों के अनेक अत्याचार सहे। जेल में रहते-रहते ही उन्होंने चोरी-छिपे अपनी आत्मकथा लिखी और अंग्रेज़ों से बचते-बचाते जेल से बाहर भेजते रहे। उनके साथियों ने उसे प्रकाशित भी करवा दिया। इसका नाम रखा गया- 'निज जीवन की एक छटा।' इस पुस्तक ने अंग्रेज़ों के होश उड़ा दिए। लोगों में अंग्रेज़ों के विरुद्ध क्रोध और बढ़ गया। इस तरह इस आत्मकथा के कारण अंग्रेज़ बिस्मिल को फ़ाँसी देने के बाद भी उन्हें हरा न सके।

इस आत्मकथा के माध्यम से आज भी 'बिस्मिल' हमारे मस्तिष्क में जीवित हैं। आज भी यह आत्मकथा लोगों को प्रेरित करती है। क्या आप भी उनकी आत्मकथा को पढ़ना चाहते हैं? क्या कहा? हाँ? तो यहाँ प्रस्तुत है उसी आत्मकथा का एक अंश।

लखनऊ कांग्रेस में जाने के लिए मेरी बड़ी इच्छा थी। दादीजी और पिताजी तो विरोध करते रहे, किंतु माताजी ने मुझे खर्च दे ही दिया। उसी समय शाहजहाँपुर में सेवा-समिति का आरंभ हुआ था। मैं बड़े उत्साह के साथ सेवा समिति में सहयोग देता था। पिताजी और दादीजी को मेरे इस प्रकार के

कार्य अच्छे न लगते थे, किंतु माताजी मेरा उत्साह भंग न होने देती थीं, जिसके कारण उन्हें अक्सर पिताजी की डाँट-फटकार तथा दंड सहन करना पड़ता था। वास्तव में, मेरी माताजी देवी हैं। मुझमें जो कुछ जीवन तथा साहस आया, वह मेरी माताजी तथा गुरुदेव श्री सोमदेव जी की कृपाओं का ही परिणाम है। दादीजी और पिताजी मेरे विवाह के लिए बहुत अनुरोध करते, किंतु माताजी यही कहतीं कि शिक्षा पा चुकने के बाद ही विवाह करना उचित होगा। माताजी के प्रोत्साहन तथा सद्‌व्यवहार ने मेरे जीवन में वह दृढ़ता उत्पन्न की कि किसी आपत्ति तथा संकट के आने पर भी मैंने अपने संकल्प को न त्यागा।

एक समय मेरे पिताजी दीवानी मुकदमे में किसी पर दावा करके वकील से कह गए थे कि जो काम हो वह मुझसे करा लें। कुछ आवश्यकता पड़ने पर वकील साहब ने मुझे बुला भेजा और कहा कि मैं पिताजी के हस्ताक्षर वकालतनामे पर कर दूँ। मैंने तुरंत उत्तर दिया कि यह तो धर्म विरुद्ध होगा, इस प्रकार का पाप मैं कदापि नहीं कर सकता। वकील साहब ने बहुत समझाया कि मुकदमा खारिज हो जाएगा। किंतु मुझ पर कुछ भी प्रभाव न हुआ, न मैंने हस्ताक्षर किए। अपने जीवन में हमेशा सत्य का आचरण करता था, चाहे कुछ हो जाए, सत्य बात कह देता था।

ग्यारह वर्ष की उम्र में माताजी विवाह कर शाहजहाँपुर आई थीं। उस समय वह नितांत अशिक्षित एक ग्रामीण कन्या के समान थीं। शाहजहाँपुर आने के थोड़े दिनों बाद दादीजी ने अपनी छोटी

बहन को बुला लिया। उन्होंने माताजी को गृहकार्य की शिक्षा दी। थोड़े दिनों में माताजी ने घर के सब काम-काज को समझ लिया और भोजनादि का ठीक-ठीक प्रबंध करने लगीं। मेरे जन्म होने के पाँच या सात वर्ष बाद उन्होंने हिंदी पढ़ना आरंभ किया। पढ़ने का शौक उन्हें खुद ही पैदा हुआ था। मुहल्ले की सखी-सहेली जो घर पर आया करती थीं, उन्हीं में जो शिक्षित थीं, माताजी उनसे अक्षर-बोध करतीं। इस प्रकार घर का सब काम कर चुकने के बाद जो कुछ समय मिल जाता, उसमें पढ़ना-लिखना करती। परिश्रम के फल से थोड़े दिनों में ही वह देवनागरी पुस्तकों का अध्ययन करने लगीं। मेरी बहनों को छोटी आयु में माताजी ही शिक्षा दिया करती थीं। जब से मैंने आर्यसमाज में प्रवेश किया, माताजी से खूब वार्तालाप होता। उस समय की अपेक्षा अब उनके विचार भी कुछ उदार हो गए हैं। यदि मुझे ऐसी माता न मिलतीं तो मैं भी अति साधारण मनुष्यों की भाँति संसार-चक्र में फँसकर जीवन निर्वाह करता। शिक्षादि के अतिरिक्त क्रांतिकारी जीवन में भी उन्होंने मेरी वैसी ही सहायता की है, जैसी मेजिनी को उनकी माता ने की थी। माताजी का सबसे बड़ा आदेश मेरे लिए यही था कि किसी की प्राणहानि न हो। उनका कहना था कि अपने शत्रु को भी कभी प्राणदंड न देना। उनके इस आदेश की पूर्ति करने के लिए मुझे मजबूरन दो-एक बार अपनी प्रतिज्ञा भंग करनी पड़ी थी।

जन्मदात्री जननी! इस जीवन में तो तुम्हारा ऋण उतारने का प्रयत्न करने का भी अवसर न मिला। इस जन्म में तो क्या यदि मैं अनेक जन्मों में भी सारे जीवन प्रयत्न करूँ तो भी तुमसे उऋण नहीं हो सकता। जिस प्रेम तथा दृढ़ता के साथ तुमने इस तुच्छ जीवन का सुधार किया है, वह अवर्णनीय है। मुझे जीवन की प्रत्येक घटना का स्मरण है कि तुमने जिस प्रकार अपनी

देववाणी का उपदेश करके मेरा सुधार किया है। तुम्हारी दया से ही मैं देश-सेवा में संलग्न हो सका। धार्मिक जीवन में भी तुम्हारे ही प्रोत्साहन ने सहायता दी। जो कुछ शिक्षा मैंने ग्रहण की उसका भी श्रेय तुम्हीं को है। जिस मनोहर रूप से तुम मुझे उपदेश करती थीं, उसका स्मरण कर तुम्हारी मंगलमयी मूर्ति का ध्यान आ जाता है और मस्तक झुक जाता है। तुम्हें यदि मुझे ताड़ना भी देनी हुई, तो बड़े स्नेह से हर बात को समझा दिया। यदि मैंने धृष्टतापूर्ण उत्तर दिया तब तुमने प्रेम भरे शब्दों में यही कहा कि तुम्हें जो अच्छा लगे, वह करो, किंतु ऐसा करना ठीक नहीं, इसका परिणाम अच्छा न होगा। जीवनदात्री! तुमने इस शरीर को जन्म देकर केवल पालन-पोषण ही नहीं किया बल्कि आत्मिक, धार्मिक तथा सामाजिक उन्नति में तुम्हीं मेरी सदैव सहायक रहीं। जन्म-जन्मांतर परमात्मा ऐसी ही माता दें।

महान से महान संकट में भी तुमने मुझे अधीर नहीं होने दिया। सदैव अपनी प्रेम भरी वाणी को सुनाते हुए मुझे सांत्वना देती रहीं। तुम्हारी दया की छाया में मैंने अपने जीवन भर में कोई कष्ट अनुभव न किया। इस संसार में मेरी किसी भी भोग-विलास तथा ऐश्वर्य की इच्छा नहीं। केवल एक इच्छा है, वह यह कि एक बार श्रद्धापूर्वक तुम्हारे चरणों की सेवा करके अपने जीवन को सफल बना लेता। किंतु यह इच्छा पूर्ण होती नहीं दिखाई देती और तुम्हें मेरी मृत्यु की दुखभरी खबर सुनाई जाएगी। माँ! मुझे विश्वास है कि तुम यह समझ कर धैर्य धारण करोगी कि तुम्हारा पुत्र माताओं की माता या भारत माता की सेवा में अपने जीवन को बलि-देवी की भेंट कर गया और उसने तुम्हारी कोख कलंकित न की, अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहा। जब स्वाधीन भारत का इतिहास लिखा जाएगा तो उसके किसी पृष्ठ पर उज्ज्वल अक्षरों में तुम्हारा भी नाम लिखा जाएगा। गुरु गोबिंद सिंह जी की धर्मपत्नी ने जब अपने पुत्रों की मृत्यु की खबर सुनी तो बहुत प्रसन्न हुई थीं और गुरु के नाम पर धर्म-रक्षार्थ अपने पुत्रों के बलिदान पर मिठाई बाँटी थी। जन्मदात्री! वर दो कि अंतिम समय भी मेरा हृदय किसी प्रकार विचलित न हो और तुम्हारे चरण कमलों को प्रणाम कर मैं परमात्मा का स्मरण करता हुआ शरीर त्याग करूँ।

— रामप्रसाद 'बिस्मिल'

लेखक से परिचय

(1897– 1927)

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में अनेक क्रांतिकारी वीरों ने अपना बलिदान दिया। 'सरफरोशी की तमन्ना' जैसा तराना लिखने वाले रामप्रसाद 'बिस्मिल' भी उन्हीं क्रांतिकारियों में से एक थे। मात्र तीस वर्ष की आयु में अंग्रेज़ सरकार द्वारा उन्हें फ़ाँसी पर लटका दिया गया। असाधारण प्रतिभा के धनी रामप्रसाद 'बिस्मिल' एक अच्छे कवि और लेखक भी थे। उन्होंने अनेक पुस्तकें लिखीं जिनमें उनकी आत्मकथा काफ़ी चर्चित रही। 'मेरी माँ' उनकी आत्मकथा का ही एक अंश है।

पाठ से

मेरी समझ से

(क) नीचे दिए गए प्रश्नों का सटीक उत्तर कौन-सा है? उसके सामने तारा (☆) बनाइए—

(1) 'किंतु यह इच्छा पूर्ण होती नहीं दिखाई देती।'
बिस्मिल को अपनी किस इच्छा के पूर्ण न होने की आशंका थी?

- भारत माता के साथ रहने की
- अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहने की
- अपनी माँ की जीवनपर्यंत सेवा करने की
- भोग विलास तथा ऐश्वर्य भोगने की

(2) रामप्रसाद बिस्मिल की माँ का सबसे बड़ा आदेश क्या था?

- देश की सेवा करें
- कभी किसी के प्राण न लेना
- कभी किसी से छल न करना
- सदा सच बोलना

(ख) अब अपने मित्रों के साथ तर्कपूर्ण चर्चा कीजिए कि आपने ये ही उत्तर क्यों चुने?

पंक्तियों पर चर्चा

पाठ में से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। इन्हें पढ़कर समझिए और इन पर विचार कीजिए। आपको इनका क्या अर्थ समझ में आया? कक्षा में अपने विचार साझा कीजिए और लिखिए।

(क) "यदि मुझे ऐसी माता न मिलतीं, तो मैं भी अति साधारण मनुष्यों की भाँति संसार-चक्र में फँसकर जीवन निर्वाह करता।"

(ख) "उनके इस आदेश की पूर्ति करने के लिए मुझे मज़बूरन दो-एक बार अपनी प्रतिज्ञा भंग भी करनी पड़ी थी।"

मिलकर करें मिलान

पाठ में से चुनकर कुछ शब्द नीचे दिए गए हैं। अपने समूह में इन पर चर्चा कीजिए और इन्हें इनके सही अर्थ या संदर्भों से मिलाइए। इसके लिए आप शब्दकोश, इंटरनेट, पुस्तकालय या अपने शिक्षकों की सहायता ले सकते हैं।

शब्द	अर्थ या संदर्भ
1. देवनागरी	1. सिखों के दसवें और अंतिम गुरु थे। उन्होंने खालसा पंथ की स्थापना की।
2. आर्यसमाज	2. इटली के गुप्त राष्ट्रवादी दल का सेनापति; इटली का मसीहा था जिसने लोगों को एक सूत्र में बाँधा।
3. मेजिनी	3. महर्षि दयानंद द्वारा स्थापित एक संस्था।
4. गोबिंद सिंह	4. भारत की एक भाषा-लिपि जिसमें हिंदी, संस्कृत, मराठी आदि भाषाएँ लिखी जाती हैं।

सोच-विचार के लिए

पाठ को एक बार फिर से पढ़िए और दिए गए प्रश्नों के बारे में पता लगाकर अपनी लेखन पुस्तिका में लिखिए।

1. बिस्मिल की माता जी जब ब्याह कर आईं तो उनकी आयु काफ़ी कम थी।

    (क) फिर भी उन्होंने स्वयं को अपने परिवार के अनुकूल कैसे ढाला?

    (ख) उन्होंने अपनी इच्छाशक्ति के बल पर स्वयं को कैसे शिक्षित किया?

2. बिस्मिल को साहसी बनाने में उनकी माता जी ने कैसे सहयोग दिया?

3. आज से कई दशक पहले बिस्मिल की माँ शिक्षा के महत्व को समझती थीं, बताइए कैसे?

4. हम कैसे कह सकते हैं कि बिस्मिल की माँ स्वतंत्र और उदार विचारों वाली थीं?

आत्मकथा की रचना

यह पाठ रामप्रसाद 'बिस्मिल' की आत्मकथा का एक अंश है। आत्मकथा यानी अपनी कथा। दुनिया में अनेक लोग अपनी आत्मकथा लिखते हैं, कभी अपने लिए, तो कभी दूसरों के पढ़ने के लिए।

(क) इस पाठ को एक बार फिर से पढ़िए और अपने-अपने समूह में मिलकर इस पाठ की ऐसी पंक्तियों की सूची बनाइए जिनसे पता लगे कि लेखक अपने बारे में कह रहा है।

(ख) अपने समूह की सूची को कक्षा में सबके साथ साझा कीजिए।

शब्द-प्रयोग तरह-तरह के

(क) "माता जी उनसे अक्षर-बोध करतीं।" इस वाक्य में अक्षर-बोध का अर्थ है— अक्षर का बोध या ज्ञान।

एक अन्य वाक्य देखिए— "जो कुछ समय मिल जाता, उसमें पढ़ना-लिखना करतीं।" इस वाक्य में पढ़ना-लिखना अर्थात पढ़ना और लिखना।

हम लेखन में शब्दों को मिलाकर छोटा बना लेते हैं जिससे समय, स्याही, कागज़ आदि की बचत होती है। संक्षेपीकरण मानव का स्वभाव भी हैं। इस पाठ से ऐसे शब्द खोजकर सूची बनाइए।

पाठ से आगे

आपकी बात

(क) रामप्रसाद 'बिस्मिल' के मित्रों के नाम खोजिए और स्वतंत्रता आंदोलन में उनकी भागीदारी पर कक्षा में चर्चा कीजिए।

(ख) नीचे लिखे बिंदुओं को आधार बनाते हुए अपनी माँ या अपने अभिभावक से बातचीत कीजिए और उनके बारे में गहराई से जानिए कि उनका प्रिय रंग, भोज्य पदार्थ, गीत, बचपन की यादें, प्रिय स्थान आदि कौन-कौन से थे?

उदाहरण के लिए—

- आपका जन्म कहाँ हुआ था?
- आपकी प्रिय पुस्तक का नाम क्या है?

पुस्तकालय या इंटरनेट से

आप पुस्तकालय से रामप्रसाद 'बिस्मिल' की आत्मकथा खोजकर पढ़िए।

देशभक्तों से संबंधित अन्य पुस्तकें, जैसे— उनके पत्र, आत्मकथा, जीवनी आदि पढ़िए और अपने मित्रों से साझा कीजिए।

शब्दों की बात

आप अपनी माँ को क्या कहकर संबोधित करते हैं? अन्य भाषाओं में माँ के लिए प्रयुक्त संबोधन और माँ के लिए शब्द ढूँढ़िए।

क्या उनमें कुछ समानता दिखती है? हाँ, तो क्या?

आज की पहेली

यहाँ दी गई वर्ग पहेली में पाठ से बारह विशेषण दिए गए हैं। उन्हें छाँटकर पाठ में रेखांकित कीजिए।

मं	ग	ल	म	यी	ल
प्र	त्ये	क	नो	छो	टी
धा	ग्या	र	ह	खू	ब
र्मि	सा	धा	र	ण	ड़ा
क	दु	ख	भ	री	प
म	हा	न	स्वा	धी	न

झरोखे से

ऐ मातृभूमि!

ऐ मातृभूमि! तेरी जय हो, सदा विजय हो।
प्रत्येक भक्त तेरा, सुख-शांति-कांतिमय हो।
अज्ञान की निशा में, दुख से भरी दिशा में;
संसार के हृदय में, तेरी प्रभा उदय हो।
तेरा प्रकोप सारे जग का महाप्रलय हो।
तेरी प्रसन्नता ही आनंद का विषय हो।
वह भक्ति दे कि 'बिस्मिल' सुख में तुझे न भूले,
वह शक्ति दे कि दुख में कायर न यह हृदय हो।

— रामप्रसाद 'बिस्मिल'

खोजबीन के लिए

माँ से संबंधित पाँच रचनाएँ पुस्तकालय से खोजें और अपनी पत्रिका बनाएँ।

7

हम पंछी उन्मुक्त गगन के

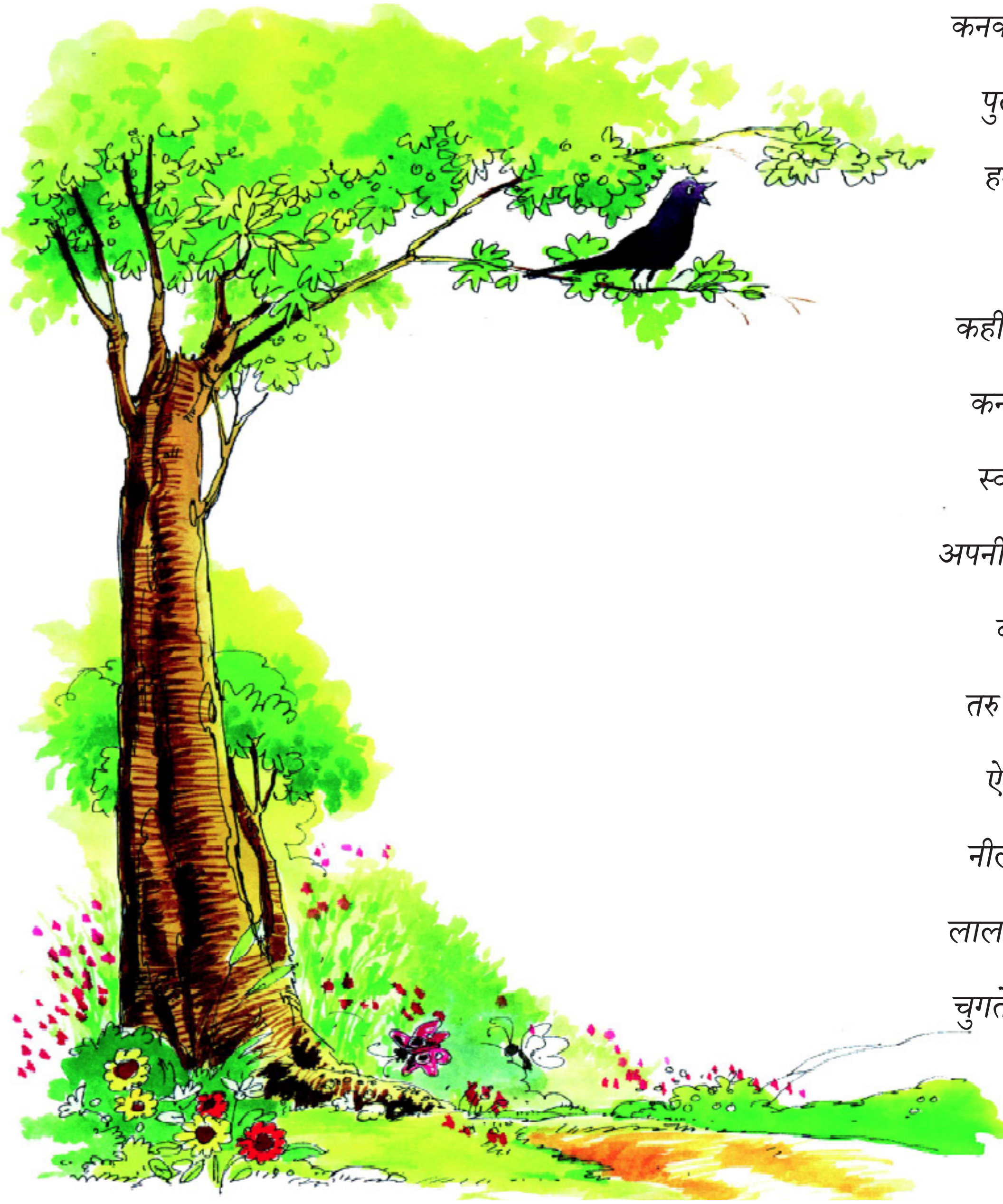

हम पंछी उन्मुक्त गगन के
पिंजरबद्ध न गा पाएँगे,
कनक-तीलियों से टकराकर
पुलकित पंख टूट जाएँगे।

हम बहता जल पीनेवाले
मर जाएँगे भूखे-प्यासे,
कहीं भली है कटुक निबौरी
कनक-कटोरी की मैदा से।

स्वर्ण- शृंखला के बंधन में
अपनी गति, उड़ान सब भूले,
बस सपनों में देख रहे हैं
तरु की फुनगी पर के झूले।

ऐसे थे अरमान कि उड़ते
नील-गगन की सीमा पाने,
लाल किरण-सी चोंच खोल
चुगते तारक-अनार के दाने।

होती सीमाहीन क्षितिज से
इन पंखों की होड़ा-होड़ी,
या तो क्षितिज मिलन बन जाता
या तनती साँसों की डोरी।
नीड़ न दो, चाहे टहनी का
आश्रय छिन्न-भिन्न कर डालो,
लेकिन पंख दिए हैं, तो
आकुल उड़ान में विघ्न न डालो।

— डॉ. शिव मंगल सिंह 'सुमन'

कवि से परिचय

(1915–2002)

अभी आपने जो कविता पढ़ी है, उसे हिंदी के प्रसिद्ध कवि और शिक्षाविद डॉ. शिव मंगल सिंह 'सुमन' ने लिखा है, वे प्रगतिशील लेखन के अग्रणी कवि थे। उनकी कविता का मूल स्वर मानवतावादी था।

पाठ से

आइए, अब हम इस कविता से अपनी मित्रता को और घनिष्ठ बना लेते हैं। इसके लिए नीचे कुछ गतिविधियाँ दी गई हैं। हो सकता है कि इन्हें करने के लिए आप कविता को फिर से पढ़ने की आवश्यकता अनुभव करें।

मेरी समझ से

(क) नीचे दिए गए प्रश्नों का सटीक उत्तर कौन-सा है? उसके सामने तारा (*) बनाइए –

1. निम्नलिखित में से कौन-सी बात इस कविता में मुख्य रूप से कही गई है?

- पंछी अपनी खूबी का वर्णन करते हैं।
- पंछी स्वतंत्र आकाश में उड़ना चाहते हैं।
- पंछी पिंजरे में बंद रहना चाहते हैं।
- पंछी गीत गाना चाहते हैं।

2. "हम पंछी उन्मुक्त गगन के पिंजरबद्ध न गा पाएँगे" इस पंक्ति में मुख्य रूप से कौन-सी बात की गई है?

- गुलामी की
- स्वतंत्रता की
- सलाखों की
- पिंजरे की

(ख) अपने मित्रों के साथ चर्चा कीजिए और कारण बताइए की आपने सही उत्तर ही क्यों चुना?

मिलकर करें मिलान

कविता में से चुनकर कुछ शब्द यहाँ दिए गए हैं। अपने समूह में इन पर चर्चा कीजिए और इन्हें इनके सही अर्थ या सन्दर्भों से मिलाइए। इसके लिए आप शब्दकोश, इंटरनेट या अपने शिक्षकों की सहायता ले सकते हैं।

शब्द	अर्थ या संदर्भ
1. पिंजरबद्ध	1. वह स्थान जहाँ पर धरती और आसमान मिलते हुए दिखाई देते हैं।
2. फुनगी	2. पक्षी
3. क्षितिज	3. पेड़ का अंतिम सिरा
4. आश्रय	4. पिंजरे में बंद
5. नीड़	5. बराबरी करना
6. तारक	6. सहारा
7. होड़ा-होड़ी	7. घोंसला

पंक्तियों पर चर्चा

कविता में से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। इन्हें ध्यान से पढ़िए और इन पर विचार कीजिए। आपको इनका क्या अर्थ समझ में आया? अपने विचार अपने समूह में साझा कीजिए और अपनी लेखन पुस्तिका में लिखिए—

होती सीमाहीन क्षितिज से

इन पंखों की होड़ा-होड़ी,

या तो क्षितिज मिलन बन जाता

या तनती साँसों की डोरी।

नीड़ न दो, चाहे टहनी का

आश्रय छिन्न-भिन्न कर डालो,

लेकिन पंख दिए हैं, तो

आकुल उड़ान में विघ्न न डालो।

सोच-विचार के लिए

कविता को एक बार फिर से पढ़िए, पता लगाइए और अपनी लेखन पुस्तिका में लिखिए –

(क) कविता में उन्मुक्त पक्षी और पिंजरबद्ध पक्षियों के किस दशा के उदाहरण दिए गए हैं ?

(ख) क्या इस कविता में निराशा को भूलकर आशा उत्साह जगाने वाली बात कही गई है ?

(ग) कविता में उन्मुक्त पक्षी और पिंजरबद्ध पक्षियों में से आप पक्षी को किस रूप में देखना चाहेंगे और क्यों?

कविता की रचना

"हम पंछी उन्मुक्त गगन के

पिंजरबद्ध न गा पाएँगे"

इन पंक्तियों को अपने शिक्षक के साथ मिलकर लय सहित गाने एवं बोलने का प्रयास कीजिए। आप हाथों से ताल भी दे सकते हैं। दोनों पंक्तियों को गाने एवं बोलने में समान समय लगा या अलग-अलग? आपने अवश्य ही अनुभव किया होगा कि इन पंक्तियों को बोलने एवं गाने में लगभग एक-समान समय लगता है। केवल इन दो पंक्तियों को ही नहीं, इस कविता की प्रत्येक पंक्ति को गाने में एवं बोलने में लगभग समान समय ही लगता है। इस विशेषता के कारण यह कविता और अधिक प्रभावशाली हो गई है।

आप ध्यान देंगे तो इस कविता में आपको और भी अनेक विशेष बातें दिखाई देंगीं।

(क) इस कविता को एक बार फिर से पढ़िए और अपने-अपने समूह में मिलकर इस कविता की विशेषताओं की सूची बनाइए, जैसे इस कविता की पंक्तियों को 4-4 के क्रम में बाँटा गया है आदि।

(ख) कविता की विशेषताओं की सूची को कक्षा में साथियों से साझा कीजिए।

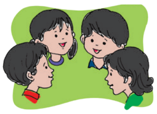

मिलान

स्तंभ 1 और स्तंभ 2 में कुछ पंक्तियाँ दी गई हैं। मिलते-जुलते भाव वाली पंक्तियों को रेखा खींचकर जोड़िए—

स्तंभ 1	स्तंभ 2
1. हम बहता जलपीने वाले मर जाएँगे भूखे-प्यासे	1. पक्षी अपने सूरज की किरणों के जैसी लाल चोंच को खोलकर तारों के समान अनार के दानों को चुग लें।
2. बस सपनों में देख रहे हैं तरु की फुनगी पर के झूले।	2. हम पक्षी नदियों-झरनों का बहता हुआ जल पी लेंगे और स्वछन्द जीवन में भूखे-प्यासे रहकर मरना भी स्वीकार कर लेंगे।
3. लाल किरण-सी चोंच खोल चुगते तारक-अनार के दाने।	3. भले ही हमें पेड़ पर टहनियों के घोंसले में न रहने दो और चाहो तो हमारे रहने के स्थान को भी नष्ट कर डालो।
4. नीड़ न दो, चाहे टहनी का आश्रय छिन्न-भिन्न कर डालो	4. अब तो हम केवल सपने में ही देखते हैं कि हम पेड़ों की ऊँची डालियों में झूला झूल रहे हैं।

अनुमान या कल्पना से

अपने समूह में मिलकर चर्चा कीजिए -

(क) हम पंछी उन्मुक्त गगन के

पिंजरबद्ध न गा पाएँगे,

यदि आपको कोई पिंजरे में बंद कर देंगे तो क्या आप पिंजरे में रहना पसंद करेंगे ? पिंजरे में बंद पक्षी क्या सोचता होगा?

(ख) ऐसे थे अरमान कि उड़ते

नील- गगन की सीमा पाने,

पक्षियों को आसमान में उड़ते देखकर आपके मन में क्या-क्या विचार आते हैं। समूह में चर्चा कीजिए।

शब्दों के रूप

'कनक-कटोरी की मैदा से'

इस पंक्ति में 'कनक' शब्द का प्रयोग स्वर्ण/सोना के अर्थ में प्रयोग हुआ है, किंतु अन्य संदर्भों में कनक का अर्थ धतुरा एवं गेहूँ के रूप में भी होता है।

उपर्युक्त 'कनक' शब्द जैसे अनेकार्थी शब्द, पाठ से छाँटकर या शब्दकोश का उपयोग करके लिखिए–

शब्द -	अर्थ (1)	अर्थ (2)
1.	....	....
2.	....	....
3.	....	....
4.	....	....
5.	....	....

अर्थ की बात

(क) 'हम बहता जल पीनेवाले'

इस पंक्ति में 'पीनेवाले' के स्थान पर 'देनेवाले' शब्द रख कर पढ़िए। इस शब्द के बदलने से पंक्ति के अर्थ में क्या अंतर आ रहा है? अपने समूह में चर्चा कीजिए।

कविता में प्रत्येक शब्द का अपना विशेष महत्व होता है। यदि वे शब्द बदल दिए जाएँ तो कविता का अर्थ भी बदल सकता है और उसकी सुंदरता में भी अंतर आ सकता है।

नीचे कुछ पंक्तियाँ दी गई हैं। पंक्तियों के सामने लगभग समान अर्थों वाले कुछ शब्द दिए गए हैं, आप उनमें से वह शब्द चुनिए जो उस पंक्ति के लिए उपयुक्त रहेगा।

1. हम पंछी उन्मुक्त .... के (गगन, आसमान, अक्षर)
2. ऐसे थे .... कि उड़ते (अरमान, इच्छा, आकांक्षा)
3. ....उड़ान में विघ्न न डालो। (व्याकुल आकुल, बेचैन)

प्रतीक

(क) "स्वर्ण शृंखला के बंधन में"

स्वर्ण का अर्थ है – सोना

शृंखला का अर्थ है- जंजीर

आपने अनुभव किया होगा कि कविता में इन दोनों शब्दों का प्रयोग 'सोना' और 'जंजीर' के लिए किया गया है। अपने समूह में चर्चा करके पता लगाइए कि 'स्वर्ण' और 'शृंखला' का और क्या-क्या अर्थ हो सकता है।

(ख) कविता में से 'गति' और 'तरु' से संबंधित कुछ शब्द चुनकर नीचे दिए गए हैं। अपने समूह से मिलकर इन पर चर्चा कीजिए और इन्हें उपयुक्त स्थान पर लिखिए -

पक्षी	अनार	उड़ान	झूला	साँस
फुनगी	जल	निबौरी	टहनी	पंख

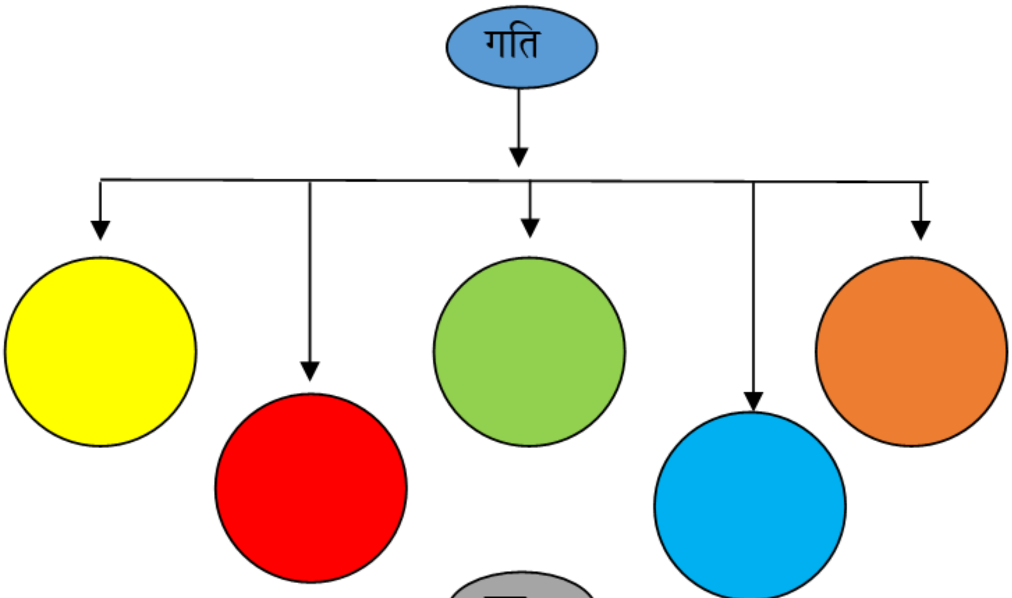

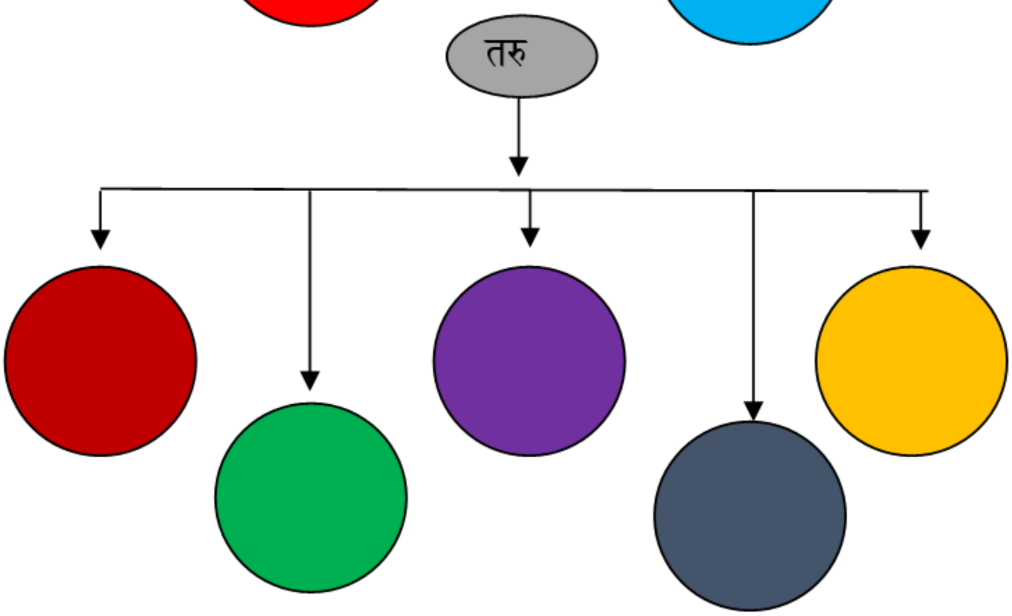

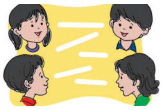

पंक्ति से पंक्ति

‘होती सीमाहीन क्षितिज से
इन पंखों की होड़ा-होड़ी’

कविता की इस पंक्ति को वाक्य के रूप में इस प्रकार लिख सकते हैं- अगर हम आज़ाद होते, तो हम सीमाहीन क्षितिज तक उड़ने की बराबरी करते।

अब नीचे दी गई पंक्तियों को इसी प्रकार वाक्यों के रूप में लिखिए -

1. कनक-तीलियों से टकराकर

   पुलकित पंख टूट जाएँगे।

2. हम बहता जल पीनेवाले

   मर जाएँगे भूखे-प्यासे।

3. या तो क्षितिज मिलन बन जाता

   या तनती साँसों की डोरी।

4. लेकिन पंख दिए हैं, तो

   आकुल उड़ान में विघ्न न डालो।

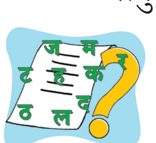

सा/सी/से का प्रयोग

ऐसे थे अरमान कि उड़ते

नील –गगन की सीमा पाने,

लाल **किरण-सी** चोंच खोल

चुगते तारक-अनार के दाने।

इन पंक्तियों में कुछ शब्दों के नीचे रेखा खिंची गई है। इनमें 'सी' शब्द पर ध्यान दीजिए। यहाँ 'सी' शब्द समानता दिखाने के लिए प्रयोग किया गया है। 'सा/सी/से' का प्रयोग जब समानता दिखाने के लिए किया जाता है तो इनसे पहले योजक चिह्न (-) का प्रयोग किया जाता है।

अब आप भी विभिन्न शब्दों के साथ 'सा/सी/से का प्रयोग करते हुए अपनी कल्पना से पाँच वाक्य अपनी लेखन पुस्तिका में लिखिए।

पाठ से आगे

आपकी बात

"ऐसे थे अरमान कि उड़ते
नील-गगन की सीमा पाने,"

(क) पिंजरे में बंद पक्षी की चाह थी कि वह आसमान में उड़ते और आसमान की सीमा नापते। पंछी को आसमान में उड़ते देखकर आपके मन में क्या-क्या विचार उठते हैं? पिंजरे बंद पक्षी के संबंध में आप क्या सोचते हैं? यदि पिंजरे में आप बंद होते तो आप क्या करते?

(ख) इस कविता में पिंजरे में बंद पक्षी की पीड़ा, परतंत्रता और बंधन के बारे में जानकारी दी गई है। पिंजरे में बंद पक्षी और स्वच्छंद पक्षी दोनों के जीवन शैली में क्या-क्या अंतर है, आप विचार कर लिखिए।

(ग) मनुष्य की वर्तमान जीवन शैली पक्षियों को किस प्रकार से प्रभावित कर रही हैं। चर्चा कर लिखिए।

स्वतंत्र और परतंत्र

"हम पंछी उन्मुक्त गगन के

पिंजरबद्ध न गा पाएँगे,

कनक-तीलियों से टकराकर

पुलकित पंख टूट जाएँगे।"

आप उन्मुक्त एवं पिंजरबद्ध के बारे में पहले ही पढ़ चुके हैं क्या आप जानते हैं कि उन्मुक्त का अर्थ क्या होता है? पिंजरबद्ध का अर्थ क्या होता है?

उन्मुक्त का मतलब होता है स्वच्छंद ।

पिंजरबद्ध का अर्थ होता है पिंजरे में बंद अर्थात् परतंत्र। एक स्वतंत्र आदमी जितना प्रसन्न व तनाव मुक्त होता है उतना पिंजरे में कैद या जेल में बंद व्यक्ति नहीं होता। चाहे वह पक्षी ही क्यों न हो ?

स्वतंत्रता ही प्राणी को प्यारी है वह किसी के कैद में रहना पसंद नहीं करता।

अब नीचे दिए गए चित्रों में कौन-कौन स्वतंत्र है और परतंत्र है ? अंकित कीजिए।

आज की पहेली

"हम पंछी उन्मुक्त गगन के

पिंजरबद्ध न गा पाएँगे"

'गगन' शब्द का अर्थ है – आकाश

नीचे एक अक्षर जाल दिया गया है। इसमें 'गगन' के लिए उपयोग किए जाने वाले अलग-अलग नाम या शब्द छिपे हैं। आपको उन्हें खोजकर उन पर घेरा बनाना है, जैसा एक हमने पहले से बना दिया है। देखते हैं, आप कितने सही नाम या शब्द खोज पाते हैं।

आ	स	मा	न	ब
अं	म	क	भ	श
ब	प	ओ	भ	ग
र	अ	नं	त	ग
आ	का	श	र	न

चित्र पहेली

दिए गए चित्रों की मदद से वर्ग पहेली पूरा कीजिए।—

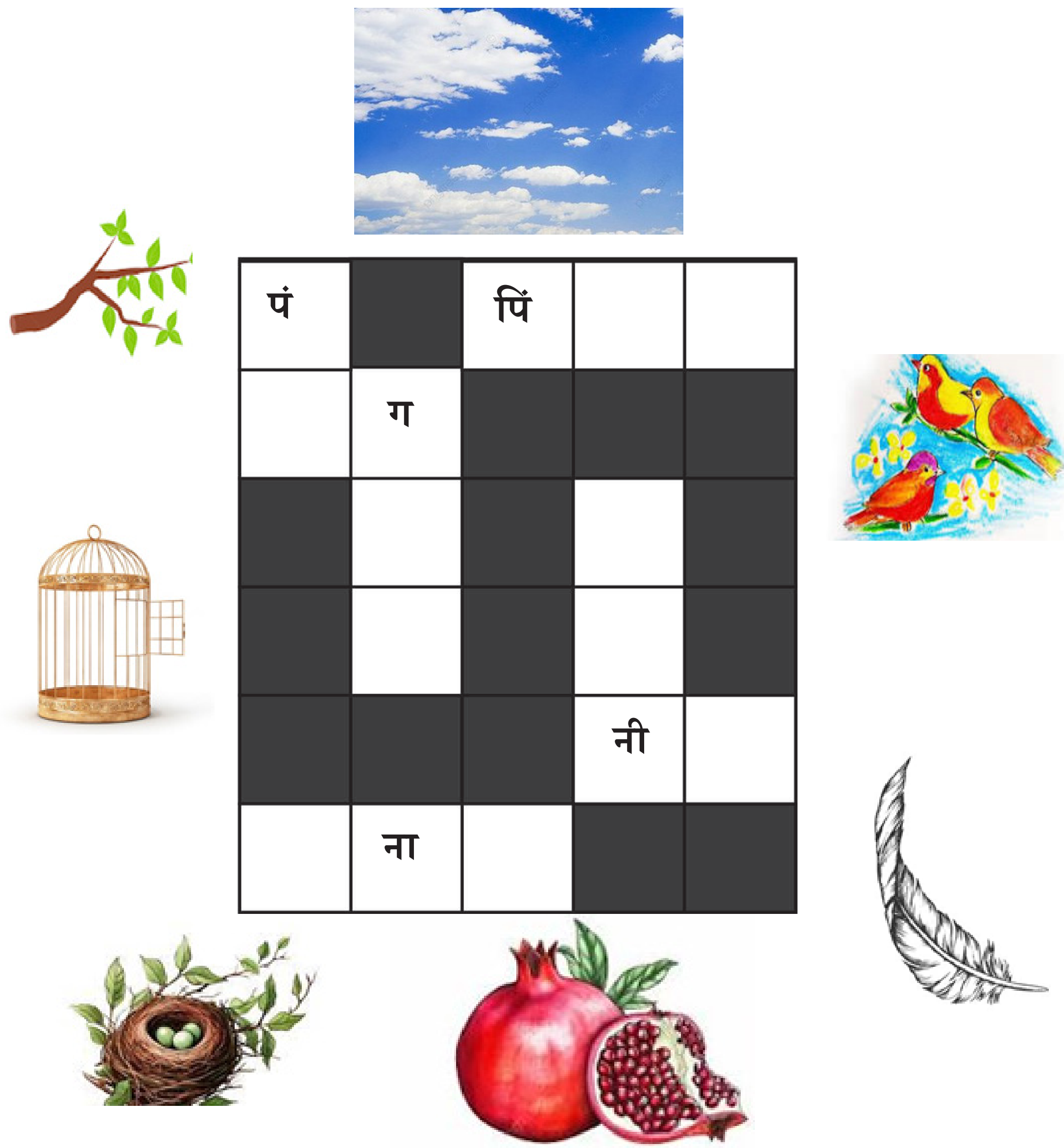

खोजबीन के लिए

पाठ में दिए गए कविता से संबंधित अन्य कविता, कहानी या आलेख अपने पुस्तकालय, पत्र- पत्रिकाओं एवं इंटरनेट से ढूँढ़कर पढ़ें, देखें व समझें।

8

सत्रिया और बिहू नृत्य

भारत एक विशाल देश है। इसकी रंग-बिरंगी, सुंदर, प्राचीन और जीवन से भरी संस्कृति पूरी दुनिया में अनोखी है। भारत के प्रत्येक स्थान का नृत्य, संगीत, कला, खान-पान, भाषा, पहनावा, रहन-सहन के तरीके, सब कुछ इतना मोहक है कि पूरी दुनिया से लोग भारत की ओर खिंचे चले आते हैं। इस पाठ में भी एक परिवार एक दूसरे देश से भारत में आया है। आइए, पढ़ते हैं कि वे कौन हैं, भारत में कहाँ आए हैं, और क्यों आए हैं?

एंजेला लंदन के जाने-माने इलाके केंजिंग्टन में रहती थी। उसका स्कूल घर से दूर नहीं था। उसका कोई सगा भाई-बहन भी नहीं था। उसे जेम्स और कीरा नाम के दोस्तों के साथ समय बिताना पसंद था। वे सब आपस में मिलकर कई काल्पनिक खेल खेला करते थे। उन्हें ऐसी कहानियों का पात्र बनने में मज़ा आता था, जिनमें दूर-दराज़ की दुनिया का जिक्र हो। एंजेला को हर उस कहानी से प्यार था, जिसमें उसे ताजमहल, एफिल टॉवर या कोलोजियम की यात्रा पर जाना हो। उसे बिल्कुल अंदाज़ा नहीं था कि जल्दी ही यात्राओं की उसकी ये कहानियाँ सच साबित होने वाली हैं।

एंजेला की माँ एलेसेंड्रा एक डॉक्यूमेंट्री फ़िल्म निर्माता थीं। उन्हें लंदन की ब्रिटिश अकादमी से असम की नृत्य परंपरा पर एक डॉक्यूमेंट्री बनाने के लिए वित्तीय मदद दी गई थी। पेचीदा बात यह थी कि उनके पास इस काम को पूरा करने के लिए सिर्फ़ एक महीने का वक्त था। उन्होंने एंजेला के स्कूल से उसकी

बसंत की छुट्टियों को एक हफ़्ते और बढ़ाने की अनुमति ले ली, जिससे एंजेला और उसके पिता ब्रायन भी उनके साथ जा सकें। एंजेला बहुत जल्दबाजी में बनाई गई इस यात्रा की योजना से हैरान थी, पर उसकी माँ समय से यह काम पूरा कर सकें, इसलिए वे सभी जल्दी ही तैयार हो गए।

जब तक एंजेला कुछ समझ पाती, तब तक वह लंदन से नई दिल्ली होते हुए गुवाहाटी की उड़ान पर थी। यात्रा के दौरान माँ ने एंजेला को असम की खूबसूरती के बारे में कुछ बातें बताई। असम, भारत के उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में है, जिसे अपने वन्य-जीवन, रेशम और चाय के बागानों के लिए जाना जाता है। इसके साथ असम में नृत्य की भी एक समृद्ध परंपरा है। एलेसेंड्रा की डॉक्यूमेंट्री के केंद्र में असम के जनजीवन में नृत्य के महत्व को तलाशना था। वे जब यहाँ आ रहे थे तब अप्रैल का महीना चल रहा था। असम में यह नए साल का वक्त होता है। बसंत के आने की खुशी में वे सभी एक त्योहार मनाते हैं, जिसे 'बिहू' कहा जाता है। एंजेला उसी रात इसे देखने जाने वाली थी।

गुवाहाटी के एक होटल में सामान्य होने के बाद वे उसी शाम पास के एक गाँव मलंग में गए। गाँव पहुँचने पर माँ ने एंजेला को बताया कि बिहू एक कृषि आधारित त्योहार है। भारत में जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा किसानों का है। असम में बिहू साल में तीन बार मनाया जाता है। सबसे पहले जब किसान बीज बोते हैं, फिर जब वे धान रोपते हैं और फिर तब, जब खेतों में अनाज तैयार हो जाता है।

एंजेला कार से उतरी, वहाँ आस-पास उत्सव जैसा माहौल देखकर वह हतप्रभ थी। वहाँ एक बड़े से बरगद के पेड़ के नीचे मंच बनाया गया था। वह जगह लोगों से भरी हुई थी। एंजेला ने एक पेड़ के नीचे एक साथ इतने लोगों को पहले कभी नहीं देखा था। वहाँ खुले आसमान के नीचे लोगों के बीच बैठकर उसे ऐसा लग रहा था, जैसे वह आश्चर्यजनक रूप से किसी टाइम-मशीन में आकर बैठ गई हो! या क्या वह उस वक्त किसी सपनों की दुनिया में थी? वह मंत्रमुग्ध होकर वहाँ लड़के-लड़कियों को बसंत ऋतु के आगमन पर नृत्य करते देख रही थी। एंजेला ने इस बात पर ध्यान दिया कि लड़कों ने वाद्ययंत्र ले रखे हैं और लड़कियों ने लाल और बादामी रंग की गहरी डिजाइन वाली खूबसूरत पोशाक पहन रखी है। वे सभी काफ़ी रंगीन और मस्त लग रहे थे। उनका हिलता-डुलता शरीर, हाथ-पैर की हलचल से समझ आ रहा था कि वे मौज-मस्ती के नृत्य में खोए हुए हैं। उसकी इच्छा हुई कि वह भी अपने घर पर बसंत के आगमन पर ऐसे ही नृत्य करेगी।

बिहू नृत्य और इसके उत्सव से अचंभित एंजेला और उसके परिवार ने इसके साथ-साथ लजीज पकवानों का पूरा आनंद लिया। जब वे वापस लौटे, तब माँ ने एंजेला से पूछा कि 'उसे बिहू कैसा लगा?' एंजेला के मन में कई तरह के विचार चल रहे थे। उसे अच्छा लगा कि इस उत्सव और नृत्य दोनों को 'बिहू' कहा जाता है। उसने माँ से पूछा कि क्या संगीत और नृत्य सिर्फ़ त्योहारों पर ही होते हैं। माँ ने बताया, "पूरी दुनिया की संस्कृतियों में लोग नृत्य और संगीत से अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हैं। खासतौर से भारत में बहुतायत ऐसा होता है। असम का बिहू नृत्य ग्रामीण जनजीवन के साथ-साथ फसल लगाने से लेकर बसंत के आगमन तक से जुड़ा हुआ है।"

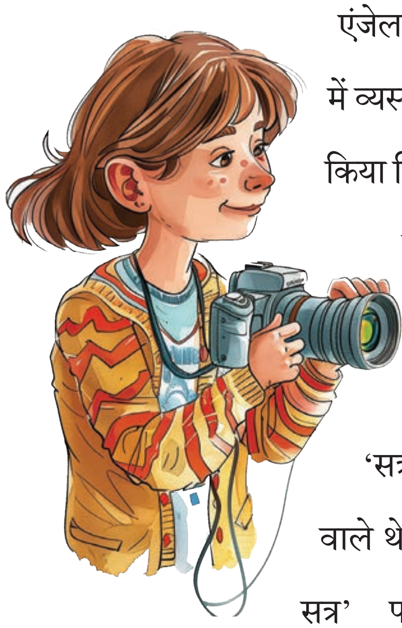

एंजेला की माँ अगले कुछ दिन डॉक्यूमेंट्री के तथ्य जुटाने और साक्षात्कार लेने में व्यस्त रहीं, एंजेला ने काफ़ी सारी बातों पर दूर से ही गौर किया। उसने महसूस किया कि लंदन के जीवन से यहाँ सब कुछ कितना अलग था! उसे अपनी माँ पर गर्व हुआ। वे एक वैज्ञानिक-कहानीकार की तरह हैं, जो अपनी फ़िल्मों के द्वारा बहुत-सी चीज़ें एक साथ दिखाते हैं।

अगले दिन वे उत्तरी असम की तरफ़ रवाना हुए, जहाँ सभी 'सत्रों', अर्थात मठों की पीठ है। वे सभी एक सत्र के पास रहने के लिए जाने वाले थे और सत्रिया नृत्य का फ़िल्मांकन करने वाले थे। जब वे 'दक्षिणापथ सत्र' पहुँचे, तब वहाँ उनकी मुलाकात रीना सेन से हुई, जो असम की एक जानी-मानी लेखिका हैं। उस हफ़्ते उन लोगों को रीना सेन के घर पर ही रुकना था। रीना आंटी की एक बिटिया थी— अनु। अनु और एंजेला ने तुरंत एक-दूसरे की तरफ़ देखा। उन दोनों की ही उम्र

दक्षिणापथ सत्र का सेंक्टोरियम, माजुली में

दस साल थी, दोनों ने अंग्रेज़ी में बातचीत शुरू की। अनु ने एंजेला को कुछ असमिया शब्द भी सिखाए। एंजेला को अनु के खिलौने बहुत अच्छे लगे, जो थोड़े अलग तरह के थे। गुड़िया, लकड़ी के खिलौने और नारियल की जटा से बने घर। कितने अनोखे खिलौने! उसने लंदन में ऐसे खिलौने कभी नहीं देखे थे। अनु का पसंदीदा खिलौना लकड़ी का बना तीर-कमान था, जिसे लेकर उसे राम बनना बहुत अच्छा लग रहा था। एंजेला उसकी विरोधी बनी थी, शक्तिशाली रावण। वे एक साथ खेल रहे थे, उस कूद-फाँद और लड़ाई का कोई अंत नहीं था।

एंजेला और अनु ने देखा कि एलेसेंड्रा ने वैष्णव मठ के सभागार में नृत्य कर रहे युवा साधुओं का फ़िल्मांकन किया। एंजेला आश्चर्य से सोच रही थी कि क्या सत्रिया नृत्य सिर्फ़ लड़कों और पुरुषों के लिए है? एंजेला और अनु सोच रहे थे कि काश वे भी इन युवा साधुओं की तरह गा सकते, नृत्य कर सकते और छद्म युद्ध लड़ सकते!

माँ ने एंजेला को बताया कि बीसवीं शताब्दी के मध्य में कुछ साधु मठों से बाहर आकर पुरुषों और महिलाओं को सत्रिया नृत्य सिखाने लगे। शुरू में ऐसे साधुओं को मठों से निकाल दिया गया, लेकिन आधुनिक दौर में महिला सत्रिया कलाकारों के लिए मंच पर नृत्य करना आम बात हो गई है। उस रात माँ महिला सत्रिया नृत्यांगनाओं का फ़िल्मांकन करने वाली थीं।

एंजेला बहुत उत्साहित थी, उसने रीना आंटी से आग्रह किया कि वे अनु को भी सत्रिया नृत्य में 'महिला-नृत्य' को देखने के लिए साथ आने दें। आंटी ने स्वीकृति दे दी, उस रात अनु और एंजेला सत्रिया नृत्य देखने गए, जिसमें भगवान विष्णु के दो द्वारपालों जय-विजय की कहानी थी। परदा उठा और एंजेला ने देखा कि सफ़ेद पगड़ीनुमा टोपी में दो महिलाएँ नृत्य और नाटक की शैली में कमाल का अभिनय कर रही हैं। जैसे-जैसे कहानी आगे बढ़ी उन दोनों ने देखा कि किस तरह जय और विजय ने कई बड़े ऋषियों को भगवान विष्णु से मिलने नहीं दिया, क्योंकि उस वक्त भगवान विष्णु सो रहे थे। वे ऋषि नाराज़ हो गए। उन्होंने जय-विजय को असुर बनने का श्राप दे दिया। भगवान विष्णु की नींद जब टूटी, तब उन्हें अपने द्वारपालों को बचाने के लिए आना पड़ा। उन्होंने वचन दिया किया कि वे जय और विजय को मारकर उन्हें श्राप से बचा लेंगे। बाद में जय और विजय दोबारा भगवान विष्णु के द्वारपाल बने।

एंजेला को यह कहानी नाटकीय और दिलचस्प लगी। सत्रिया महिला नृत्यांगनाओं ने जिस प्रकार की शक्ति, बल और आकर्षण प्रदर्शित किया, वह अद्भुत था! एंजेला को लगा कि उन महिला कलाकारों की प्रस्तुति सत्रिया नृत्य करने वाले पुरुष कलाकारों से भी बेहतर थी।

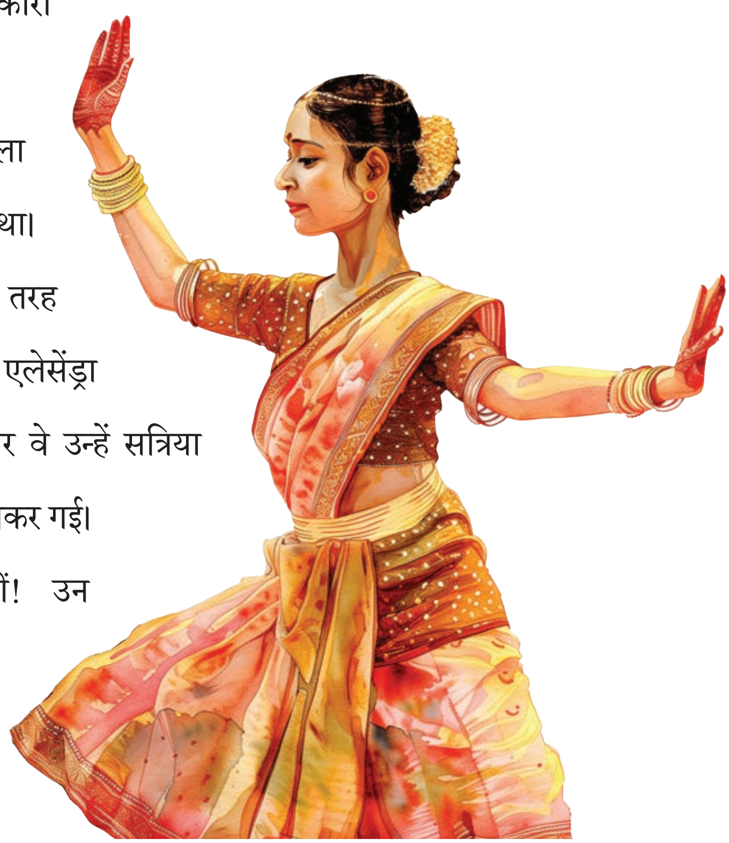

इसके बाद के दिनों में अनु और एंजेला के ख्यालों में बस सत्रिया नृत्य ही घूम रहा था। उन दोनों ने स्वर्ग के द्वारपाल जय-विजय की तरह हथियार और तलवार चलाते हुए नृत्य किया। एलेसेंड्रा बच्चों की इस उत्सुकता को समझ गई और वे उन्हें सत्रिया कलाकारों के होने वाले साक्षात्कार में साथ लेकर गई।

एंजेला और अनु बहुत खुश थीं! उन नृत्यांगनाओं के नाम प्रिया और रीता थे। वे लड़कियों को सत्रिया और बिहू की कुछ खूबसूरत मुद्राएँ और बारीकियाँ सिखा

रही थीं। एंजेला अत्यधिक प्रसन्न थी। वापस लौटने के बाद भी वह चलने, खाना खाने और यहाँ तक कि खेलने के दौरान भी नृत्य करती रही। वापस लंदन जाने के बाद वह उन सभी रिकॉर्डिंग्स को देखती रही, जो उसकी माँ ने रिकॉर्ड की थी। पूरे उत्साह के साथ वह असम की समृद्ध नृत्य परंपरा को याद करती रही। रंग-बिरंगा सत्रिया और आनंदित करने वाला बिहू।

माँ उसकी गहरी रुचि को समझ गई और उन्होंने पापा के साथ मिलकर एंजेला के लिए असमी नृत्य पर एक शानदार योजना तैयार की। एंजेला ने लंदन में अपनी कक्षा में, स्वयं किए गए नृत्य की वीडियो रिकॉर्डिंग के साथ उसका प्रदर्शन किया। उसके सहपाठियों और शिक्षकों को यह बहुत पसंद आया। एंजेला इस बात से बहुत रोमांचित थी कि वह असम के खूबसूरत नृत्यों की झलक उन सभी को दिखा पाई। उसे बहुत अच्छा लग रहा था। माँ को भी हर बार ऐसे ही अच्छा लगता होगा, जब वे कोई फ़िल्म बनाती होंगी। अब एंजेला के पास अपने लिए, असम के नृत्यों—बिहू और सत्रिया के साथ अपना खुद का मनोरंजन था।

लेखिका— *जया मेहता*

अनुवादक— *शिवेंद्र कुमार सिंह*

लेखिका से परिचय

जया मेहता एक नृत्यांगना हैं, लेखिका हैं, शिक्षिका हैं और आप जैसे बच्चों की मित्र भी हैं। इसलिए तो वे इतनी सरलता से आपके लिए भारतीय नृत्यों की सुंदरता और बारीकियों को शब्दों में पिरो लेती हैं। इनका जन्म 1977 में हुआ। यह पाठ उनकी भारतीय नृत्यों से जुड़ी एक पुस्तक 'नृत्य कथा' से लिया गया है जिसका हिंदी अनुवाद शिवेंद्र कुमार सिंह ने और चित्रांकन सुरुबा नतालिया ने किया है। जया मेहता स्वयं भी ओडिसी नृत्य में पारंगत हैं और कई वर्षों से देश-विदेश में नृत्य प्रस्तुतियाँ दे रही हैं।

पाठ से

आइए, अब हम इस पाठ को थोड़ा और निकटता से समझ लेते हैं। आगे दी गई गतिविधियाँ इस कार्य में आपकी सहायता करेंगी।

मेरी समझ से

(क) नीचे दिए गए प्रश्नों का सटीक उत्तर कौन-सा है? उसके सामने तारा (☆) बनाइए—

(1) माँ एलेसेंड्रा के बारे में कौन-सा कथन सत्य है?

- वे असम के जीवन के बारे में बहुत-कुछ जानती थीं।
- उन्हें असम, बिहू और सत्रिया नृत्य से बहुत प्रेम था।
- उन्होंने एंजेला को कुछ असमिया शब्द भी सिखाए।
- वे अपने कार्य में सहायता के लिए बेटी को लाई थीं।

(2) "अनु और एंजेला ने तुरंत एक-दूसरे की तरफ़ देखा।" क्यों?

- अनु के पास खिलौने थे।
- दोनों की आयु एक समान थी।
- दोनों को अंग्रेज़ी भाषा आती थी।
- एंजेला अनु से असमिया भाषा सीखना चाहती थी।

(ख) अब अपने मित्रों के साथ चर्चा कीजिए और कारण बताइए कि आपने ये उत्तर ही क्यों चुने?

मिलकर करें मिलान

पाठ में से कुछ शब्द चुनकर स्तंभ 1 में दिए गए हैं। उनसे संबंधित वाक्य स्तंभ 2 में दिए गए हैं। अपने समूह में इन पर चर्चा कीजिए और रेखा खींचकर शब्दों का मिलान उपयुक्त वाक्यांशों से कीजिए। इसके लिए आप शब्दकोश, इंटरनेट या अपने शिक्षकों की सहायता ले सकते हैं।

स्तंभ 1	स्तंभ 2
1. सत्र	1. ग्रेगरी कैलेंडर के अनुसार 1 जनवरी 1901 से 31 दिसंबर 2000 तक का समय।
2. बोहाग बिहू	2. 'यूनाइटेड किंगडम' और 'इंग्लैंड' की राजधानी।
3. लंदन	3. 'यूनाइटेड किंगडम' देश की एक सरकारी संस्था।
4. गुवाहाटी	4. असम में मनाया जाने वाला एक त्योहार। यह असम में नए साल की शुरुआत और बसंत के आगमन का प्रतीक है।
5. ब्रिटिश अकादमी	5. भारत के असम राज्य का एक प्राचीन और सबसे बड़ा नगर है।
6. बीसवीं शताब्दी	6. ये असम के मठ हैं। इनकी संख्या पाँच सौ से भी ज्यादा है। ये पूजा-पाठ और धार्मिक गतिविधियों के स्थान हैं। सत्रिया नृत्य की उत्पत्ति इन्हीं सत्रों में हुई है।

पंक्तियों पर चर्चा

पाठ में से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। इन्हें ध्यान से पढ़िए और इन पर विचार कीजिए। आपको इनका क्या अर्थ समझ में आया? अपने विचार अपनी कक्षा में साझा कीजिए और लिखिए।

(क) "असम, भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र में है, जिसे अपने वन्य-जीवन, रेशम और चाय के बागानों के लिए जाना जाता है। इसके साथ असम में नृत्य की भी एक समृद्ध परंपरा है।"

(ख) "पूरी दुनिया की संस्कृतियों में लोग नृत्य और संगीत से अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हैं।"

सोच-विचार के लिए

निबंध को एक बार फिर से पढ़िए और निम्नलिखित के बारे में पता लगाकर अपनी लेखन पुस्तिका में लिखिए—

(क) "एंजेला के मन में कई तरह के विचार चल रहे थे।"

उसके मन में कौन-कौन से विचार चल रहे होंगे?

(ख) "बिहू एक कृषि आधारित त्योहार है।" कैसे?

(ग) ऐसा लगता है कि भारत से जाने के बाद भी एंजेला के मन में असम ही छाया हुआ था।

पाठ से इस कथन के समर्थन के लिए कुछ उदाहरण खोजकर लिखिए।

(घ) समय के बदलने के साथ-साथ सत्रिया नृत्य की परंपरा में क्या बदलाव आया है?

निबंध की रचना

> "गुवाहाटी के एक होटल में सामान्य होने के बाद वे उसी शाम पास के एक गाँव मलंग में गए। गाँव पहुँचने पर माँ ने एंजेला को बताया कि बिहू एक कृषि आधारित त्योहार है। असम में बिहू साल में तीन बार मनाया जाता है।"

इन वाक्यों में बिहू और असम का ऐसा रोचक और सरस वर्णन किया गया है कि लगता है मानो हम कोई कहानी पढ़ रहे हैं।

इस निबंध में वस्तु, घटना, प्रदेश आदि का वर्णन किया गया है। इसमें जो कुछ भी स्वयं देखा गया है, उसका वर्णन किया गया है। इस प्रकार के निबंधों में घटनाओं का एक क्रम होता है। इनमें आम जीवन की बातें होती हैं। इनकी भाषा सरल होती है। उदाहरण के लिए होली, दीपावली आदि के बारे में बताना।

इस पाठ को एक बार फिर से पढ़िए और इसकी बनावट पर ध्यान दीजिए। इस पाठ की विशेषताएँ पहचानिए और अपनी कक्षा में साझा कीजिए और लिखिए, जैसे इस पाठ में लंदन से यात्रा शुरू करने से लेकर वापस लंदन पहुँचने तक के अनुभवों का वर्णन किया गया है।

अनुमान या कल्पना से

अपनी कक्षा में चर्चा कीजिए—

(क) "बिहू नृत्य और इसके उत्सव से अचंभित एंजेला और उसके परिवार ने इसके साथ-साथ लजीज पकवानों का पूरा आनंद लिया।"

एंजेला और उसका परिवार बिहू नृत्य और उसके उत्सव को देखकर अचंभित क्यों हो गया?

(ख) "जब तक एंजेला कुछ समझ पाती, तब तक वह लंदन से नई दिल्ली होते हुए गुवाहाटी की उड़ान पर थी।"

एंजेला और उसकी माँ एलेसेंड्रा ने भारत की यात्रा से पहले कौन-कौन सी तैयारियाँ की होंगी?

(ग) "वहाँ एक बड़े से बरगद के पेड़ के नीचे मंच बनाया गया था।"

बिहू नृत्य के लिए बरगद के पेड़ के नीचे मंच क्यों बनाया गया होगा?

शब्दों की बात

नीचे शब्दों से जुड़ी कुछ गतिविधियाँ दी गई हैं। इन्हें करने के लिए आप शब्दकोश, अपने शिक्षकों और मित्रों की सहायता भी ले सकते हैं।

असम से जुड़े शब्द

इस पाठ में अनेक शब्द ऐसे हैं जो असम से विशेष रूप से जुड़े हैं। अपने समूह में मिलकर उन शब्दों की पहचान कीजिए। इसके बाद उन्हें नीचे दिए गए स्थान पर लिखिए—

(संकेत— असम के नृत्य, त्योहार, भाषा आदि।)

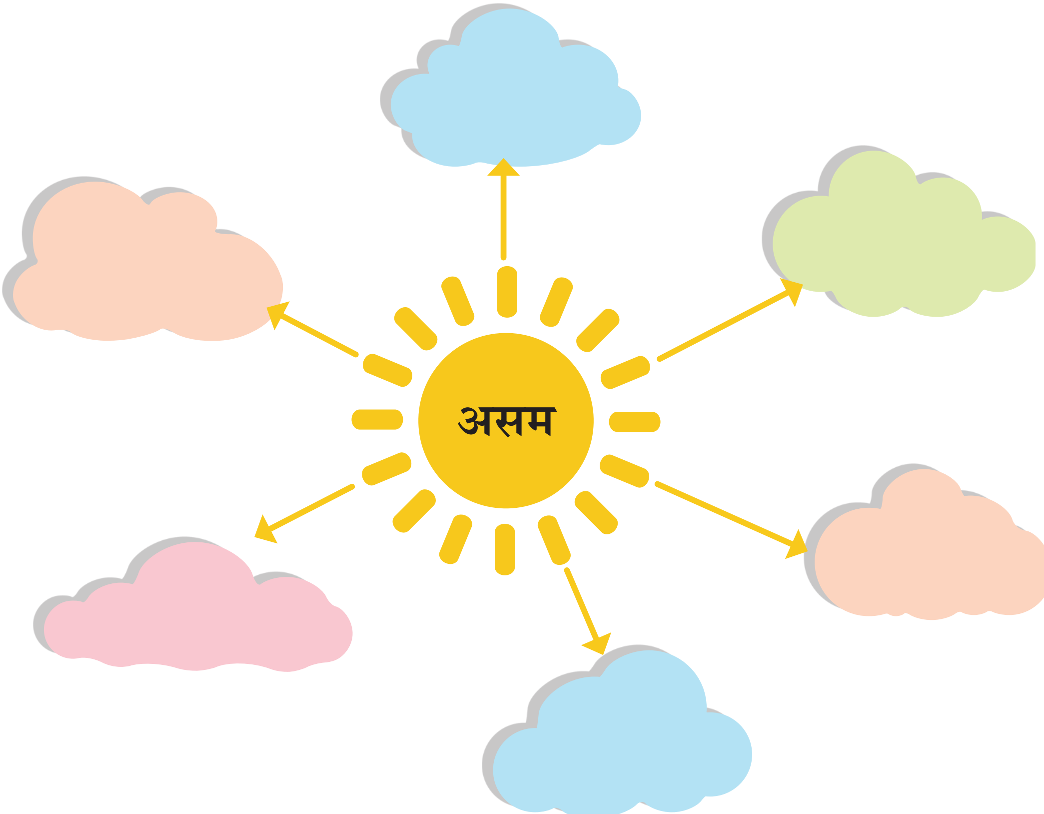

तीन बिहू

"असम में बिहू साल में तीन बार मनाया जाता है।"

रोंगाली या बोहाग (बैसाख, सामान्यतया अप्रैल में)	भोगाली या माघ (माघ, सामान्यतया जनवरी में)	कोंगाली या काटी (कार्तिक, सामान्यतया अक्तूबर में)

(क) एंजेला और उसकी माँ एलेसेंड्रा कौन-से बिहू के अवसर पर भारत आए थे? लिखिए।

(ख) तीनों बिहू के लिए लिखिए कि उस समय किसान खेतों में क्या कर रहे होते हैं?

पाठ से आगे

आपकी बात

अपने समूह में चर्चा कीजिए—

(क) "रीना आंटी की एक <u>बिटिया</u> थी— अनु"

'बिटिया' का अर्थ है 'बेटी'। बेटी को प्यार से बुलाने के लिए और स्नेह जताने के लिए 'बिटिया' शब्द का प्रयोग भी किया जाता है। 'बिटिया' जैसा ही एक अन्य शब्द 'बिट्टो' भी है।

आपके घर में आपको प्यार से किन-किन नामों से पुकारा जाता है?

(ख) आपके नाम का क्या अर्थ है? आपका नाम किसने रखा? पता करके बताइए।

(ग) "वे एक साथ खेल रहे थे"

आप कौन-कौन से खेल अपने मित्रों के साथ मिलकर खेलते हैं? बताइए।

(घ) "असम में नृत्य की भी एक समृद्ध परंपरा है।"

आपने इस पाठ में बिहू और सत्रिया नृत्यों के बारे में तो पढ़ा है। आपके प्रांत में कौन-कौन से नृत्य प्रसिद्ध हैं? आपको कौन-सा नृत्य करना पसंद हैं?

पूर्वोत्तर की यात्रा

असम भारत के पूर्वोत्तर भाग में स्थित है। असम के अतिरिक्त पूर्वोत्तर भारत में सात अन्य राज्य भी हैं। आपको अवसर मिले तो इनमें से किसी राज्य की यात्रा कीजिए। आठ राज्यों के नाम हैं— अरुणाचल प्रदेश, सिक्किम, मिजोरम, मेघालय, त्रिपुरा, नागालैंड, मणिपुर और असम।

मानचित्र के लिए देखें: https://surveyofindia.gov.in/pages/political-map-of-india

टाइम मशीन

"उसे ऐसा लग रहा था, जैसे वह आश्चर्यजनक रूप से किसी टाइम-मशीन में आकर बैठ गई हो!"

क्या आपने पहले कभी 'टाइम-मशीन' का नाम सुना है? टाइम-मशीन ऐसी काल्पनिक मशीन है, जिसमें बैठकर बीते हुए या आने वाले समय की दुनिया में पहुँचा जा सकता है। 'टाइम-मशीन' को अभी तक बनाया नहीं जा सका है। लेकिन अनेक लेखकों ने 'टाइम-मशीन' के बारे में कहानियाँ लिखी हैं, अनेक फ़िल्मकारों ने इसके बारे में फ़िल्में बनाई हैं।

(क) यदि आपको टाइम-मशीन मिल जाए तो आप उसमें बैठकर कौन-से समय में और कौन-से स्थान पर जाना चाहेंगे? क्यों?

(ख) आपको यदि कोई ऐसी वस्तु बनाने का अवसर मिले जो अभी तक नहीं बनाई गई है तो आप क्या बनाएँगे? क्यों बनाएँगे?

(ग) क्या आपने कभी किसी संग्रहालय की यात्रा की है? संग्रहालय ऐसा स्थान होता है जहाँ विभिन्न कालों की प्राचीन वस्तुएँ देखने को मिलती हैं। कभी-कभी संग्रहालय की यात्रा भी 'टाइम-मशीन' की यात्रा जैसी लगती है।

अवसर मिले तो आप भी किसी संग्रहालय की यात्रा अवश्य कीजिए और उसके बारे में कक्षा में बताइए।

खिलौने विभिन्न प्रकार के

"एंजेला को अनु के खिलौने बहुत अच्छे लगे, जो थोड़े अलग तरह के थे।"

(क) अनु के खिलौने कैसे थे? लंदन में एंजेला के खिलौने कैसे रहे होंगे?

(ख) आप घर पर कौन-कौन से खिलौनों से खेलते रहे हैं? उनके नाम बताइए।

(ग) भारत के प्रत्येक प्रांत में हाथ से बच्चों के अनोखे खिलौने बनाए जाते हैं। आपके यहाँ बच्चों के लिए हाथ से बने कौन-कौन से खिलौने मिलते हैं?

(घ) भारत के बच्चे स्वयं भी अपने लिए अनोखे खिलौने बना लेते हैं। आप भी तो कागज़, मिट्टी आदि से कोई न कोई खिलौना बनाना जानते होंगे? आप अपने हाथों से बनाए किसी खिलौने को कक्षा में लाकर दिखाइए और उसे बनाने का तरीका सबको सिखाइए।

पत्र

(क) मान लीजिए आप एंजेला हैं। आप लंदन लौट चुकी हैं और आपको भारत की बहुत याद आ रही है। अपनी सखी अनु को पत्र लिखकर बताइए कि आपको कैसा अनुभव हो रहा है।

(ख) आप जानते होंगे कि पत्र लिखने के लिए आवश्यक सामग्री, जैसे— पोस्टकार्ड, अंतर्देशीय लिफाफे आदि डाकघर से खरीदे जा सकते हैं। संभव हो तो आप भी अपने घर के पास के डाकघर में जाइए और एक पोस्टकार्ड खरीदकर पत्र लिखने के लिए उसका उपयोग कीजिए।

(ग) क्या आपने कभी डाक-टिकट देखा है? संसार के सभी देश डाक-टिकट जारी करते हैं। भारत का डाक-विभाग भी समय-समय पर डाक-टिकट जारी करता है। डाक-टिकट किसी देश की संस्कृति के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी भी उपलब्ध कराते हैं। इसलिए अनेक लोग देश-विदेश के डाक-टिकटों को एकत्रित करना पसंद करते हैं।

नीचे भारत के विभिन्न लेखकों के सम्मान में जारी किए गए कुछ डाक-टिकटों के चित्र दिए गए हैं। इन्हें ध्यान से देखिए—

(क) आपको इनमें से कौन-सा डाक-टिकट सबसे अच्छा लगा और क्यों?

(ख) डाक-टिकटों पर लेखकों के बारे में कौन-कौन सी जानकारी दी गई है?

आज की पहेली

आज हम आपके लिए लाए हैं कुछ असमिया पहेलियाँ। हो सकता है इनमें से कुछ पहेलियों को पढ़कर आपको लगे, अरे! ये पहेली तो मेरे घर पर भी बूझी जाती है! तो कुछ पहेलियाँ आप पहली बार बूझेंगे। तो आइए, आनंद लेते हैं इन रंग-बिरंगी पहेलियों का—

क्रम संख्या	असमिया पहेली	हिंदी पहेली	संकेत
1.	हातीर दाँत, कदमर पात	हाथी के दाँत-सी, कदंब के पात-सी।	
2.	पानी आसे मास नाइ, हाबि आसे बाघ नाइ	पानी है पर मछली नहीं, जंगल है पर बाघ नहीं	
3.	आई बुलिले नेलागे, बोपाइ बुलिले लागे	लग-लग कहे तो ना लगे, बेलग कहे लग जाए	
4.	सय चरण कृष्ण वरण, पेट काटिलेउ नाई मरण	काला तन और छह हैं चरण, पेट कटे पर भी न मरण	

झरोखे से

"असम, भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र में है, जिसे अपने वन्य-जीवन, रेशम और चाय के बागानों के लिए जाना जाता है।"

आपने पढ़ा है कि असम का रेशम (जिसे मूँगा सिल्क भी कहा जाता है) बहुत प्रसिद्ध है। क्या आप जानना चाहते हैं, यह क्या है, कैसे बनता है और क्यों प्रसिद्ध है? हाँ? तो पढ़िए आगे—

असम का सुप्रसिद्ध मूँगा सिल्क

कुछ वर्ष पूर्व मेरी नियुक्ति गुवाहाटी हवाई अड्डे पर हुई थी। वहाँ पर प्रायः मैं महिलाओं को एक विशेष प्रकार की आकर्षक साड़ी पहने देखता था। यह साड़ी सदैव भूरे-सुनहरे रंग की झिलमिली-सी होती थी। उस पर अधिकतर पारंपरिक ढंग से लाल या काली बार्डर तथा हरे, लाल अथवा पीले रंग से बूटों आदि की कढ़ाई रहती थी। कुछ समय पश्चात जब मैं असम के एक विवाह समारोह में गया, तो वहाँ भी अधिकतर महिलाएँ उसी प्रकार की अन्य चमकीली-भूरी-सुनहरी साड़ियाँ पहन कर आई थीं। अनेक पुरुषों ने भी उसी प्रकार के भूरे-सुनहरे रंग के कुर्ते पहने हुए थे। बस केवल रंगों में हल्के या गहरे का अंतर था। मैंने अपने एक असमी मित्र से पूछा कि यह कैसा भूरा-चमकीला कपड़ा है।

मित्र ने बताया कि यह भूरा नहीं बल्कि सुनहरा है। यह असम का सुप्रसिद्ध मूँगा सिल्क है जो सभी प्रकार के रेशमों में सबसे महँगा होता है। मूँगा का असमिया भाषा में अर्थ है पीला या गहरा भूरा। और इसकी सबसे बड़ी विशेषता है कि सम्पूर्ण विश्व में यह केवल असम तथा देश के पूर्वोत्तर राज्यों में ही तैयार होता है। यह असम को प्रकृति द्वारा दिया गया अनमोल और अद्वितीय उपहार है।

मित्र ने यह भी बताया कि मूँगा सिल्क की साड़ियों की एक खूबी यह है कि अन्य रेशमी कपड़ों के विपरीत इनको 'ड्राई क्लीन' कराने की आवश्यकता नहीं होती है, बल्कि उन्हें घर पर ही धोया जा सकता है। हर धुलाई के बाद इनका निखार बढ़ता ही जाता है। एक साड़ी औसतन 50 वर्ष तक खराब नहीं होती है। ऐसा माना जाता है कि मूँगा रेशम सभी प्रकार के प्राकृतिक रूप से तैयार किए जाने वाले कपड़ों में सबसे मज़बूत होता है। इसके अलावा इसे गर्मी या सर्दी किसी भी मौसम में पहना जा सकता है। असम के लोगों का मानना है कि मूँगा सिल्क के कपड़ों में अनेक औषधीय गुण भी होते हैं।

बिमल श्रीवास्तव, स्रोत पत्रिका, अप्रैल 2008

साझी समझ

आपको इस लेख में दी गई कौन-सी जानकारी सबसे अच्छी लगी? क्यों? अपने समूह में बताइए।

खोजबीन के लिए

असम सहित पूर्वोत्तर भारत के बारे में आप और जान सकते हैं और भारत के पारंपरिक लोक संगीत का आनंद भी ले सकते है, जिन्हें इंटरनेट कड़ियों तथा क्यू.आर. कोड की सहायता से पढ़ें, देखें व समझें—

- असम-बिहू लोकगीत
- सत्रिया नृत्य
- मणिपुरी नृत्य
- भारत के लोक नृत्य
- पूर्वोत्तर राज्यों के लोक नृत्य
- भाषा संगम असमिया
- मुकोली बिहू

9

मैया मैं नहिं माखन खायो

मैया मैं नहिं माखन खायो।
भोर भयो गैयन के पाछे, मधुबन मोहि पठायो।
चार पहर बंसीवट भटक्यो, साँझ परे घर आयो।।
मैं बालक बहियन को छोटो, छीको केहि बिधि पायो।
ग्वाल-बाल सब बैर परे हैं, बरबस मुख लपटायो।।
तू माता मन की अति भोरी, इनके कहे पतियायो।
जिय तेरे कछु भेद उपजि हैं, जानि परायो जायो।।
ये ले अपनी लकुटि कमरिया, बहुतहिं नाच नचायो।
सूरदास तब बिहँसि जसोदा, लै उर कंठ लगायो।।

— *सूरदास*

कवि से परिचय

आपने जो रचना अभी पढ़ी है, वह सूरदास द्वारा रचित है। माना जाता है कि उनका जन्म 15वीं शताब्दी में हुआ था। सूरदास ने अपना अधिकांश जीवन मथुरा, गोवर्धन सहित ब्रज के क्षेत्रों में श्रीकृष्ण के गुणगान में भजन गाते हुए बिताया। उनकी रचनाएँ ब्रजभाषा में उपलब्ध हैं। ये रचनाएँ इतनी सुंदर हैं कि आज भी लोगों के बीच बहुत प्रचलित हैं। उनकी अधिकतर कविताओं में श्रीकृष्ण की बाल-लीलाओं का मनोहारी वर्णन है। ये कविताएँ अत्यंत लोकप्रिय हैं और देशभर में प्रेम से गायी जाती हैं। अपनी उत्कृष्ट रचनाओं के लिए वे महाकवि सूरदास कहलाते हैं। उनकी मृत्यु 16वीं शताब्दी में हुई थी।

पाठ से

मेरी समझ से

(क) नीचे दिए गए प्रश्नों का सटीक उत्तर कौन-सा है? उसके सामने तारा (☆) बनाइए—

(1) मैं माखन कैसे खा सकता हूँ? इसके लिए श्रीकृष्ण ने क्या तर्क दिया?

- मुझे तुम पराया समझती हो।
- मेरी माता, तुम बहुत भोली हो।
- मुझे यह लाठी-कंबल नहीं चाहिए।
- मेरे छोटे-छोटे हाथ छीके तक कैसे जा सकते हैं?

(2) श्रीकृष्ण माँ के आने से पहले क्या कर रहे थे?

- गाय चरा रहे थे।
- माखन खा रहे थे।
- मधुबन में भटक रहे थे।
- मित्रों के संग खेल रहे थे।

(ख) अब अपने मित्रों के साथ चर्चा कीजिए और कारण बताइए कि आपने ये उत्तर ही क्यों चुने?

मिलकर करें मिलान

पाठ में से चुनकर यहाँ कुछ शब्द दिए गए हैं। अपने समूह में इन पर चर्चा कीजिए और इन्हें इनके सही अर्थ या संदर्भ से मिलाइए। इसके लिए आप शब्दकोश, इंटरनेट या अपने शिक्षकों की सहायता ले सकते हैं।

शब्द	अर्थ या संदर्भ
1. जसोदा	1. समय मापने की एक इकाई (तीन घंटे का एक पहर होता है। एक दिवस में आठ पहर होते हैं)।
2. पहर	2. एक वट वृक्ष (मान्यता है कि श्रीकृष्ण जब गाय चराया करते थे, तब वे इसी वृक्ष के ऊपर चढ़कर वंशी की ध्वनि से गायों को पुकारकर उन्हें एकत्रित करते।)
3. लकुटि कमरिया	3. गोल पात्र के आकार का रस्सियों का बुना हुआ जाल जो छत या ऊँची जगह से लटकाया जाता है ताकि उसमें रखी हुई खाने-पीने की चीज़ों (जैसे— दूध, दही आदि) को कुत्ते, बिल्ली आदि न पा सकें।
4. बंसीवट	4. यशोदा, श्रीकृष्ण की माँ, जिन्होंने श्रीकृष्ण को पाला था।
5. मधुबन	5. जन्म देने वाली, उत्पन्न करने वाली, जननी, माँ।
6. छीको	6. गाय पालने वालों के बच्चे, श्रीकृष्ण के संगी साथी।
7. माता	7. मथुरा के पास यमुना के किनारे का एक वन।
8. ग्वाल-बाल	8. लाठी और छोटा कंबल, कमली (मान्यता है कि श्रीकृष्ण लकुटि-कमरिया लेकर गाय चराने जाया करते थे)।

पंक्तियों पर चर्चा

पाठ में से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। इन्हें ध्यान से पढ़िए और इन पर विचार कीजिए। आपको इनका क्या अर्थ समझ में आया? अपने विचार अपनी कक्षा में साझा कीजिए और अपनी लेखन पुस्तिका में लिखिए।

(क) "भोर भयो गैयन के पाछे, मधुबन मोहि पठायो"

(ख) "सूरदास तब बिहँसि जसोदा, लै उर कंठ लगायो"

सोच-विचार के लिए

पाठ को एक बार फिर से पढ़िए और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर ढूँढ़कर अपनी लेखन पुस्तिका में लिखिए—

(क) पद में श्रीकृष्ण ने अपने बारे में क्या-क्या बताया है?

(ख) यशोदा माता ने श्रीकृष्ण को हँसते हुए गले से क्यों लगा लिया?

कविता की रचना

"भोर भयो गैयन के पाछे, मधुबन मोहि <u>पठायो</u>।

चार पहर बंसीवट भटक्यो, साँझ परे घर <u>आयो</u>॥"

इन पंक्तियों के अंतिम शब्दों को ध्यान से देखिए। 'पठायो' और 'आयो' दोनों शब्दों की अंतिम ध्वनि एक जैसी है। इस विशेषता को 'तुक' कहते हैं। इस पूरे पद में प्रत्येक पंक्ति के अंतिम शब्द का तुक मिलता है। अनेक कवि अपनी रचना को प्रभावशाली बनाने के लिए तुक का उपयोग करते हैं।

(क) इस पाठ को एक बार फिर से पढ़िए और अपने-अपने समूह में मिलकर इस पाठ की विशेषताओं की सूची बनाइए, जैसे इस पद की अंतिम पंक्ति में कवि ने अपना नाम भी दिया है आदि।

(ख) अपने समूह की सूची को कक्षा में सबके साथ साझा कीजिए।

अनुमान या कल्पना से

अपने समूह में मिलकर चर्चा कीजिए—

(क) श्रीकृष्ण अपनी माँ यशोदा को तर्क क्यों दे रहे होंगे?

(ख) जब माता यशोदा ने श्रीकृष्ण को गले से लगा लिया, तब क्या हुआ होगा?

शब्दों के रूप

नीचे शब्दों से जुड़ी कुछ गतिविधियाँ दी गई हैं। इन्हें करने के लिए आप शब्दकोश, अपने शिक्षकों और साथियों की सहायता भी ले सकते हैं।

(क) "भोर भयो गैयन के पाछे"

इस पंक्ति में 'पाछे' शब्द आया है। इसके लिए 'पीछे' शब्द का उपयोग भी किया जाता है। इस पद में ऐसे कुछ और शब्द हैं जिन्हें आप कुछ अलग रूप में लिखते और बोलते होंगे। नीचे ऐसे ही कुछ अन्य शब्द दिए गए हैं। इन्हें आप जिस रूप में बोलते-लिखते हैं, उस प्रकार से लिखिए।

- परे ------------------
- छोटो ------------------
- बिधि ------------------
- भोरी ------------------
- कछु ------------------
- लै ------------------
- नहिं ------------------

(ख) पद में से कुछ शब्द चुनकर नीचे स्तंभ 1 में दिए गए हैं और स्तंभ 2 में उनके अर्थ दिए गए हैं। शब्दों का उनके सही अर्थों से मिलान कीजिए—

स्तंभ 1	स्तंभ 2
1. उपजि	1. मुसकाई, हँसी
2. जानि	2. उपजना, उत्पन्न होना
3. जायो	3. जानकर, समझकर
4. जिय	4. विश्वास किया, सच माना
5. पठायो	5. बाँह, हाथ, भुजा
6. पतियायो	6. प्रकार, भाँति, रीति
7. बहियन	7. मन, जी
8. बिधि	8. जन्मा
9. बिहँसि	9. मला, लगाया, पोता
10. भटक्यो	10. इधर-उधर घूमा या भटका
11. लपटायो	11. भेज दिया

वर्ण-परिवर्तन

"तू माता मन की अति भोरी"

'भोरी' का अर्थ है 'भोली'। यहाँ 'ल' और 'र' वर्ण परस्पर बदल गए हैं। आपने ध्यान दिया होगा कि इस पद में कुछ और शब्दों में भी 'ल' या 'ड़' और 'र' में वर्ण-परिवर्तन हुआ है। ऐसे शब्द चुनकर अपनी लेखन पुस्तिका में लिखिए।

पंक्ति से पंक्ति

नीचे स्तंभ 1 में कुछ पंक्तियाँ दी गयी हैं और स्तंभ 2 में उनके भावार्थ दिए गए हैं। रेखा खींचकर सही मिलान कीजिए।

स्तंभ 1	स्तंभ 2
1. भोर भयो गैयन के पाछे, मधुबन मोहि पठायो।	1. मैं छोटा बालक हूँ, मेरी बाँहें छोटी हैं, मैं छीके तक कैसे पहुँच सकता हूँ?
2. चार पहर बंसीवट भटक्यो, साँझ परे घर आयो।	2. तेरे हृदय में अवश्य कोई भेद है, जो मुझे पराया समझ लिया।
3. मैं बालक बहिंयन को छोटो, छीको केहि बिधि पायो।	3. माँ तुम मन की बड़ी भोली हो, इनकी बातों में आ गई हो।
4. ग्वाल-बाल सब बैर परे हैं, बरबस मुख लपटायो।	4. सुबह होते ही गायों के पीछे मुझे मधुबन भेज दिया।
5. तू माता मन की अति भोरी, इनके कहे पतियायो।	5. चार पहर बंसीवट में भटकने के बाद साँझ होने पर घर आया।
6. जिय तेरे कछु भेद उपजि है, जानि परायो जायो।	6. ये सब सखा मुझसे बैर रखते हैं, इन्होंने मक्खन हठपूर्वक मेरे मुख पर लिपटा दिया।

पाठ से आगे

आपकी बात

"मैया मैं नहिं माखन खायो"

यहाँ श्रीकृष्ण अपनी माँ के सामने सिद्ध करने का प्रयास कर रहे हैं कि उन्होंने माखन नहीं खाया है। कभी-कभी हमें दूसरों के सामने सिद्ध करना पड़ जाता है कि यह कार्य हमने नहीं किया। क्या आपके साथ भी कभी ऐसा हुआ है? कब? किसके सामने? आपने अपनी बात सिद्ध करने के लिए कौन-कौन से तर्क दिए? उस घटना के बारे में बताइए।

घर की वस्तुएँ

"मैं बालक बहियन को छोटो, छीको केहि बिधि पायो।"

'छीका' घर की एक ऐसी वस्तु है जिसे सैकड़ों-वर्ष से भारत में उपयोग में लाया जा रहा है।

नीचे कुछ और घरेलू वस्तुओं के चित्र दिए गए हैं। इन्हें आपके घर में क्या कहते हैं? चित्रों के नीचे लिखिए। यदि किसी चित्र को पहचानने में कठिनाई हो तो आप अपने शिक्षक, परिजनों या इंटरनेट की सहायता भी ले सकते हैं।

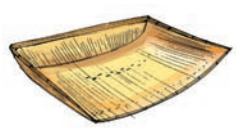
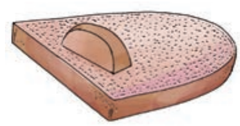

आप जानते ही हैं कि श्रीकृष्ण को मक्खन बहुत पसंद था। दूध से दही, मक्खन बनाया जाता है और मक्खन से घी बनाया जाता है। नीचे दूध से घी बनाने की प्रक्रिया संबंधी कुछ चित्र दिए गए हैं। अपने परिवार के सदस्यों, शिक्षकों या इंटरनेट आदि की सहायता से दूध से घी बनाने की प्रक्रिया लिखिए।

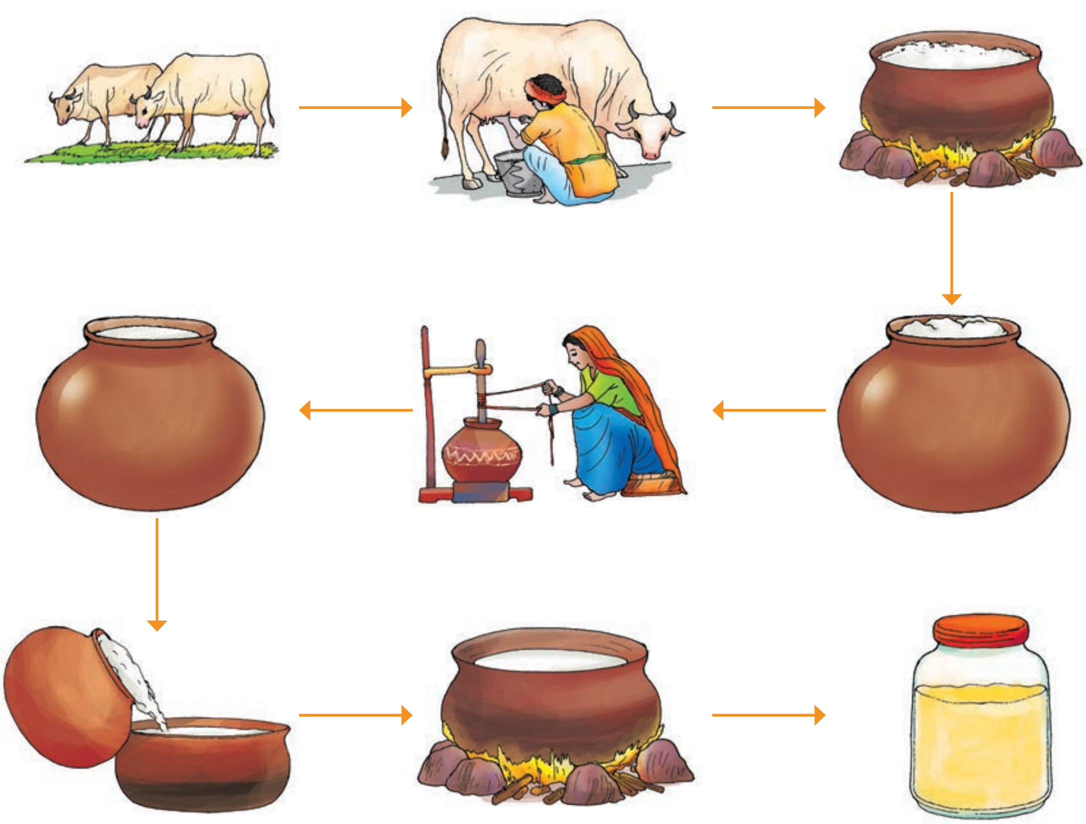

समय का माप

"चार पहर बंसीवट भटक्यो, साँझ परे घर आयो॥"

(क) 'पहर' और 'साँझ' शब्दों का प्रयोग समय बताने के लिए किया जाता है। समय बताने के लिए और कौन-कौन से शब्दों का प्रयोग किया जाता है? अपने समूह में मिलकर सूची बनाइए और कक्षा में साझा कीजिए।

(संकेत— कल, ऋतु, वर्ष, अब, पखवाड़ा, दशक, वेला, अवधि आदि)

(ख) श्रीकृष्ण के अनुसार वे कितने घंटे गाय चराते थे?

(ग) मान लीजिए वे शाम को छह बजे गाय चराकर लौटे। वे सुबह कितने बजे गाय चराने के लिए घर से निकले होंगे?

(घ) 'दोपहर' का अर्थ है 'दो पहर' का समय। जब दूसरे पहर की समाप्ति होती है और तीसरे पहर का प्रारंभ होता है। यह लगभग 12 बजे का समय होता है, जब सूर्य सिर पर आ जाता है। बताइए दिन के पहले पहर का प्रारंभ लगभग कितने बजे होगा?

हम सब विशेष हैं

(क) महाकवि सूरदास दृष्टिबाधित थे। उनकी विशेष क्षमता थी उनकी कल्पना शक्ति और कविता रचने की कुशलता।

हम सभी में कुछ न कुछ ऐसा होता है जो हमें सबसे विशेष और सबसे भिन्न बनाता है। नीचे दिए गए व्यक्तियों की विशेष क्षमताएँ क्या हैं, विचार कीजिए और लिखिए—

आपकी --

आपके किसी परिजन की --

आपके शिक्षक की --

आपके मित्र की --

(ख) एक विशेष क्षमता ऐसी भी है जो हम सबके पास होती है। वह क्षमता है सबकी सहायता करना, सबके भले के लिए सोचना। तो बताइए, इस क्षमता का उपयोग करके आप इनकी सहायता कैसे करेंगे—

- एक सहपाठी पढ़ना जानता है और उसे एक पाठ समझ में नहीं आ रहा है।
- एक सहपाठी को पढ़ना अच्छा लगता है और वह देख नहीं सकता।
- एक सहपाठी बहुत जल्दी-जल्दी बोलता है और उसे कक्षा में भाषण देना है।
- एक सहपाठी बहुत अटक-अटक कर बोलता है और उसे कक्षा में भाषण देना है।
- एक सहपाठी को चलने में कठिनाई है और वह सबके साथ दौड़ना चाहता है।
- एक सहपाठी प्रतिदिन विद्यालय आता है और उसे सुनने में कठिनाई है।

आज की पहेली

दूध से मक्खन ही नहीं बल्कि और भी बहुत कुछ बनाया जाता है। नीचे दूध से बनने वाली कुछ वस्तुओं के चित्र दिए गए हैं। दी गई शब्द-पहेली में उनके नाम के पहले अक्षर दे दिए गए हैं। नाम पूरे कीजिए—

खो	द	म			ल
			प	छा	
मि					
घी		श			
आ					

खोजबीन के लिए

सूरदास द्वारा रचित कुछ अन्य रचनाएँ खोजें व पढ़ें।

10

परीक्षा

जब रियासत देवगढ़ के दीवान सरदार सुजानसिंह बूढ़े हुए तो परमात्मा की याद आई। जाकर महाराज से विनय की कि दीनबंधु! दास ने श्रीमान की सेवा चालीस साल तक की, अब मेरी अवस्था भी ढल गई, राज-काज सँभालने की शक्ति नहीं रही। कहीं भूल-चूक हो जाय तो बुढ़ापे में दाग लगे। सारी जिंदगी की नेकनामी मिट्टी में मिल जाए।

राजा साहब अपने अनुभवशील नीतिकुशल दीवान का बड़ा आदर करते थे। बहुत समझाया, लेकिन जब दीवान साहब ने न माना, तो हारकर उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली; पर शर्त यह लगा दी कि रियासत के लिए नया दीवान आप ही को खोजना पड़ेगा।

दूसरे दिन देश के प्रसिद्ध पत्रों में यह विज्ञापन निकला कि देवगढ़ के लिए एक सुयोग्य दीवान की ज़रूरत है। जो सज्जन अपने को इस पद के योग्य समझें, वे वर्तमान सरकार सुजानसिंह की सेवा में उपस्थित हों। यह ज़रूरी नहीं है कि वे ग्रेजुएट हों, मगर हृष्ट-पुष्ट होना आवश्यक है, मंदाग्नि के मरीज को यहाँ तक कष्ट उठाने की कोई ज़रूरत नहीं। एक महीने तक उम्मीदवारों के रहन-सहन, आचार-विचार की देखभाल की जाएगी। विद्या का कम, परंतु कर्तव्य का अधिक विचार किया जायेगा। जो महाशय इस परीक्षा में पूरे उतरेंगे, वे इस उच्च पद पर सुशोभित होंगे।

2

इस विज्ञापन ने सारे मुल्क में तहलका मचा दिया। ऐसा ऊँचा पद और किसी प्रकार की कैद नहीं? केवल नसीब का खेल है। सैकड़ों आदमी अपना-अपना भाग्य परखने के लिए चल खड़े हुए। देवगढ़ में नए-नए और रंग-बिरंगे मनुष्य दिखाई देने लगे। प्रत्येक रेलगाड़ी से उम्मीदवारों का एक मेला-सा उतरता। कोई पंजाब से चला आता था, कोई मद्रास से, कोई नए फैशन का प्रेमी, कोई पुरानी सादगी पर मिटा हुआ। रंगीन एमामे, चोगे और नाना प्रकार के अंगरखे और कंटोप देवगढ़ में अपनी सज-धज दिखाने लगे। लेकिन सबसे विशेष संख्या ग्रेजुएटों की थी, क्योंकि सनद की कैद न होने पर भी सनद से परदा तो ढका रहता है।

सरदार सुजानसिंह ने इन महानुभावों के आदर-सत्कार का बड़ा अच्छा प्रबंध कर दिया था। हर एक मनुष्य अपने जीवन को अपनी बुद्धि के अनुसार अच्छे रूप में दिखाने की कोशिश करता था। मिस्टर 'अ' नौ बजे दिन तक सोया करते थे, आजकल वे बगीचे में टहलते हुए ऊषा का दर्शन करते थे। मिस्टर 'द', 'स' और 'ज' से उनके घरों पर नौकरों की नाक में दम था, लेकिन ये सज्जन आजकल 'आप' और 'जनाब' के बगैर नौकरों से बातचीत नहीं करते थे। मिस्टर 'ल' को किताब से घृणा थी, परंतु आजकल वे बड़े-बड़े ग्रंथ देखने-पढ़ने में डूबे रहते थे। जिससे बात कीजिए, वह नम्रता और सदाचार का देवता बना मालूम देता था। लोग समझते थे कि एक महीने का झंझट है, किसी तरह काट लें, कहीं कार्य सिद्ध हो

गया तो कौन पूछता है? लेकिन मनुष्यों का वह बूढ़ा जौहरी आड़ में बैठा हुआ देख रहा था कि इन बगुलों में हंस कहाँ छिपा हुआ है।

3

एक दिन नए फैशनवालों को सूझी कि आपस में हॉकी का खेल हो जाए। यह प्रस्ताव हॉकी के मँजे हुए खिलाड़ियों ने पेश किया। यह भी तो आखिर एक विद्या है। इसे क्यों छिपा रखें। संभव है, कुछ हाथों की सफ़ाई ही काम कर जाए। चलिए तय हो गया, फील्ड बन गई, खेल शुरू हो गया और गेंद किसी दफ्तर के अप्रेंटिस की तरह ठोकरें खाने लगी।

रियासत देवगढ़ में यह खेल बिल्कुल निराली बात थी। पढ़े-लिखे भलेमानुस लोग शतरंज और ताश जैसे गंभीर खेल खेलते थे। दौड़-कूद के खेल बच्चों के खेल समझे जाते थे।

खेल बड़े उत्साह से जारी था। धावे के लोग जब गेंद को लेकर तेज़ी से उड़ते तो ऐसा जान पड़ता था कि कोई लहर बढ़ती चली आती है। लेकिन दूसरी ओर के खिलाड़ी इस बढ़ती हुई लहर को इस तरह रोक लेते थे कि मानो लोहे की दीवार है।

संध्या तक यही धूमधाम रही। लोग पसीने से तर हो गए। खून की गरमी आँख और चेहरे से झलक रही थी। हाँफते-हाँफते बेदम हो गए, लेकिन हार-जीत का निर्णय न हो सका।

अँधेरा हो गया था। इस मैदान से ज़रा दूर हटकर एक नाला था। उस पर कोई पुल न था। पथिकों को नाले में से चलकर आना पड़ता था। खेल अभी बंद ही हुआ था और खिलाड़ी लोग बैठे दम ले रहे थे कि एक किसान अनाज से भरी हुई गाड़ी लिए हुए उस नाले में आया। लेकिन कुछ तो नाले में कीचड़ था और कुछ उसकी चढ़ाई इतनी ऊँची थी कि गाड़ी ऊपर न चढ़ सकती थी। वह कभी बैलों को ललकारता, कभी पहियों को हाथ से ढकेलता, लेकिन बोझ अधिक था और बैल कमज़ोर। गाड़ी ऊपर को न चढ़ती और चढ़ती भी तो कुछ दूर चढ़कर फिर खिसककर नीचे पहुँच जाती। किसान बार-बार ज़ोर लगाता और बार-बार झुंझलाकर बैलों को मारता, लेकिन गाड़ी उभरने का नाम न लेती। बेचारा इधर-उधर निराश होकर ताकता मगर वहाँ कोई सहायक नज़र न आता। गाड़ी को अकेले छोड़कर कहीं जा भी नहीं सकता। बड़ी आपत्ति में फँसा हुआ था। इसी बीच में खिलाड़ी हाथों में डंडे लिए घूमते-घामते उधर से निकले। किसान

ने उनकी तरफ़ सहमी हुई आँखों से देखा; परंतु किसी से मदद माँगने का साहस न हुआ। खिलाड़ियों ने भी उसको देखा मगर बंद आँखों से, जिनमें सहानुभूति न थी। उनमें स्वार्थ था, मद था, मगर उदारता और वात्सल्य का नाम भी न था।

4

लेकिन उसी समूह में एक ऐसा मनुष्य था जिसके हृदय में दया थी और साहस था। आज हॉकी खेलते हुए उसके पैरों में चोट लग गई थी। लँगड़ाता हुआ धीरे-धीरे चला आता था। अकस्मात उसकी निगाह गाड़ी पर पड़ी। ठिठक गया। उसे किसान की सूरत देखते ही सब बातें ज्ञात हो गई। डंडा एक किनारे रख दिया। कोट उतार डाला और किसान के पास जाकर बोला, "मैं तुम्हारी गाड़ी निकाल दूँ?"

किसान ने देखा एक गठे हुए बदन का लंबा आदमी सामने खड़ा है। झुककर बोला, "हुज़ूर, मैं आपसे कैसे कहूँ?" युवक ने कहा, "मालूम होता है, तुम यहाँ बड़ी देर से फँसे हो। अच्छा, तुम गाड़ी पर जाकर बैलों को साधो, मैं पहियों को ढकेलता हूँ, अभी गाड़ी ऊपर चढ़ जाती है।"

किसान गाड़ी पर जा बैठा। युवक ने पहिये को ज़ोर लगाकर उकसाया। कीचड़ बहुत ज्यादा था। वह घुटने तक ज़मीन में गड़ गया, लेकिन हिम्मत न हारी। उसने फिर ज़ोर किया, उधर किसान ने बैलों को ललकारा। बैलों को सहारा मिला, हिम्मत बँध गई, उन्होंने कंधे झुकाकर एक बार ज़ोर किया तो गाड़ी नाले के ऊपर थी।

किसान युवक के सामने हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। बोला, "महाराज, आपने आज मुझे उबार लिया, नहीं तो सारी रात मुझे यहाँ बैठना पड़ता।"

युवक ने हँसकर कहा, "अब मुझे कुछ इनाम देते हो?" किसान ने गंभीर भाव से कहा, "नारायण चाहेंगे तो दीवानी आपको ही मिलेगी।"

युवक ने किसान की तरफ़ गौर से देखा। उसके मन में एक संदेह हुआ, क्या यह सुजानसिंह तो नहीं हैं? आवाज़ मिलती है, चेहरा-मोहरा भी वही। किसान ने भी उसकी ओर तीव्र दृष्टि से देखा। शायद उसके दिल के संदेह को भाँप गया। मुस्कराकर बोला, "गहरे पानी में पैठने से ही मोती मिलता है।"

5

निदान महीना पूरा हुआ। चुनाव का दिन आ पहुँचा। उम्मीदवार लोग प्रातःकाल ही से अपनी किस्मतों का फैसला सुनने के लिए उत्सुक थे। दिन काटना पहाड़ हो गया। प्रत्येक के चेहरे पर आशा और निराशा के रंग आते थे। नहीं मालूम, आज किसके नसीब जागेंगे! न जाने किस पर लक्ष्मी की कृपादृष्टि होगी।

संध्या समय राजा साहब का दरबार सजाया गया। शहर के रईस और धनाढ्य लोग, राज्य के कर्मचारी और दरबारी तथा दीवानी के उम्मीदवारों का समूह, सब रंग-बिरंगी सज-धज बनाए दरबार में आ विराजे! उम्मीदवारों के कलेजे धड़क रहे थे।

जब सरदार सुजानसिंह ने खड़े होकर कहा, "मेरे दीवानी के उम्मीदवार महाशयो! मैंने आप लोगों को जो कष्ट दिया है, उसके लिए मुझे क्षमा कीजिए। इस पद के लिए ऐसे पुरुष की आवश्यकता थी, जिसके हृदय में दया हो और साथ-साथ आत्मबल। हृदय वह जो उदार हो, आत्मबल वह जो आपत्ति का वीरता के साथ सामना करे और इस रियासत के सौभाग्य से हमें ऐसा पुरुष मिल गया। ऐसे गुणवाले संसार में कम हैं और जो हैं, वे कीर्ति और मान के शिखर पर बैठे हुए हैं, उन तक हमारी पहुँच नहीं। मैं रियासत के पंडित जानकीनाथ-सा को दीवानी पाने पर बधाई देता हूँ।"

रियासत के कर्मचारियों और रईसों ने जानकीनाथ की तरफ़ देखा। उम्मीदवार दल की आँखें उधर उठीं, मगर उन आँखों में सत्कार था, इन आँखों में ईर्ष्या।

सरदार साहब ने फिर फरमाया, "आप लोगों को यह स्वीकार करने में कोई आपत्ति न होगी कि जो पुरुष स्वयं जख्मी होकर भी एक गरीब किसान की भरी हुई गाड़ी को दलदल से निकालकर नाले के ऊपर चढ़ा दे उसके हृदय में साहस, आत्मबल और उदारता का वास है। ऐसा आदमी गरीबों को कभी न सतावेगा। उसका संकल्प दृढ़ है, जो उसके चित्त को स्थिर रखेगा। वह चाहे धोखा खा जाए, परंतु दया और धर्म से कभी न हटेगा।"

—प्रेमचंद

लेखक से परिचय

(1880–1936)

हिंदी के एक महान लेखक और कथा-सम्राट के नाम से प्रसिद्ध प्रेमचंद का वास्तविक नाम धनपतराय था। उन्होंने समाज-सुधार और राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत कई कहानियाँ और उपन्यास लिखे। उनकी अनेक कहानियाँ जैसे— ईदगाह, बड़े भाईसाहब, गुल्ली डंडा, दो बैलों की कथा आदि बड़ों और बच्चों के बीच बहुत पढ़ी और सराही गई हैं।

पाठ से

मेरी समझ से

आइए, अब हम कहानी 'परीक्षा' के बारे में कुछ चर्चा कर लेते हैं।

(क) आपकी समझ से नीचे दिए गए प्रश्नों का सटीक उत्तर कौन-सा है? उसके सामने तारा (☆) बनाइए–

(1) महाराज ने दीवान को ही उनका उत्तराधिकारी चुनने का कार्य उनके किस गुण के कारण सौंपा?

- सादगी
- उदारता
- बल
- नीतिकुशलता

(2) दीवान साहब द्वारा नौकरी छोड़ने के निश्चय का क्या कारण था?

- परमात्मा की याद
- राज-काज सँभालने योग्य शक्ति न रहना
- बदनामी का भय
- चालीस वर्ष की नौकरी पूरा हो जाना

(ख) अब अपने मित्रों के साथ चर्चा कीजिए कि आपने ये उत्तर ही क्यों चुने?

शीर्षक

(क) आपने जो कहानी पढ़ी है, इसका नाम प्रेमचंद ने 'परीक्षा' रखा है। अपने समूह में चर्चा करके लिखिए कि उन्होंने इस कहानी का यह नाम क्यों दिया होगा? अपने उत्तर के कारण भी लिखिए।

(ख) यदि आपको इस कहानी को कोई अन्य नाम देना हो तो क्या नाम देंगे? आपने यह नाम क्यों सोचा, यह भी बताइए?

पंक्तियों पर चर्चा

कहानी में से चुनकर यहाँ कुछ पंक्तियाँ दी गई हैं। इन्हें ध्यान से पढ़िए और इन पर विचार कीजिए। आपको इनका क्या अर्थ समझ में आया? अपने विचार अपने समूह में साझा कीजिए और अपनी लेखन पुस्तिका में लिखिए।

"इस पद के लिए ऐसे पुरुष की आवश्यकता थी, जिसके हृदय में दया हो और साथ-साथ आत्मबल। हृदय वह जो उदार हो, आत्मबल वह जो आपत्ति का वीरता के साथ सामना करे। ऐसे गुणवाले संसार में कम हैं और जो हैं, वे कीर्ति और मान के शिखर पर बैठे हुए हैं।"

सोच-विचार के लिए

कहानी को एक बार फिर से पढ़िए, निम्नलिखित के बारे में पता लगाइए और लिखिए—

(क) नौकरी की चाह में आए लोगों ने नौकरी पाने के लिए कौन-कौन से प्रयत्न किए?

(ख) "उसे किसान की सूरत देखते ही सब बातें ज्ञात हो गईं।" खिलाड़ी को कौन-कौन सी बातें पता चल गई?

(ग) "मगर उन आँखों में सत्कार था, इन आँखों में ईर्ष्या।" किनकी आँखों में सत्कार था और किनकी आँखों में ईर्ष्या थी? क्यों?

खोजबीन

कहाना म से वे वाक्य खोजकर लिखिए जिनसे पता चलता है कि—

(क) शायद युवक बूढ़े किसान की असलियत पहचान गया था।

(ख) नौकरी के लिए आए लोग किसी तरह बस नौकरी पा लेना चाहते थे।

कहानी की रचना

"लोग पसीने से तर हो गए। खून की गरमी आँख और चेहरे से झलक रही थी।"

इन वाक्यों को पढ़कर आँखों के सामने थकान से चूर खिलाड़ियों का चित्र दिखाई देने लगता है। यह चित्रात्मक भाषा है। ध्यान देंगे तो इस पाठ में ऐसी और भी अनेक विशेष बातें आपको दिखाई देंगी।

कहानी को एक बार ध्यान से पढ़िए। आपको इस कहानी में और कौन-कौन सी विशेष बातें दिखाई दे रही हैं? अपने समूह में मिलकर उनकी सूची बनाइए।

समस्या और समाधान

इस कहानी में कुछ समस्याएँ हैं और उसके समाधान भी हैं। कहानी को एक बार फिर से पढ़कर बताइए कि—

(क) महाराज के सामने क्या समस्या थी? उन्होंने इसका क्या समाधान खोजा?

(ख) दीवान के सामने क्या समस्या थी? उन्होंने इसका क्या समाधान खोजा?

(ग) नौकरी के लिए आए लोगों के सामने क्या समस्या थी? उन्होंने इसका क्या समाधान खोजा?

मन के भाव

"स्वार्थ था, मद था, मगर उदारता और वात्सल्य का नाम भी न था।"

इस वाक्य में कुछ शब्दों के नीचे रेखा खिंची हुई है। ये सभी नाम हैं, लेकिन दिखाई देने वाली वस्तुओं, व्यक्तियों या जगहों के नाम नहीं हैं। ये सभी शब्द मन के भावों के नाम हैं। आप कहानी में से ऐसे ही अन्य नामों को खोजकर नीचे दिए गए रिक्त स्थानों में लिखिए।

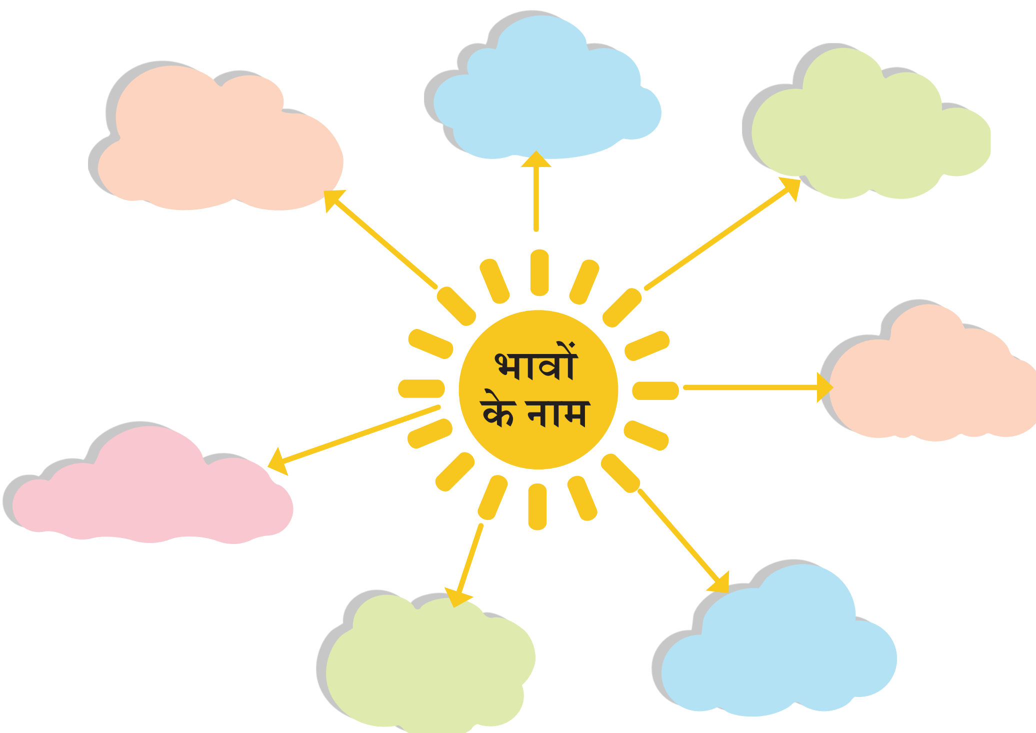

अभिनय

कहानी में युवक और किसान की बातचीत संवादों के रूप में दी गई है। यह भी बताया गया है कि उन दोनों ने ये बातें कैसे बोलीं। अपने समूह के साथ मिलकर तैयारी कीजिए और कहानी के इस भाग को कक्षा में अभिनय के द्वारा प्रस्तुत कीजिए। प्रत्येक समूह से अभिनेता या अभिनेत्री कक्षा में सामने आएँगे और एक-एक संवाद अभिनय के साथ बोलकर दिखाएँगे।

विपरीतार्थक शब्द

"विद्या का कम, परंतु कर्तव्य का अधिक विचार किया जाएगा।"

'कम' का विपरीत अर्थ देने वाला शब्द है 'अधिक'। इसी प्रकार के कुछ विपरीतार्थक शब्द नीचे दिए गए हैं लेकिन वे आमने-सामने नहीं हैं। रेखाएँ खींचकर विपरीतार्थक शब्दों के सही जोड़े बनाइए—

स्तंभ 1	स्तंभ 2
1. आना	1. निर्दयी
2. गुण	2. निराशा
3. आदर	3. जीत
4. स्वस्थ	4. अवगुण
5. कम	5. अस्वस्थ
6. दयालु	6. अधिक
7. योग्य	7. जाना
8. हार	8. अयोग्य
9. आशा	9. अनादर

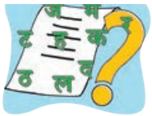

कहावत

"गहरे पानी में पैठने से ही मोती मिलता है।"

यह वाक्य एक कहावत है। इसका अर्थ है कि कोशिश करने पर ही सफलता मिलती है। ऐसी ही एक और कहावत है,"जिन खोजा तिन पाइयाँ गहरे पानी पैठ" अर्थात परिश्रम का फल अवश्य मिलता है।
कहावतें ऐसे वाक्य होते हैं जिन्हें लोग अपनी बात को और अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए प्रयोग करते हैं। आपके घर और पास-पड़ोस में भी लोग अनेक कहावतों का उपयोग करते होंगे।

नीचे कुछ कहावतें और उनके भावार्थ दिए गए हैं। आप इन कहावतों को कहानी से जोड़कर अपनी लेखन-पुस्तिका में लिखिए—

- **अधजल गगरी छलकत जाए**— जिसके पास थोड़ा ज्ञान होता है, वह उसका दिखावा करता है।
- **अब पछताए होत क्या जब चिड़ियाँ चुग गई खेत**— समय निकल जाने के बाद पछताना व्यर्थ होता है।
- **एक अनार सौ बीमार**— कोई ऐसी एक चीज़ जिसको चाहने वाले अनेक हों।
- **जो गरजते हैं वे बरसते नहीं हैं**— जो अधिक बढ़-चढ़कर बोलते हैं, वे काम नहीं करते हैं।
- **जहाँ चाह, वहाँ राह**— जब किसी काम को करने की इच्छा होती है, तो उसका साधन भी मिल जाता है।

(संकेत— विज्ञापन में तो एक नौकरी की बात कही गई थी, लेकिन उम्मीदवार आ गए हज़ारों। इसे कहते हैं— **एक अनार सौ बीमार**।)

पाठ से आगे

अनुमान या कल्पना से

(क) "दूसरे दिन देश के प्रसिद्ध पत्रों में यह विज्ञापन निकला"
देश के प्रसिद्ध पत्रों में नौकरी का विज्ञापन किसने निकलवाया होगा? आपको ऐसा क्यों लगता है?

(ख) "इस विज्ञापन ने सारे मुल्क में तहलका मचा दिया।"
विज्ञापन ने पूरे देश में तहलका क्यों मचा दिया होगा?

विज्ञापन

"दूसरे दिन देश के प्रसिद्ध पत्रों में यह विज्ञापन निकला कि देवगढ़ के लिए एक सुयोग्य दीवान की ज़रूरत है।"

(क) कहानी में इस विज्ञापन की सामग्री को पढ़िए। इसके बाद अपने समूह में मिलकर इस विज्ञापन को अपनी कल्पना का उपयोग करते हुए बनाइए।

(संकेत— विज्ञापन बनाने के लिए आप एक चौकोर कागज़ पर हाशिया बनाइए। इसके बाद इस हाशिए के भीतर के खाली स्थान पर सुंदर लिखाई, चित्रों, रंगों आदि की सहायता से सभी आवश्यक जानकारी लिख दीजिए। आप बिना रंगों या चित्रों के भी विज्ञापन बना सकते हैं।)

(ख) आपने भी अपने आस-पास दीवारों पर, समाचार-पत्रों में या पत्रिकाओं में, मोबाइल फोन या दूरदर्शन पर अनेक विज्ञापन देखे होंगे। अपने किसी मनपसंद विज्ञापन को याद कीजिए। आपको वह अच्छा क्यों लगता है? सोचकर अपने समूह में बताइए। अपने समूह के बिंदुओं को लिख लीजिए।

(ग) विज्ञापनों से लाभ होते हैं, हानि होती हैं, या दोनों? अपने समूह में चर्चा कीजिए और चर्चा के बिंदु लिखकर कक्षा में साझा कीजिए।

आगे की कहानी

'परीक्षा' कहानी जहाँ समाप्त होती है, उसके आगे क्या हुआ होगा। आगे की कहानी अपनी कल्पना से बनाइए।

आपकी बात

(क) यदि कहानी में दीवान साहब के स्थान पर आप होते तो योग्य व्यक्ति को कैसे चुनते?

(ख) यदि आपको कक्षा का मॉनिटर चुनने के लिए कहा जाए तो आप उसे कैसे चुनेंगे? उसमें किन-किन गुणों को देखेंगे? गुणों की परख के लिए क्या-क्या करेंगे?

नया-पुराना

"कोई नए फैशन का प्रेमी, कोई पुरानी सादगी पर मिटा हुआ।"

हमारे आस-पास अनेक वस्तुएँ ऐसी हैं जिन्हें लोग नया फैशन या पुराना चलन कहकर दो भागों में बाँट देते हैं। जो वस्तु आपके माता-पिता या दादा-दादी के लिए नई हो, हो सकता है वह आपके लिए पुरानी हो, या जो उनके लिए पुरानी हो, वह आपके लिए नई हो। अपने परिवार या परिजनों से चर्चा करके नीचे दी गई तालिका को पूरा कीजिए—

मेरे लिए नई वस्तुएँ	मेरे लिए पुरानी वस्तुएँ	परिवार के बड़ों के लिए नई वस्तुएँ	परिवार के बड़ों के लिए पुरानी वस्तुएँ

वाद-विवाद

"आपस में हॉकी का खेल हो जाए। यह भी तो आखिर एक विद्या है।"

क्या हॉकी जैसा खेल भी विद्या है? इस विषय पर कक्षा में एक वाद-विवाद गतिविधि का आयोजन कीजिए। इसे आयोजित करने के लिए कुछ सुझाव आगे दिए गए हैं—

- कक्षा में पहले कुछ समूह बनाएँ। फिर पर्ची निकालकर निर्धारित कर लीजिए कि कौन समूह पक्ष में बोलेंगे, कौन विपक्ष में।
- आधे समूह इसके पक्ष में तर्क दीजिए, आधे समूह इसके विपक्ष में।
- सभी समूहों को बोलने के लिए 5-5 मिनट का समय दिया जाएगा।
- ध्यान रखें कि प्रत्येक समूह का प्रत्येक सदस्य चर्चा करने, तर्क देने आदि कार्यों में भाग अवश्य लें।

अच्छाई और दिखावा

"हर एक मनुष्य अपने जीवन को अपनी बुद्धि के अनुसार अच्छे रूप में दिखाने की कोशिश करता था।"

अपने समूह में निम्नलिखित पर चर्चा कीजिए और चर्चा के बिंदु अपनी लेखन-पुस्तिका में लिख लीजिए—

(क) हर व्यक्ति अपनी बुद्धि के अनुसार स्वयं को अच्छा दिखाने की कोशिश करता है। स्वयं को अच्छा दिखाने के लिए लोग क्या-क्या करते हैं? (संकेत— मेहनत करना, कसरत करना, साफ़-सुथरे रहना आदि)

(ख) क्या 'स्वयं को अच्छा दिखाने' में और 'स्वयं के अच्छा होने' में कोई अंतर है? कैसे?

परिधान तरह-तरह के

"कोट उतार डाला"

'कोट' एक परिधान का नाम है। कुछ अन्य परिधानों के नाम और चित्र नीचे दिए गए हैं। परिधानों के नामों को इनके सही चित्र के साथ मिलाइए। इन्हें आपके घर में क्या कहते हैं? लिखिए—

चित्र	नाम	और क्या कहते हैं
	दुपट्टा	
	गमछा	
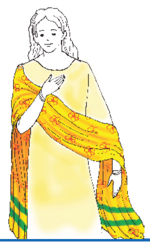	लहँगा	

चित्र	नाम	और क्या कहते हैं
	फिरन	
	धोती	
	अचकन	
	पगड़ी	

आपकी परीक्षाएँ

हम सभी अपने जीवन में अनेक प्रकार की परीक्षाएँ लेते और देते हैं। आप अपने अनुभवों के आधार पर कुछ परीक्षाओं के उदाहरण बताइए। यह भी बताइए कि किसने, कब, कैसे और क्यों वह परीक्षा ली।

(संकेत— जैसे, किसी को विश्वास दिलाने के लिए उसके सामने साइकिल चलाकर दिखाना, स्कूल या घर पर कोई परीक्षा देना, किसी को किसी काम की चुनौती देना आदि।)

आज की पहेली

आज आपकी एक रोचक परीक्षा है। यहाँ दिए गए चित्र एक जैसे हैं या भिन्न? इन चित्रों में कुछ अंतर हैं। देखते हैं आप कितने अंतर कितनी जल्दी खोज पाते हैं।

झरोखे से

पाठ में दिए गए क्यू.आर. कोड के माध्यम से आप एक और कहानी पढ़ेंगे। इस कहानी में भी कोई किसी की परीक्षा ले रहा है। यह कहानी हमारे देश के बहुत होनहार बालक और उसके गुरु चाणक्य के बारे में है। इसे हिंदी के प्रसिद्ध लेखक जयशंकर प्रसाद ने लिखा है।

खोजबीन के लिए

पुस्तक में दिए गए क्यू.आर. कोड की सहायता से आप प्रेमचंद के बारे में और जान-समझ सकते हैं, साथ ही उनकी अन्य कहानियों का आनंद भी उठा सकते हैं—

- ईदगाह
- नादान दोस्त
- दो बैलों की कथा

11

चेतक की वीरता

रण-बीच चौकड़ी भर-भरकर
चेतक बन गया निराला था।
राणा प्रताप के घोड़े से
पड़ गया हवा को पाला था।

गिरता न कभी चेतक-तन पर
राणा प्रताप का कोड़ा था।
वह दौड़ रहा अरि-मस्तक पर
या आसमान पर घोड़ा था।

जो तनिक हवा से बाग हिली
लेकर सवार उड़ जाता था।
राणा की पुतली फिरी नहीं
तब तक चेतक मुड़ जाता था।

कौशल दिखलाया चालों में
उड़ गया भयानक भालों में।
निर्भीक गया वह ढालों में
सरपट दौड़ा करवालों में।

है यहीं रहा, अब यहाँ नहीं
वह वहीं रहा है वहाँ नहीं।
थी जगह न कोई जहाँ नहीं
किस अरि-मस्तक पर कहाँ नहीं।

बढ़ते नद-सा वह लहर गया
वह गया गया फिर ठहर गया।
विकराल बज्र-मय बादल-सा
अरि की सेना पर घहर गया।

भाला गिर गया, गिरा निषंग,
हय-टापों से खन गया अंग।
वैरी-समाज रह गया दंग
घोड़े का ऐसा देख रंग।

— श्यामनारायण पाण्डेय

कवि से परिचय

(1907–1991)

वीर रस की कविताओं के लिए चर्चित कवि श्यामनारायण पाण्डेय की सर्वाधिक लोकप्रिय काव्यकृति 'हल्दीघाटी' का प्रकाशन सन 1939 में हुआ था। अभी आपने जो 'चेतक की वीरता' कविता पढ़ी है, वह 'हल्दीघाटी' का ही एक अंश है। भारत के स्वतंत्रता संग्राम के अंतिम वर्षों में 'हल्दीघाटी' काव्यकृति ने स्वतंत्रता सेनानियों में सांस्कृतिक एकता और उत्साह का संचार कर दिया था।

पाठ से

मेरी समझ से

अब हम इस कविता पर विस्तार से चर्चा करेंगे। आगे दी गई गतिविधियाँ इस कार्य में आपकी सहायता करेंगी।

(क) नीचे दिए गए प्रश्नों का सटीक उत्तर कौन-सा है? उसके सामने तारा (☆) बनाइए—

(1) चेतक शत्रुओं की सेना पर किस प्रकार टूट पड़ता था?

- चेतक बादल की तरह शत्रु की सेना पर वज्रपात बनकर टूट पड़ता था।
- चेतक शत्रु की सेना को चारों ओर से घेरकर उस पर टूट पड़ता था।
- चेतक हाथियों के दल के समान बादल के रूप में शत्रु की सेना पर टूट पड़ता था।
- चेतक नदी के उफान के समान शत्रु की सेना पर टूट पड़ता था।

(2) 'लेकर सवार उड़ जाता था।' इस पंक्ति में 'सवार' शब्द किसके लिए आया है?

- चेतक
- महाराणा प्रताप
- कवि
- शत्रु

(ख) अब अपने मित्रों के साथ तर्कपूर्ण चर्चा कीजिए कि आपने ये ही उत्तर क्यों चुने?

पंक्तियों पर चर्चा

पाठ में से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। इन्हें पढ़कर समझिए और इन पर विचार कीजिए। आपको इनका क्या अर्थ समझ में आया? कक्षा में अपने विचार साझा कीजिए और अपनी लेखन पुस्तिका में लिखिए।

(क) "निर्भीक गया वह ढालों में, सरपट दौड़ा करवालों में।"

(ख) "भाला गिर गया, गिरा निषंग, हय-टापों से खन गया अंग।"

मिलकर करें मिलान

कविता में से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। अपने समूह में इन पर चर्चा कीजिए और इन्हें इनके सही भावार्थ से मिलाइए। इसके लिए आप शब्दकोश, इंटरनेट या अपने शिक्षकों की सहायता ले सकते हैं।

पंक्तियाँ	भावार्थ
1. राणा प्रताप के घोड़े से पड़ गया हवा को पाला था।	1. शत्रु की सेना पर भयानक बज्रमय बादल बनकर टूट पड़ता और शत्रुओं का नाश करता।
2. वह दौड़ रहा अरि-मस्तक पर, या आसमान पर घोड़ा था।	2. हवा से भी तेज दौड़ने वाला चेतक ऐसे दौड़ लगा रहा था मानो हवा और चेतक में प्रतियोगिता हो रही हो।
3. जो तनिक हवा से बाग हिली लेकर सवार उड़ जाता था।	3. शत्रुओं के सिर के ऊपर से होता हुआ एक छोर से दूसरे छोर पर ऐसे दौड़ता जैसे आसमान में दौड़ रहा हो।
4. राणा की पुतली फिरी नहीं, तब तक चेतक मुड़ जाता था।	4. चेतक की फुर्ती ऐसी कि लगाम के थोड़ा-सा हिलते ही सरपट हवा में उड़ने लगता था।
5. विकराल बज्र-मय बादल-सा अरि की सेना पर घहर गया।	5. वह राणा की पूरी निगाह मुड़ने से पहले ही उस ओर मुड़ जाता अर्थात वह उनका भाव समझ जाता था।

शीर्षक

यह कविता 'हल्दीघाटी' शीर्षक काव्य कृति का एक अंश है। यहाँ इसका शीर्षक 'चेतक की वीरता' दिया गया है। आप इसे क्या शीर्षक देना चाहेंगे और क्यों?

कविता की रचना

"चेतक बन गया निराला था।"

"पड़ गया हवा को पाला था।"

"राणा प्रताप का कोड़ा था।"

"या आसमान पर घोड़ा था।"

रेखांकित शब्दों पर ध्यान दीजिए। ये शब्द बोलने-लिखने में थोड़े मिलते-जुलते हैं। इस तरह की तुकांत शैली प्रायः कविता में आती है। कभी-कभी कविता अतुकांत भी होती है। इस कविता में आए तुकांत शब्दों की सूची बनाइए।

शब्द के भीतर शब्द

"या <u>आसमान</u> का घोड़ा था।"

'आसमान' शब्द के भीतर कौन-कौन से शब्द छिपे हैं—

आस, समान, मान, सम, आन, नस आदि।

अब इसी प्रकार कविता में से कोई पाँच शब्द चुनकर उनके भीतर के शब्द खोजिए।

पाठ से आगे

आपकी बात

"जो तनिक हवा से बाग हिली
लेकर सवार उड़ जाता था।"

(क) 'हवा से लगाम हिली और घोड़ा भाग चला' कविता को प्रभावशाली बनाने में इस तरह के प्रयोग काम आते हैं। कविता में आए ऐसे प्रयोग खोजकर परस्पर बातचीत करें।

(ख) कहीं भी, किसी भी तरह का युद्ध नहीं होना चाहिए।

इस पर आपस में बात कीजिए।

समानार्थी शब्द

कुछ शब्द समान अर्थ वाले होते हैं, जैसे— हय, अश्व और घोड़ा। इन्हें समानार्थी शब्द कहते हैं।

यहाँ पर दिए गए शब्दों से उस शब्द पर घेरा बनाइए जो समानार्थी न हों—

1.	हवा	अनल	पवन	बयार
2.	रण	तुरंग	युद्ध	समर
3.	आसमान	आकाश	गगन	नभचर
4.	नद	नाद	सरिता	तटिनी
5.	करवाल	तलवार	असि	ढाल

आज की पहेली

बूझो तो जानें

- तीन अक्षर का मेरा नाम, उल्टा सीधा एक समान।
  दिन में जगता, रात में सोता, यही मेरी पहचान।।
- एक पक्षी ऐसा अलबेला, बिना पंख उड़ रहा अकेला।
  बाँध गले में लंबी डोर, पकड़ रहा अंबर का छोर।
- रात में हूँ दिन में नहीं, दीये के नीचे हूँ ऊपर नहीं
  बोलो, बोलो— मैं हूँ कौन?
- मुझमें समाया फल, फूल और मिठाई
  सबके मुँह में आया पानी मेरे भाई।
- सड़क है पर गाड़ी नहीं, जंगल है पर पेड़ नहीं
  शहर है पर घर नहीं, समंदर है पर पानी नहीं।

खोजबीन के लिए

1. महाराणा प्रताप कौन थे? उनके बारे में इंटरनेट या पुस्तकालय से जानकारी प्राप्त करके लिखिए।
2. इस कविता में चेतक एक 'घोड़ा' है। पशु-पक्षियों पर आधारित पाँच रचनाओं को खोजिए और अपनी कक्षा की दीवार-पत्रिका पर लगाइए।

12

हिंद महासागर में छोटा-सा हिंदुस्तान

यात्रा पर मैं दिल्ली से 15 जुलाई को, बंबई (मुंबई) से 16 जुलाई को और नैरोबी से 17 जुलाई को मॉरिशस के लिए रवाना हुआ। इधर से जाते समय नैरोबी (केन्या) की दुनिया में मुझे एक रात और दो दिन ठहरने का मौका मिल गया। अतएव मन में यह लोभ जग गया कि मॉरिशस के भारतीयों और अफ़्रीकियों से मिलने के पूर्व हमें अफ़्रीका के शेरों से मुलाकात कर लेनी चाहिए। जहाज़ (विमान) दूसरे दिन शाम को मिलने वाला था। अतएव, हम जिस दिन नैरोबी पहुँचे, उसी दिन नेशनल पार्क में घूमने को निकल गए।

नैरोबी का नेशनल पार्क चिड़ियाघर नहीं है। शहर से बाहर बहुत बड़ा जंगल है, जिसमें घास अधिक, पेड़ बहुत कम हैं। लेकिन जंगल में सर्वत्र अच्छी सड़कें बिछी हुई हैं और पर्यटकों की गाड़ियाँ उन पर दौड़ती ही रहती हैं। हमारी गाड़ी को भी काफ़ी देर तक दौड़ना पड़ा, मगर सिंह कहीं भी दिखाई नहीं पड़े। एक जगह सड़क पर दो मोटरें खड़ी थीं और उन पर तरह-तरह के बंदर और लंगूर चढ़े हुए थे। पर्यटक लोग इन बंदरों को कभी-कभी फल या बिस्कुट खाने को दे देते हैं। अतएव मोटर के रुकते ही बंदर उसे घेर लेते हैं।

बड़ी दूरी तय करने के बाद या यों कहिए कि दस-बीस मील के भीतर हर सड़क छान लेने के बाद, हम उस जगह जा पहुँचे, जहाँ सिंह उस दिन आराम कर रहे थे। वहाँ जो कुछ देखा, वह जन्मभर कभी नहीं भूलेगा। कोई सात-आठ सिंह लेटे या सोए हुए थे और उन्हें घेरकर आठ-दस मोटरें खड़ी थीं। तुर्रा यह कि सिंहों को यह जानने की कोई इच्छा ही नहीं थी कि हमें देखने को आने वाले लोग कौन हैं? मोटरों और शीशे चढ़ाकर उनके भीतर बैठे लोगों की ओर सिंहों ने कभी भी दृष्टिपात नहीं किया, मानो हम लोग

तुच्छातितुच्छ हों और उनकी नज़र में आने के योग्य बिल्कुल नहीं हों। हम लोग वहाँ आधा घंटा ठहरे होंगे। इस बीच एक सिंह ने उठकर जम्हाई ली, दूसरे ने देह को ताना, मगर हमारी ओर किसी भी सिंह ने नज़र नहीं उठाई। हम लोग पेड़-पौधे और खरपात से भी बदतर समझे गए।

इतने में कोई मील-भर की दूरी पर हिरनों का एक झुंड दिखाई पड़ा, जिनके बीच एक जिराफ बिल्कुल बेवकूफ की तरह खड़ा था। अब दो जवान सिंह उठे और दो ओर चल दिए। एक तो थोड़ा-सा आगे बढ़कर एक जगह बैठ गया, लेकिन दूसरा घास के बीच छिपता हुआ मोर्चे पर आगे बढ़ने लगा।

हिरनों के झुंड ने ताड़ लिया कि उन पर सिंहों की नज़र पड़ रही है। अतएव वे चरना भूलकर चौकन्ने हो उठे। फिर ऐसा हुआ कि झुंड से छूटकर कुछ हिरन एक तरफ़ को भाग निकले, मगर बाकी जहाँ-के-तहाँ ठिठके खड़े रहे। बाकी हिरन ठिठके हुए इसलिए खड़े थे कि सिंह उन्हें देख रहे थे और सहज प्रवृत्ति हिरनों को यह समझा रही थी कि खतरा किसी भी तरफ़ भागने में हो सकता है। शिकार सिंह सूर्यास्त के बाद किया करते हैं और शिकार वे झुंड का नहीं करते, बल्कि उस जानवर का करते हैं जो भागते हुए झुंड से पिछड़ जाता है। अब यह बात समझ में आई कि हिरन भागने को निरापद नहीं समझकर एक गोल में क्यों खड़े थे।

मुझे ऐसा महसूस हो रहा था कि मेरा रक्तचाप बढ़ रहा है। अतएव मैंने तय कर लिया कि अब घर लौटना चाहिए।

नैरोबी से मॉरिशस तक हम बी.ओ.ए.सी. के जहाज़ में उड़े। जहाज़ नैरोबी से चार बजे शाम को उड़ा और पाँच घंटों की निरंतर उड़ान के बाद जब वह मॉरिशस पहुँचा, तब वहाँ रात के लगभग दस बज रहे थे। रात थी, अँधेरा था, पानी बरस रहा था। मगर तब भी हमारे स्वागत में बहुत लोग खड़े थे। हवाई अड्डे के स्वागत का समाँ देखकर यह भाव जगे बिना नहीं रहा कि हम जहाँ आए हैं, वह छोटे पैमाने पर भारत ही है।

मॉरिशस द्वीप भूमध्य रेखा से कोई बीस डिग्री दक्खिन और देशांतर रेखा 60 के बिल्कुल पास, किंतु उससे पच्छिम की ओर बसा हुआ है। मॉरिशस की लंबाई 29 मील और चौड़ाई कोई 30 मील है। वैसे पूरे

मॉरिशस द्वीप का रकबा 720 वर्गमील आँका जाता है। यह द्वीप हिंद महासागर का मोती है, भारत-समुद्र का सबसे खूबसूरत सितारा है।

मॉरिशस वह देश है, जिसका कोई भी हिस्सा समुद्र से पंद्रह मील से ज्यादा दूर नहीं है। मॉरिशस वह देश है, जहाँ की जनसंख्या के 67 प्रतिशत लोग भारतीय खानदान के हैं तथा जहाँ 53 प्रतिशत लोग हिंदू हैं। मॉरिशस वह देश है, जिसकी राजधानी पोर्टलुई की गलियों के नाम कलकत्ता, मद्रास, हैदराबाद और बम्बई हैं तथा जिसके एक पूरे मोहल्ले का नाम काशी है। मॉरिशस वह देश है, जहाँ बनारस भी है, गोकुल भी है और ब्रह्मस्थान भी। मॉरिशस वह देश है, जहाँ माध्यमिक स्कूलों को कॉलेज कहने का रिवाज़ है।

चूँकि मॉरिशस के हिंदुओं में से अधिकांश बिहार और उत्तर प्रदेश के लोग हैं, इसलिए हिंदी का मॉरिशस में व्यापक प्रचार है। मॉरिशस की राजभाषा अंग्रेजी, किंतु संस्कृति की भाषा फ्रेंच है। मगर जनता वहाँ क्रेयोल बोलती है। क्रेयोल का फ्रेंच से वही संबंध है, जो संबंध भोजपुरी का हिंदी से है। और क्रेयोल

के बाद मॉरिशस की दूसरी जनभाषा भोजपुरी को ही मानना पड़ेगा। प्रायः सभी भारतीय भोजपुरी बोलते अथवा उसे समझ लेते हैं। यहाँ तक कि भारतीयों के पड़ोस में रहने वाले चीनी भी भोजपुरी बखूबी बोल लेते हैं। किंतु, मॉरिशस की भोजपुरी शाहाबाद या सारन की भोजपुरी नहीं है। उसमें फ्रेंच के इतने संज्ञापद घुस गए हैं कि आपको बार-बार शब्दों के अर्थ पूछने पड़ेंगे।

मॉरिशस में ऊख की खेती और उसके व्यवसाय को जो सफलता मिली है, भारतीयों के कारण मिली है। मॉरिशस की असली ताकत भारतीय लोग ही हैं। सारा मॉरिशस कृषि-प्रधान द्वीप है, क्योंकि चीनी वहाँ का प्रमुख अथवा एकमात्र उद्योग है। किंतु भारतीय वंश के लोग यदि इस टापू में नहीं गए होते, तो ऊख की खेती असंभव हो जाती और चीनी के कारखाने बढ़ते ही नहीं।

भारत में बैठे-बैठे हम यह नहीं समझ पाते कि भारतीय संस्कृति कितनी प्राणवती और चिरायु है। किंतु, मॉरिशस जाकर हम अपनी संस्कृति की प्राणवत्ता का ज्ञान आसानी से प्राप्त कर लेते हैं। मालिकों की इच्छा तो यही थी कि भारतीय लोग भी क्रिस्तान हो जाएँ किंतु भारतीयों ने अत्याचार तो सहे, लेकिन प्रलोभनों को ठुकरा दिया। वे अपने धर्म पर डटे रहे और जिस द्वीप में भगवान ने उन्हें भेज दिया था, उस द्वीप को उन्होंने छोटा-सा हिंदुस्तान बना डाला। यह ऐसी सफलता की बात है, जिस पर सभी भारतीयों को गर्व होना चाहिए।

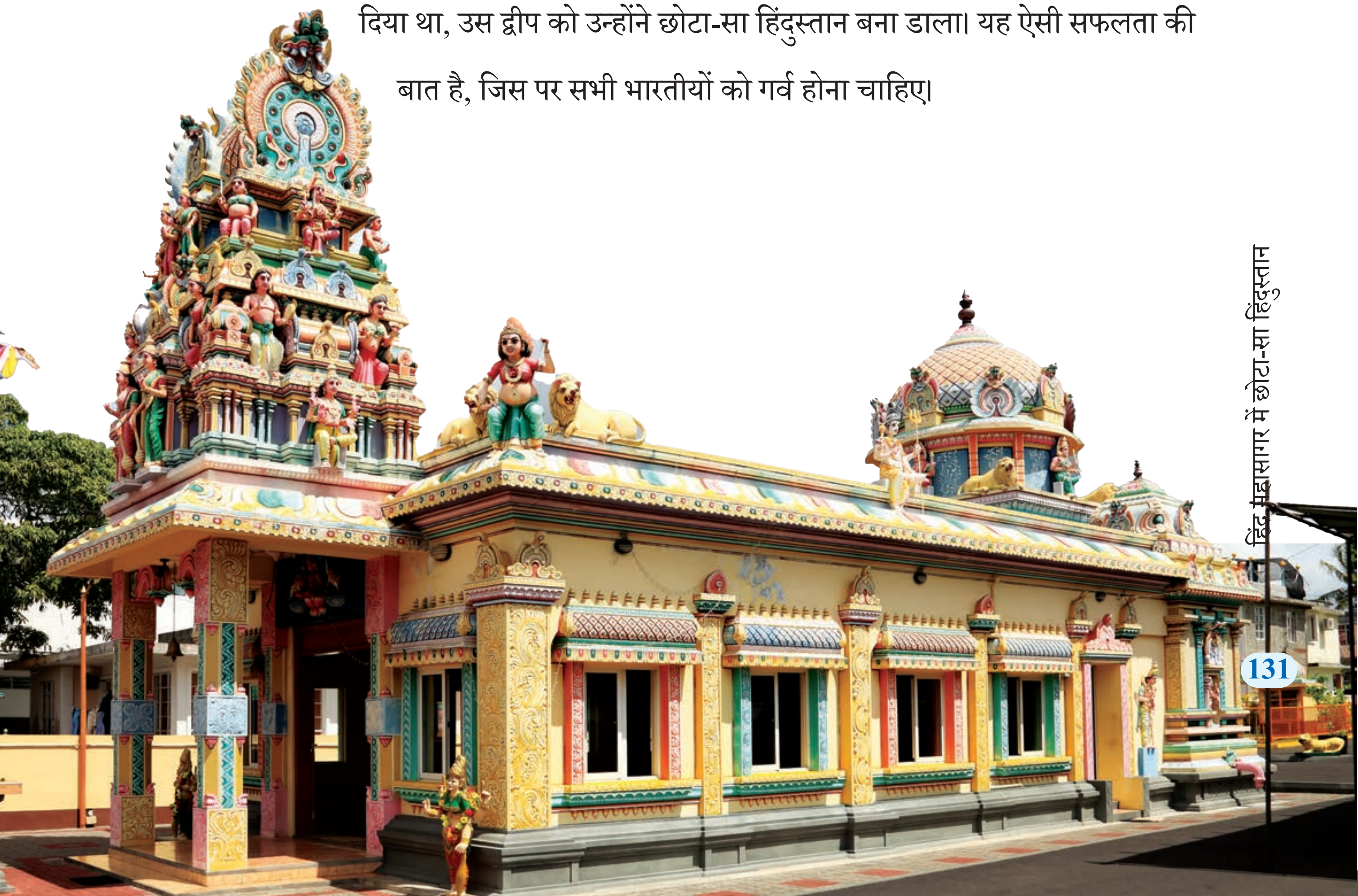

मॉरिशस के प्रत्येक प्रमुख ग्राम में शिवालय होता है। मॉरिशस के प्रत्येक प्रमुख ग्राम में हिंदू तुलसीकृत रामायण (रामचरितमानस) का पाठ करते हैं अथवा ढोलक और झाँझ पर उसका गायन करते हैं। मॉरिशस के मंदिरों और शिवालयों को मैंने अत्यन्त स्वच्छ और सुरम्य पाया। कितना अच्छा हो, यदि हम भारत में भी अपने मंदिरों और तीर्थ स्थानों को उतना ही स्वच्छ और सुरम्य बनाना आरंभ कर दें, जितने स्वच्छ वे मॉरिशस में दिखाई देते हैं।

भारत के पर्व-त्योहार मॉरिशस में भी प्रचलित हैं। किंतु वर्ष का सर्वश्रेष्ठ धार्मिक पर्व शिवरात्रि है। मॉरिशस के मध्य में एक झील है, जिसका संबंध हिंदुओं ने परियों से बिठा दिया है और उस झील का नाम अब परी-तालाब हो गया है। परी-तालाब केवल तीर्थ ही नहीं, दृश्य से भी पिकनिक का स्थान है। किंतु, वहाँ पिकनिक पर जाने वाले लोग अपने साथ माँस-मछली नहीं ले जाते, न अपवित्रता का वहाँ कोई व्यापार करते हैं।

शिवरात्रि के समय सारे मॉरिशस के हिंदू श्वेत वस्त्र धारण करके कंधों पर काँवर लिए जुलूस बाँधकर परी तालाब पर आते हैं और परी-तालाब का जल भरकर अपने-अपने गाँव के शिवालय को लौट जाते हैं तथा शिवजी को जल चढ़ाकर अपने घरों में प्रवेश करते हैं। ये सारे कृत्य वे बड़ी ही भक्ति-भावना और पवित्रता से करते हैं। सभी वयस्क लोग उस दिन उजली धोती, उजली कमीज़ और उजली गाँधी टोपी पहनते हैं। हाँ, बच्चे हाफ पैंट पहन सकते हैं, लेकिन गाँधी टोपी उस दिन उन्हें भी पहननी पड़ती है। परी-तालाब पर लगने वाला यह मेला मॉरिशस के प्रमुख आकर्षणों में से एक है और उसे देखने को अन्य धर्मों के लोग भी काफ़ी संख्या में आते हैं।

— रामधारी सिंह 'दिनकर'

लेखक से परिचय

(1908–1974)

आपने जो रोचक यात्रा-वृत्तांत पढ़ा है, उसे हिंदी के प्रसिद्ध लेखक रामधारी सिंह 'दिनकर' ने लिखा है। 'दिनकर' की रचनाओं की विशेषता है— भारत और भारत की संस्कृति। उनकी रचनाओं में वीरता, उत्साह और देशप्रेम का भाव अधिक है। स्वतंत्रता मिलने के बाद भी भारत का गौरव-गान उनकी रचनाओं का विषय बना रहा। उन्होंने आप जैसे बच्चों के लिए भी पुस्तकें लिखी हैं, जैसे— मिर्च का मज़ा, पढ़क्कू की सूझ और सूरज का ब्याह आदि।

पाठ से

आइए, अब हम इस पाठ को थोड़ा और निकटता से समझ लेते हैं। आगे दी गई गतिविधियाँ इस कार्य में आपकी सहायता करेंगी। आइए इन गतिविधियों को पूरा करते हैं।

मेरी समझ से

(क) नीचे दिए गए प्रश्नों का सटीक उत्तर कौन-सा है? उसके सामने तारा (☆) बनाइए—

(1) हिरण समूह में क्यों खड़े थे?

- भागने पर उन्हें सिंह के आक्रमण का डर था।
- वे भाग चुके हिरणों के लौटने की प्रतीक्षा में थे।
- वे बीच खड़े असावधान जिराफ की रक्षा कर रहे थे।
- सिंह उनसे उदासीन थे अत: उन्हें कोई खतरा नहीं था।

(2) मॉरिशस छोटे पैमाने पर भारतवर्ष ही है। कैसे?

- गन्ने की खेती अधिकतर भारतीयों द्वारा की जाती है।
- अधिकतर जनसंख्या भारत से जाने वालों की है।
- सभी भारतवासी परी तालाब पर एकत्रित होते हैं।
- भारत की बहुत-सी विशेषताएँ वहाँ दिखाई देती हैं।

(ख) अपने मित्रों के साथ चर्चा कीजिए और कारण बताइए कि आपने ये उत्तर ही क्यों चुने?

पंक्तियों पर चर्चा

पाठ में से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। इन्हें ध्यान से पढ़िए और इन पर विचार कीजिए। आपको इनका क्या अर्थ समझ में आया? अपने विचार अपने समूह में साझा कीजिए और अपनी लेखन पुस्तिका में लिखिए।

"भारत में बैठे-बैठे हम यह नहीं समझ पाते कि भारतीय संस्कृति कितनी प्राणवती और चिरायु है। किंतु, मॉरिशस जाकर हम अपनी संस्कृति की प्राणवत्ता का ज्ञान आसानी से प्राप्त कर लेते हैं।"

सोच-विचार के लिए

इस यात्रा-वृत्तांत को एक बार फिर से पढ़िए और निम्नलिखित के बारे में पता लगाकर अपनी लेखन-पुस्तिका में लिखिए—

(क) "नैरोबी का नेशनल पार्क चिड़ियाघर नहीं है।"

नेशनल पार्क और चिड़ियाघर में क्या अंतर है?

(ख) "हम लोग पेड़-पौधे और खरपात से भी बदतर समझे गए।"

वे कौन थे जिन्होंने लेखक और अन्य लोगों को पेड़-पौधों और खरपात से भी बदतर समझ लिया था? उन्होंने ऐसा क्यों समझ लिया था?

(ग) "मॉरिशस की असली ताकत भारतीय लोग ही हैं।"

पाठ में इस कथन के समर्थन में कौन-सा तर्क दिया गया है?

(घ) "उस द्वीप को उन्होंने छोटा-सा हिंदुस्तान बना डाला।"

भारत से गए लोगों ने मॉरिशस को हिंदुस्तान जैसा कैसे बना दिया है?

मिलकर करें मिलान

पाठ में से कुछ शब्द चुनकर स्तंभ 1 में दिए गए हैं। उनसे संबंधित वाक्य स्तंभ 2 में दिए गए हैं। अपने समूह में इन पर चर्चा कीजिए और रेखा खींचकर शब्दों का मिलान उपयुक्त वाक्यों से कीजिए। इसके लिए आप शब्दकोश, इंटरनेट, पुस्तकालय या अपने शिक्षकों की सहायता ले सकते हैं।

स्तंभ 1		स्तंभ 2	
1.	अफ़्रीका	1.	यह अफ़्रीका महाद्वीप के एक देश 'केन्या' की राजधानी है।
2.	नैरोबी	2.	यह श्रीराम के जीवन पर आधारित अमर ग्रंथ 'रामचरितमानस' लिखने वाले कवि का नाम है।
3.	रक्तचाप	3.	यह एशिया के बाद दुनिया का सबसे बड़ा महाद्वीप है।
4.	बी.ओ.ए.सी.	4.	यह रक्त-वाहिनियों अर्थात नसों में बहते रक्त द्वारा उनकी दीवारों पर डाले गए दबाव का नाम है।
5.	भूमध्य रेखा	5.	यह दो भाषाओं के मिलने से बनी नई भाषा का नाम है।
6.	देशान्तर रेखा	6.	यह 'ब्रिटिश ओवरसीज एयरवेज कॉरपोरेशन' नाम का छोटा रूप है। यह एक बहुत पुरानी विदेशी विमान कंपनी थी।
7.	तुलसीदास	7.	यह पृथ्वी के चारों ओर एक काल्पनिक वृत्त है जो पृथ्वी को दो भागों में बाँटता है— उत्तरी भाग और दक्षिणी भाग।
8.	क्रेयोल	8.	यह बाँस का एक मज़बूत डंडा होता है जिसे काँवड़ या बहंगी भी कहा जाता है, जिसके दोनों सिरों पर बँधी हुई दो टोकरियों या छीकों में यात्री गंगाजल या अन्य वस्तुएँ भरकर ले जाते हैं।
9.	काँवर	9.	ये ग्लोब पर उत्तर से दक्षिण की ओर खींची जाने वाली काल्पनिक रेखाएँ हैं। ये उत्तरी ध्रुव को दक्षिणी ध्रुव से मिलाती हैं।

यात्रा-वृत्तांत की रचना

"इतने में कोई मील-भर की दूरी पर हिरनों का एक झुंड दिखाई पड़ा। अब दो जवान सिंह उठे और दो ओर को चल दिए। एक तो थोड़ा-सा आगे बढ़कर एक जगह बैठ गया, लेकिन दूसरा घास के बीच छिपता हुआ मोर्चे पर आगे बढ़ने लगा।"

इन वाक्यों को पढ़कर ऐसा लगता है मानो हम लेखक की आँखों से स्वयं वह दृश्य देख रहे हैं। मानो हम स्वयं भी उस स्थान की यात्रा कर रहे हैं, जहाँ का वर्णन लेखक ने किया है। यह इस यात्रा-वृत्तांत की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। यदि आप इस यात्रा-वृत्तांत को थोड़ा और ध्यान से पढ़ेंगे तो आपको और भी बहुत-सी विशेषताएँ पता चलेंगी।

इस पाठ को एक बार फिर से पढ़िए और इसकी रचना पर ध्यान दीजिए। आपको जो विशेष बातें दिखाई दें, उन्हें आपस में साझा कीजिए और लिख लीजिए। जैसे – लेखक ने बताया है कि वह एक स्थान से दूसरे स्थान तक कैसे और कब पहुँचा।

अनुमान या कल्पना से

अपने समूह में मिलकर चर्चा कीजिए—

(क) "मॉरिशस वह देश है, जहाँ बनारस भी है, गोकुल भी है और ब्रह्मस्थान भी।"

मॉरिशस में लोगों ने गली-मोहल्लों के नाम इस तरह के क्यों रखे होंगे?

(ख) "कोई सात-आठ सिंह लेटे या सोए हुए थे और उन्हें घेरकर आठ-दस मोटरें खड़ी थीं।"

आपने पढ़ा कि केन्या का राष्ट्रीय पार्क पर्यटकों से भरा रहता है। पर्यटक जंगली जानवरों को घेरे रहते हैं। क्या इसका उन पशुओं पर कोई प्रभाव पड़ता होगा? अपने उत्तर के कारण भी बताइए।

(संकेत— राष्ट्रीय पार्क के बंदरों, सिंहों का व्यवहार भी बदल गया है।)

(ग) "हिरनों का एक झुंड दिखाई पड़ा, जिनके बीच एक जिराफ बिल्कुल बेवकूफ की तरह खड़ा था।"

सिंहों के आस-पास होने के बाद भी जिराफ क्यों खड़ा रहा होगा?

(घ) "मॉरिशस के मध्य में एक झील है, जिसका संबंध हिंदुओं ने परियों से बिठा दिया है और उस झील का नाम अब परी-तालाब हो गया है।"

उस झील का नाम 'परी-तालाब' क्यों पड़ा होगा?

(ङ) आपको यह जानकार आश्चर्य होगा कि लगभग 50 साल पहले ‘परी-तालाब’ का नाम बदलकर ‘गंगा-तालाब’ कर दिया गया है। मॉरिशस के लोगों ने यह नाम क्यों रखा होगा?

शब्दों की बात

नीचे शब्दों से जुड़ी कुछ गतिविधियाँ दी गई हैं। इन्हें करने के लिए आप शब्दकोश, पुस्तकालय, अपने शिक्षकों और साथियों की सहायता भी ले सकते हैं।

संज्ञा के स्थान पर

(क) “हिरनों ने ताड़ लिया कि उन पर सिंहों की नज़र पड़ रही है। अतएव वे चरना भूलकर चौकन्ने हो उठे।”

इन पंक्तियों में रेखांकित शब्दों पर ध्यान दीजिए। इन वाक्यों में ये शब्द किनके लिए उपयोग किए गए हैं? ये शब्द ‘हिरनों’ के लिए उपयोग में लाए गए हैं। आप जानते ही हैं कि ‘हिरन’ यहाँ एक संज्ञा शब्द है। जो शब्द संज्ञा शब्दों के स्थान पर उपयोग में लाए जाते हैं, उन्हें ‘सर्वनाम’ कहते हैं।

अब नीचे दिए गए वाक्यों में सर्वनाम शब्दों को पहचानिए और उनके नीचे रेखा खींचिए —

1. “हाँ, बच्चे हाफ पैंट पहन सकते हैं, लेकिन गांधी टोपी उस दिन उन्हें भी पहननी पड़ती है।”
2. “भारतीयों ने अत्याचार तो सहे, लेकिन प्रलोभनों को ठुकरा दिया। वे अपने धर्म पर डटे रहे और जिस द्वीप में भगवान ने उन्हें भेज दिया था, उस द्वीप को उन्होंने छोटा-सा हिंदुस्तान बना डाला।”

(ख) ऊपर दिए गए दोनों वाक्यों को सर्वनाम की जगह संज्ञा शब्द लगाकर लिखिए।

पहचान पाठ के आधार पर

आपने इस यात्रा-वृत्तांत में तीन देशों के नाम पढ़े हैं— भारत, केन्या और मॉरिशस। पुस्तकालय या कक्षा में उपलब्ध मानचित्र पर भारत को तो आप सरलता से पहचान ही लेंगे। पाठ में दी गई जानकारी के आधार पर बाकी दोनों देशों को पहचानिए।

पाठ से आगे

आपकी बात

(क) "वहाँ जो कुछ देखा, वह जन्मभर कभी नहीं भूलेगा।"

क्या आपने कभी ऐसा कुछ देखा, सुना या पढ़ा है जिसके बारे में आपको लगता है कि आप उसे कभी नहीं भूल सकेंगे? उसके बारे में अपने समूह में बताइए।

(ख) "हमें अफ्रीका के शेरों से मुलाकात कर लेनी चाहिए।"

'मुलाकात' शब्द का अर्थ है 'मिलना'। लेकिन यहाँ 'मुलाकात' शब्द का भाव है— शेरों को पास से देखना। इसके लिए 'अपनी आँखों से देखना', 'सजीव देखना' 'भेंट करना' आदि शब्दों का प्रयोग भी किया जाता है। अपनी बात को और अधिक सुंदर और अनोखा रूप देने के लिए शब्दों के इस प्रकार के प्रयोग किए जाते हैं।

आपने अब तक किन-किन पशु-पक्षियों से 'मुलाकात' की है? वह मुलाकात कहाँ हुई थी? बताइए।

(ग) "यह ऐसी सफलता की बात है, जिस पर सभी भारतीयों को गर्व होना चाहिए।"

आपको किन-किन बातों पर गर्व होता है? बताइए।

(संकेत— ये बातें आपके बारे में हो सकती हैं, आपके परिवार के बारे में हो सकती हैं और किसी अन्य व्यक्ति, वस्तु, स्थान, प्राणी आदि के बारे में भी हो सकती हैं।)

कक्षा और घर की भाषाएँ

"प्रायः सभी भारतीय भोजपुरी बोलते अथवा उसे समझ लेते हैं। यहाँ तक कि भारतीयों के पड़ोस में रहने वाले चीनी भी भोजपुरी बखूबी बोल लेते हैं।"

भारत एक बहुभाषी देश है। भारत में लगभग सभी व्यक्ति एक से अधिक भाषाएँ बोल या समझ लेते हैं। आप कौन-कौन सी भाषाएँ बोल-समझ लेते हैं? आपके मित्र कौन-कौन सी भाषाएँ बोल-समझ लेते हैं? इसके बारे में यहाँ दी गई तालिका को पूरा कीजिए—

क्रम संख्या	मैं जिन भाषाओं को बोल-समझ लेता/लेती हूँ	मेरे मित्र जिन भाषाओं को बोल-समझ लेते हैं	मेरे परिजन जिन भाषाओं को बोल-समझ लेते हैं
कुल संख्या			

(संकेत— इस तालिका को पूरा करने के लिए आपको अपने मित्रों और परिजनों से पूछताछ करनी होगी। पहले भाषाओं के नाम लिखने हैं, बाद में उन नामों को गिनकर उनकी कुल संख्या लिखनी है।)

प्रशंसा या सराहना विभिन्न प्रकार से

"यह द्वीप हिंद महासागर का मोती है, भारत-समुद्र का सबसे खूबसूरत सितारा है।"

इस पाठ में लेखक ने मॉरिशस की सराहना में यह वाक्य लिखा है। सराहना करने के लिए 'दिनकर' ने द्वीप की तुलना मोती और तारे से की है।

किसी की सराहना अनेक प्रकार से की जा सकती है। आप आगे दी गई तालिका को पूरा कीजिए। पहले नाम लिखिए, फिर इनकी प्रशंसा में एक-एक वाक्य लिखिए। शर्त यह है कि प्रत्येक बार अलग तरह से प्रशंसा करनी है—

सराहना की तालिका

	नाम	प्रशंसा या सराहना का वाक्य
स्वयं		
परिजन		
शिक्षक		
मित्र		
पशु		
स्थान		
सब्ज़ी		
पेड़		

चित्रात्मक सूचना (इंफोग्राफिक्स)

नीचे दिए गए चित्र को देखिए। इसमें चित्रों के साथ-साथ बहुत कम शब्दों में कुछ जानकारी दी गई है। इसे 'चित्रात्मक सूचना' कहते हैं।

(क) इस 'चित्रात्मक सूचना' के आधार पर मॉरिशस के बारे में एक अनुच्छेद लिखिए।

(ख) अपनी पसंद के किसी विषय पर इसी प्रकार की 'चित्रात्मक सूचना' की रचना कीजिए, जैसे— आपका विद्यालय, कोई विशेष दिवस, आपके जीवन की कोई विशेष घटना आदि।

(संकेत— यह कार्य आप अपने समूह में मिलकर कर सकते हैं। इसके लिए आप किसी कागज़ पर चित्र चिपका सकते हैं और सूचना को कलात्मक रूप से कम शब्दों में लिख सकते हैं। चित्र बनाए भी जा सकते हैं। आप यह कार्य कंप्यूटर या मोबाइल फोन की सहायता से भी कर सकते हैं।)

हस्ताक्षर

आप जानते ही हैं कि यह पाठ हिंदी के प्रसिद्ध लेखक रामधारी सिंह 'दिनकर' ने लिखा है। वे अपने नाम को कुछ इस प्रकार लिखते थे—

अपनी पहचान प्रकट करने के लिए अपने नाम को किसी विशेष प्रकार से लिखने को हस्ताक्षर कहते हैं। हस्ताक्षर का प्रयोग व्यक्ति को जीवनभर अनेक कार्यों के लिए करना होता है। आपके विद्यालय में भी आपसे हस्ताक्षर करवाए जाते होंगे। आप प्रार्थना-पत्रों के अंत में भी अपने हस्ताक्षर करते होंगे।

हो सकता है अभी आपने अपने हस्ताक्षर निर्धारित न किए हों। यदि नहीं भी किए हैं तो कोई बात नहीं। आप चाहें तो आज भी अपने हस्ताक्षर निर्धारित कर सकते हैं।

नीचे दिए गए स्थान पर अपने हस्ताक्षर पाँच बार कीजिए। ध्यान रखें कि आपके हस्ताक्षर एक जैसे हों, अलग-अलग न हों।

पत्र

यहाँ 'दिनकर' का लिखा एक पत्र दिया जा रहा है। इसे पढ़िए और प्रश्नों के उत्तर लिखिए। पत्र पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर अपने समूह में मिलकर खोजिए—

नई दिल्ली

8-7-67

मान्यवर चतुर्वेदी जी,

आपका कृपा-पत्र मिला। मेरा स्वास्थ्य इधर बहुत गिर गया है और संयम के बावजूद तेज़ी से सुधर नहीं रहा है। मेरा चित्त अभी भी दबा हुआ है। ऐसी अवस्था में मैंने दो सप्ताह के लिए मॉरिशस जाना स्वीकार कर लिया है। 15 जुलाई को प्रस्थान करना है। लौटना शायद 5 अगस्त तक हो।

आपके आशीर्वाद की कामना करता हूँ।

आपका दिनकर
सफ़दरजंग लेन, नई दिल्ली

(क) पत्र किसने लिखा है?

(ख) पत्र किसे लिखा गया है?

(ग) पत्र किस तिथि को लिखा गया है?

(घ) पत्र किस स्थान से लिखा गया है?

(ङ) पत्र पाने वाले के नाम से पहले किस शब्द का प्रयोग किया गया है?

(च) पत्र-लेखक ने अपने नाम से पहले अपने लिए क्या शब्द लिखा है?

उलझन सुलझाओ

(क) "जहाज़ नैरोबी से चार बजे शाम को उड़ा और पाँच घंटों की निरंतर उड़ान के बाद जब वह मॉरिशस पहुँचा, तब वहाँ रात के लगभग दस बज रहे थे।"

जहाज़ नैरोबी से शाम 4 बजे उड़ा तो उसे 5 घंटों की उड़ान के बाद रात 9 बजे मॉरिशस पहुँचना चाहिए था। लेकिन वह पहुँचा लगभग दस बजे। क्यों?

आप इसका कारण पता करने के लिए अपने शिक्षकों या इंटरनेट की सहायता ले सकते हैं।

(ख) नीचे दो घड़ियों के चित्र दिए गए हैं। एक घड़ी भारत के समय को दिखा रही है। दूसरी घड़ी दिखा रही है कि उसी समय मॉरिशस में कितने घंटे और मिनट हुए हैं।

इन घड़ियों के अनुसार नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

भारत में घड़ी

मॉरिशस में घड़ी

- भारत में क्या समय हुआ है?
- मॉरिशस में क्या समय हुआ है?
- मॉरिशस और भारत के समय में कितने घंटे और मिनट का अंतर है?
- सूर्योदय भारत में पहले होगा या मॉरिशस में?
- जिस समय भारत में दोपहर के 12 बजे होंगे, उस समय मॉरिशस की घड़ियाँ कितना समय दिखा रही होंगी?

आज की पहेली

आज हम आपके लिए एक अनोखी पहेली लाए हैं। यहाँ एक वाक्य दिया गया है। आपको पता करना है कि इसका क्या अर्थ है—

येला मालथ येला घौलश।

मेरा ---

संकेत

क ← ख

खोजबीन के लिए

नीचे दी गई रचनाओं को पुस्तक में दिए गए क्यू.आर. कोड की सहायता से पढ़ें, देखें व समझें—

- चाँद का कुर्ता
- मिर्च का मज़ा
- राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' की जीवनी
- हिमालय के पर्वतीय प्रदेश की मनोरम यात्रा

13

पेड़ की बात

क्या आपने कभी कोई बीज बोया है? बीज से पेड़ बनने की कहानी बहुत रोचक है। कैसे अंकुर फूटता है, पौधा बनता है, धीरे-धीरे बढ़ता है और बड़ा पेड़ बन जाता है। आइए जानते हैं पेड़ की बात......

बहुत दिनों तक मिट्टी के नीचे बीज पड़े रहे। इसी तरह महीना-दर-महीना बीतता गया। सर्दियों के बाद वसंत आया। उसके बाद वर्षा की शुरूआत में दो-एक दिन पानी बरसा। अब और छिपे रहने की आवश्यकता नहीं थी! मानों बाहर से कोई शिशु को पुकार रहा हो, 'और सोए मत रहो, ऊपर उठ जाओ, सूरज की रोशनी देखो।' आहिस्ता-आहिस्ता बीज का ढक्कन दरक गया, दो सुकोमल पत्तियों के बीच अंकुर बाहर निकला। अंकुर का एक अंश नीचे माटी में मज़बूती से गड़ गया और दूसरा अंश माटी भेदकर ऊपर की ओर उठा। क्या तुमने अंकुर को उठते देखा है? जैसे कोई शिशु अपना नन्हा-सा सिर उठाकर आश्चर्य से नई दुनिया को देख रहा है!

वृक्ष का अंकुर निकलने पर जो अंश माटी के भीतर प्रवेश करता है, उसका नाम जड़ है और जो अंश ऊपर की ओर बढ़ता है, उसे तना कहते हैं। सभी पेड़-पौधों में 'जड़ व तना' ये दो भाग मिलेंगे। यह एक आश्चर्य की बात है कि पेड़-पौधों को जिस तरह ही रखो, जड़ नीचे की ओर जाएगी व तना ऊपर की ओर उठेगा। एक गमले में पौधा था। परीक्षण करने के लिए कुछ दिन गमले को औंधा लटकाए रखा। पौधे का सिर नीचे की तरफ़ लटका रहा और जड़ ऊपर की ओर रही। दो-एक दिन बाद क्या देखता हूँ कि जैसे पौधे को भी सब भेद मालूम हो गया हो। उसकी सब पत्तियाँ और डालियाँ टेढ़ी होकर ऊपर की तरफ़ उठ आईं तथा जड़ घूमकर

नीचे की ओर लटक गई। तुमने कई बार सर्दियों में मूली काटकर बोई होगी। देखा होगा, पहले पत्ते व फूल नीचे की ओर रहे। कुछ दिन बाद देखोगे कि पत्ते और फूल ऊपर की ओर उठ आए हैं।

हम जिस तरह भोजन करते हैं, पेड़-पौधे भी उसी तरह भोजन करते हैं। हमारे दाँत हैं, कठोर चीज़ खा सकते हैं। नन्हें बच्चों के दाँत नहीं होते वे केवल दूध पी सकते हैं। पेड़-पौधों के भी दाँत नहीं होते, इसलिए वे केवल तरल द्रव्य या वायु से भोजन ग्रहण करते हैं। पेड़-पौधे जड़ के द्वारा माटी से रस-पान करते हैं। चीनी में पानी डालने पर चीनी गल जाती है। माटी में पानी डालने पर उसके भीतर बहुत-से द्रव्य गल जाते हैं। पेड़-पौधे वे ही तमाम द्रव्य सोखते हैं। जड़ों को पानी न मिलने पर पेड़ का भोजन बंद हो जाता है, पेड़ मर जाता है।

सूक्ष्मदर्शी से अत्यंत सूक्ष्म पदार्थ स्पष्ट रूप से देखे जा सकते हैं। पेड़ की डाल अथवा जड़ का इस यंत्र द्वारा परीक्षण करके देखा जा सकता है कि पेड़ में हज़ारों-हज़ार नल हैं। इन्हीं सब नलों के द्वारा माटी से पेड़ के शरीर में रस का संचार होता है।

इसके अलावा वृक्ष के पत्ते हवा से आहार ग्रहण करते हैं। पत्तों में अनगिनत छोटे-छोटे मुँह होते हैं। सूक्ष्मदर्शी के जरिए अनगिनत मुँह पर अनगिनत होंठ देखे जा सकते हैं। जब आहार करने की ज़रूरत न हो तब दोनों होंठ बंद हो जाते हैं। जब हम श्वास-प्रश्वास ग्रहण करते हैं तब प्रश्वास के साथ एक प्रकार की विषाक्त वायु बाहर निकलती है, उसे 'अंगारक' वायु कहते हैं। अगर यह ज़हरीली हवा पृथ्वी पर इकट्ठी होती रहे तो तमाम जीव-जंतु कुछ ही दिनों में उसका सेवन करके नष्ट हो सकते हैं। ज़रा विधाता की करुणा का चमत्कार तो देखो, जो जीव-जंतुओं के लिए जहर है, पेड़-पौधे उसी का सेवन करके उसे पूर्णतया शुद्ध कर देते हैं। पेड़ के पत्तों पर जब सूर्य का प्रकाश पड़ता है, तब पत्ते सूर्य-ऊर्जा के सहारे 'अंगारक' वायु से अंगार निःशेष

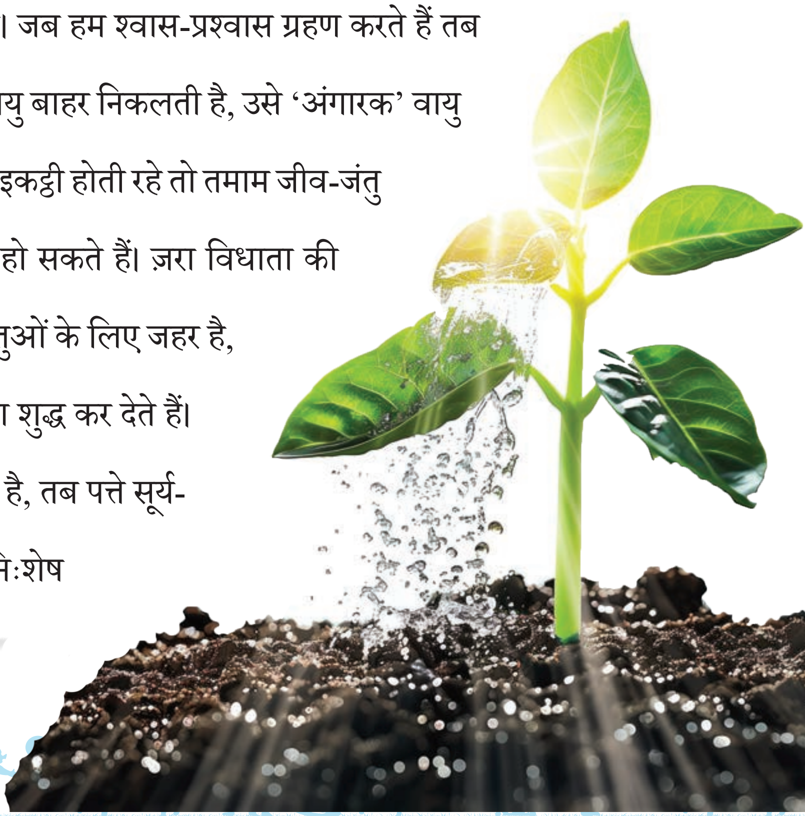

कर डालते हैं। और यही अंगार वृक्ष के शरीर में प्रवेश करके उसका संवर्द्धन करते हैं। पेड़-पौधे प्रकाश चाहते हैं। प्रकाश न मिलने पर ये बच नहीं सकते। पेड़-पौधों की सर्वाधिक कोशिश यही रहती है कि किसी तरह उन्हें थोड़ा-सा प्रकाश मिल जाए। यदि खिड़की के पास गमले में पौधा रखो, तब देखोगे कि सारी पत्तियाँ व डालियाँ अंधकार से बचकर प्रकाश की ओर बढ़ रही हैं। वन-अरण्य में जाने पर पता लगेगा कि तमाम पेड़-पौधे इस होड़ में सचेष्ट हैं कि कौन जल्दी से सिर उठाकर पहले प्रकाश को झपट ले। बेल-लताएँ छाया में पड़ी रहने से, प्रकाश के अभाव में मर जाएँगी। इसलिए वे पेड़ों से लिपटती हुई, निरंतर ऊपर की ओर अग्रसर होती रहती हैं।

अब तो समझ गए होंगे कि प्रकाश ही जीवन का मूलमंत्र है। सूर्य-किरण का स्पर्श पाकर ही पेड़ पल्लवित होता है। पेड़-पौधों के रेशे-रेशे में सूरज की किरणें आबद्ध हैं। ईंधन को जलाने पर जो प्रकाश व ताप बाहर प्रकट होता है, वह सूर्य की ही ऊर्जा है। पेड़-पौधे व समस्त हरियाली प्रकाश हथियाने के जाल हैं। पशु-डाँगर, पेड़-पौधे या हरियाली खाकर अपने प्राणों का निर्वाह करते हैं। पेड़-पौधों में जो सूर्य का प्रकाश समाहित है वह इसी तरह जंतुओं के शरीर में प्रवेश करता है। अनाज व सब्ज़ी न खाने पर हम भी बच नहीं सकते हैं। सोचकर देखा जाए तो हम भी प्रकाश की खुराक पाने पर ही जीवित हैं।

कोई-कोई पेड़ एक वर्ष के बाद ही मर जाते हैं। सब पेड़ मरने से पहले संतान छोड़ जाने के लिए व्यग्र हैं। बीज ही उनकी संतान है। बीज की सुरक्षा व सार-सँभाल के लिए पेड़ फूल की पंखुड़ियों से घिरा एक छोटा-सा घर तैयार करता है। फूलों से आच्छादित होने पर पेड़ कितना सुंदर दिखलाई पड़ता है। जैसे फूल-फूल के बहाने वह स्वयं हँस रहा हो। फूल की तरह सुंदर चीज़ और क्या है? ज़रा सोचो तो, पेड़-पौधे तो मटमैली माटी से आहार व विषाक्त वायु से अंगारक ग्रहण करते हैं, फिर इस अपरूप उपादान से किस तरह ऐसे सुंदर फूल खिलते हैं। तुमने कथा तो सुनी होगी— स्पर्शमणि की अर्थात पारस पत्थर की, जिसके स्पर्श से लोहा सोना हो जाता है। मेरे विचार से माँ की ममता ही वह मणि है। संतान पर स्नेह न्योछावर होते ही फूल खिलखिला उठते हैं। ममता का स्पर्श पाते ही मानो माटी व अंगार के फूल बन जाते हैं।

पेड़ों पर मुस्कराते फूल देखकर हमें कितनी खुशी होती है! शायद पेड़ भी कम प्रफुल्लित नहीं होते! खुशी के मौके पर हम अपने परिजनों को निमंत्रित करते हैं। उसी प्रकार फूलों की बहार छाने पर पेड़-पौधे भी अपने बंधु-बांधवों को बुलाते हैं। स्नेहसिक्त वाणी में पुकार सकते हैं, "कहाँ हो मेरे बंधु, मेरे बांधव, आज मेरे घर आओ। यदि रास्ता भटक जाओ, कहीं घर पहचान नहीं सको, इसलिए रंग-बिरंगे फूलों के निशान लगा रखे हैं। ये रंगीन पंखुड़ियाँ दूर से देख सकोगे।" मधुमक्खी व तितली के साथ वृक्ष की चिरकाल से घनिष्ठता है। वे दल-बल सहित फूल देखने आती हैं। कुछ पतंगे दिन के समय पक्षियों के डर से बाहर नहीं निकल सकते। पक्षी उन्हें देखते ही खा जाते हैं, इसलिए रात का अँधेरा घिरने तक वे छिपे रहते हैं। शाम होते ही उन्हें बुलाने की खातिर फूल चारों तरफ़ सुगंध-ही-सुगंध फैला देते हैं।

वृक्ष अपने फूलों में शहद का संचय करके रखते हैं। मधु-मक्खी व तितली बड़े चाव से मधुपान करती हैं। मधु-मक्खी के आगमन से वृक्ष का भी उपकार होता है। तुम लोगों ने फूल में पराग-कण देखे होंगे।

मधुमक्खियाँ एक फूल के पराग-कण दूसरे फूल पर ले जाती हैं। पराग-कण के बिना बीज पक नहीं सकता।

इस प्रकार फूल में बीज फलता है। अपने शरीर का रस पिलाकर वृक्ष बीजों का पोषण करता है। अब अपनी जिंदगी के लिए उसे मोह-माया का लोभ नहीं है। तिल-तिल कर संतान की खातिर सब-कुछ लुटा देता है। जो शरीर कुछ दिन पहले हरा-भरा था, अब वह बिल्कुल सूख गया है। अपने ही शरीर का भार उठाने की शक्ति क्षीण हो चली है। पहले हवा बयार करती हुई आगे बढ़ जाती थी। पत्ते हवा के संग क्रीड़ा करते थे। छोटी-

छोटी डालियाँ ताल-ताल पर नाच उठती थीं। अब सूखा पेड़ हवा का आघात सहन नहीं कर सकता। हवा का बस एक थपेड़ा लगते ही वह थर-थर काँपने लगता है। एक-एक करके सभी डालियाँ टूट पड़ती हैं। अंत में एक दिन अकस्मात पेड़ जड़ सहित भूमि पर गिर पड़ता है।

इस तरह संतान के लिए अपना जीवन न्योछावर करके वृक्ष समाप्त हो जाता है।

लेखक— *जगदीशचंद्र बसु*

अनुवादक— *शंकर सेन*

लेखक से परिचय

(1858–1937)

प्रसिद्ध वैज्ञानिक जगदीशचंद्र बसु का बचपन प्रकृति का अवलोकन करते हुए बीता। पेड़-पौधों, जीव-जंतुओं से प्रेम करते हुए उनकी शिक्षा आरंभ हुई। वे जीवविज्ञान, भौतिकी, वनस्पति विज्ञान तथा विज्ञान कथा लेखन में रूचि रखने वाले एक बहुविद् व्यक्ति थे। उन्होंने सिद्ध किया कि पौधों का एक निश्चित जीवनचक्र व एक प्रजनन प्रणाली होती है और वे अपने परिवेश के प्रति जागरूक होते हैं। इस प्रकार वे यह स्थापित करने वाले विश्व के पहले व्यक्ति थे कि पौधे किसी भी अन्य जीव रूप के समान होते हैं। विज्ञान जैसे विषय को भी चित्रात्मक साहित्यिक स्वरूप प्रदान करने वाले जगदीशचंद्र बसु ने सर्वप्रथम रेडियो तरंगों के द्वारा संचार स्थापित कर एक बड़ी वैज्ञानिक खोज की थी। 'पेड़ की बात' का बांग्ला से हिंदी में अनुवाद शंकर सेन ने किया है।

पाठ से

मेरी समझ से

(क) नीचे दिए गए प्रश्नों का सटीक उत्तर कौन-सा है? उसके सामने तारा (☆) बनाइए—

(1) "जैसे पौधे को भी सब भेद मालूम हो गया हो" पौधे को कौन-सा भेद पता लग गया?

- उसे उल्टा लटकाया गया है।
- उसे किसी ने सजा दी है।
- बच्चे को गमला रखना नहीं आया।
- प्रकाश ऊपर से आ रहा है।

(2) पेड़-पौधे जीव-जंतुओं के मित्र कैसे हैं?

- हमारे जैसे ही साँस लेते हैं।
- हमारे जैसे ही भोजन ग्रहण करते हैं।
- हवा को शुद्ध करके सहायता करते हैं।
- धरती पर हमारे साथ ही जन्मे हैं।

(ख) अब अपने मित्रों के साथ चर्चा कीजिए और कारण बताइए कि आपने ये उत्तर ही क्यों चुने?

पंक्तियों पर चर्चा

पाठ में से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। इन्हें ध्यान से पढ़िए और इन पर विचार कीजिए। आपको इनका क्या अर्थ समझ में आया? अपने विचार अपने समूह में साझा कीजिए और अपनी लेखन पुस्तिका में लिखिए।

(क) "पेड़-पौधों के रेशे-रेशे में सूरज की किरणें आबद्ध हैं। ईंधन को जलाने पर जो प्रकाश व ताप बाहर प्रकट होता है, वह सूर्य की ही ऊर्जा है।"

(ख) "मधुमक्खी व तितली के साथ वृक्ष की चिरकाल से घनिष्ठता है। वे दल-बल सहित फूल देखने आती हैं।"

मिलकर करें मिलान

पाठ में से चुनकर कुछ वाक्यांश नीचे दिए गए हैं। अपने समूह में इन पर चर्चा कीजिए और इन्हें इनके सही अर्थ या संदर्भ से मिलाइए। इसके लिए आप शब्दकोश, इंटरनेट या अपने शिक्षकों की सहायता ले सकते हैं।

वाक्यांश	अर्थ या संदर्भ
1. बीज का ढक्कन दरक गया	1. मटमैली माटी और विषाक्त वायु से सुंदर-सुंदर फूलों में परिवर्तित होते हैं।
2. उसे 'अंगारक' वायु कहते हैं	2. जीवन के लिए सूर्य का प्रकाश आधारशक्ति या महत्वपूर्ण है।
3. पत्ते सूर्य ऊर्जा के सहारे 'अंगारक' वायु से अंगार निःशेष कर डालते हैं	3. अपनी संपन्नता और भावी पीढ़ी की उत्पत्ति से प्रसन्न-संतुष्ट।
4. प्रकाश ही जीवन का मूलमंत्र है	4. साँस छोड़ने पर निकलने वाली वायु-कार्बन डाईआक्साइड।
5. जैसे फूल-फूल के बहाने वह स्वयं हँस रहा हो	5. सूर्य के प्रकाश से पत्ते विषाक्त वायु के प्रभाव को नष्ट कर देते हैं।
6. इस अपरूप उपादान से किस तरह ऐसे सुंदर फूल खिलते हैं	6. बीज के दोनों दलों में दरार आ गई या फट गए।

सोच-विचार के लिए

पाठ को एक बार फिर से पढ़िए, पता लगाइए और लिखिए—

(क) बीज के अंकुरित होने में किस-किस का सहयोग मिलता है?

(ख) पौधे अपना भोजन कैसे प्राप्त करते हैं?

लेख की रचना

इस लेख में एक के बाद एक विचार को लेखक ने सुसंगत रूप से प्रस्तुत किया है। गमले को औंधा लटकाना या मूली काटकर बोना जैसे उदाहरण देकर बात कहना इस लेख का एक तरीका है। अपने तथ्य को वास्तविकता या व्यावहारिकता से जोड़ना भी इस लेख की विशेषता है।

(क) जैसे लेखक ने 'पेड़ की बात' कही है वैसे ही अपने आस-पास की चीजें देखिए और किसी एक चीज़ पर लेख लिखिए, जैसे—गेहूँ की बात।

(ख) उसे कक्षा में सबके साथ साझा कीजिए।

अनुमान या कल्पना से

अपने समूह में मिलकर चर्चा कीजिए।

(क) "इस तरह संतान के लिए अपना जीवन न्योछावर करके वृक्ष समाप्त हो जाता है।" वृक्ष के समाप्त होने के बाद क्या होता है?

(ख) पेड़-पौधों के बारे में लेखक की रुचि कैसे जागृत हुई होगी?

प्रवाह चार्ट

बीज से बीज तक की यात्रा का आरेख पूरा कीजिए—

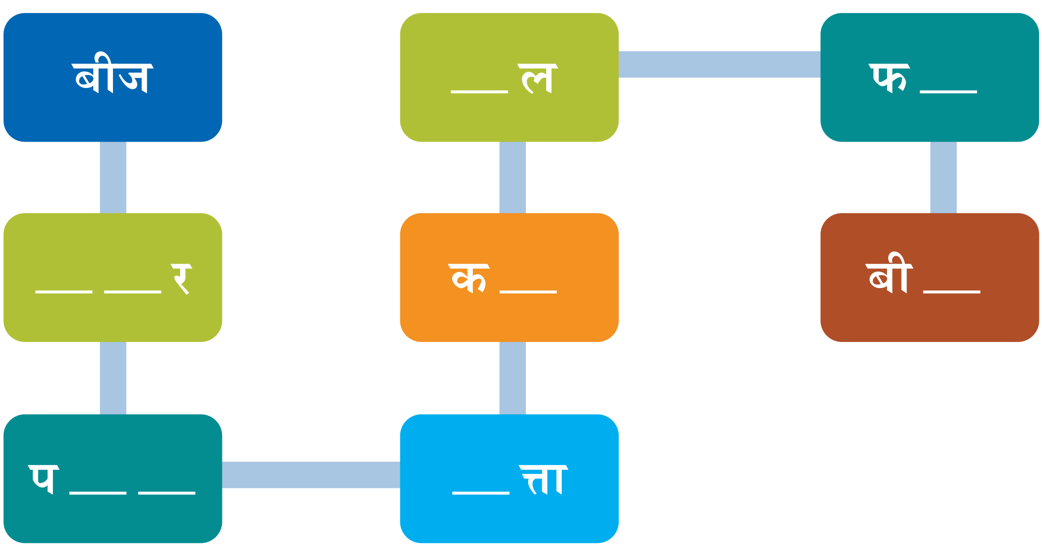

अंकुरण

- मिट्टी के किसी भी पात्र में मिट्टी भरकर उसमें राजमा या चने के 4–5 बीज बो दीजिए।
- हल्का-सा पानी छिड़क दीजिए।
- 3–4 दिन तक थोड़ा-थोड़ा पानी डालिए।
- अब इसमें आए परिवर्तन लेखन पुस्तिका में लिखिए।

(संकेत— एक दिन में पौधे की लंबाई कितनी बढ़ती है, कितने पत्ते निकले, प्रकाश की तरफ़ पौधे मुड़े या नहीं आदि।)

शब्दों के रूप

नीचे दिए गए चित्र को देखिए।

यहाँ मिट्टी से जुड़े, कुछ शब्द नीचे दिए गए हैं जो उसकी विशेषता बता रहे हैं। अब आप पेड़, सर्दी, सूर्य जैसे शब्दों की विशेषता बताने वाले शब्द बॉक्स बनाकर लिखिए—

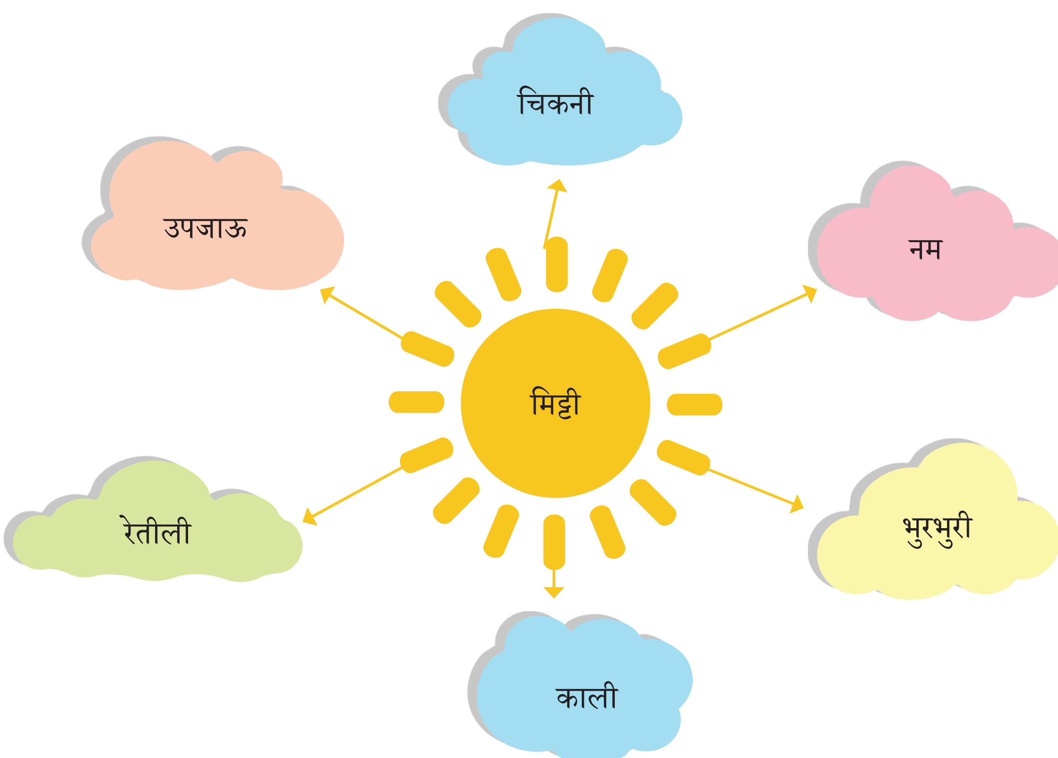

पाठ से आगे

मेरे प्रिय

नीचे दी गई तालिका से प्रत्येक के लिए अपनी पसंद के तीन-तीन नाम लिखिए—

फूल	पक्षी	वृक्ष	पुस्तक	खेल

आज की पहेली

इस शब्द सीढ़ी में पाठ में आए शब्द हैं। उन्हें पूरा कीजिए और पाठ में रेखांकित कीजिए—

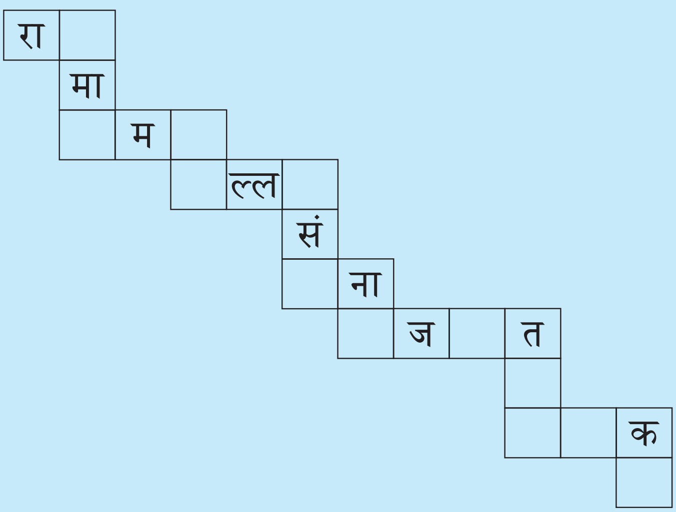

खोजबीन के लिए

इंटरनेट कड़ियों का प्रयोग करके आप जगदीशचंद्र बसु के बारे में और जान-समझ सकते हैं—

- जगदीशचंद्र बसु
- जगदीशचंद्र बसु— एक विलक्षण और संवेदनशील वैज्ञानिक

पढ़ने के लिए

आओ बच्चो तुम्हें दिखाएँ झाँकी हिंदुस्तान की

आओ बच्चो, तुम्हें दिखाएँ झाँकी हिंदुस्तान की
इस मिट्टी से तिलक करो ये धरती है बलिदान की
वंदे मातरम्। वंदे मातरम्।
उत्तर में रखवाली करता पर्वतराज विराट है
दक्षिण में चरणों को धोता सागर का सम्राट है
जमुना जी के तट को देखो गंगा का ये घाट है
बाट-बाट में हाट-हाट में यहाँ निराला ठाठ है
देखो, ये तस्वीरें अपने गौरव की अभिमान की
इस मिट्टी से तिलक करो ये धरती है बलिदान की
वंदे मातरम्। वंदे मातरम्।
ये है अपना राजपूताना नाज इसे तलवारों पे
इसने सारा जीवन काटा बरछी तीर कटारों पे
ये प्रताप का वतन पला है आज़ादी के नारों पे
कूद पड़ी थी यहाँ हज़ारों पद्मिनियाँ अंगारों पे
बोल रही है कण-कण से कुर्बानी राजस्थान की
इस मिट्टी से तिलक करो ये धरती है बलिदान की
वंदे मातरम्। वंदे मातरम्।

देखो, मुल्क मराठों का ये यहाँ शिवाजी डोला था
मुगलों की ताकत को जिसने तलवारों पे तोला था
हर पर्वत पे आग जली थी हर पत्थर एक शोला था
बोली हर-हर महादेव की बच्चा-बच्चा बोला था
शेर शिवाजी ने रखी थी लाज हमारी शान की
इस मिट्टी से तिलक करो ये धरती है बलिदान की
वंदे मातरम्। वंदे मातरम्।
जलियाँवाला बाग ये देखो, यहीं चली थी गोलियाँ
ये मत पूछो किसने खेली यहाँ खून की होलियाँ
एक तरफ़ बंदूकें दन-दन एक तरफ़ थी टोलियाँ
मरनेवाले बोल रहे थे इंकलाब की बोलियाँ
यहाँ लगा दी बहनों ने भी बाज़ी अपनी जान की
इस मिट्टी से तिलक करो ये धरती है बलिदान की
वंदे मातरम्। वंदे मातरम्।
ये देखो बंगाल यहाँ का हर चप्पा हरियाला है
यहाँ का बच्चा-बच्चा अपने देश पे मरनेवाला है
ढाला है इसको बिजली ने भूचालों ने पाला है
मुट्ठी में तूफ़ान बँधा है और प्राण में ज्वाला है
जन्मभूमि है यही हमारे वीर सुभाष महान की
इस मिट्टी से तिलक करो ये धरती है बलिदान की
वंदे मातरम्। वंदे मातरम्।

— कवि प्रदीप

14

विनम्र एवं उदार शासक- अहिल्याबाई होल्कर

भारत का इतिहास महान योद्धाओं, शूरवीरों और क्रांतिकारियों की प्रेरणादायी गाथाओं से भरा हुआ है। इन महान योद्धाओं में पुरुषों के साथ-साथ अनेक महिलाओं के नाम भी शामिल हैं। अहिल्याबाई होल्कर उन्हीं योद्धाओं में से एक हैं। अतः उनका नाम स्वतंत्र भारत में बहुत ही सम्मान के साथ लिया जाता है। अहिल्याबाई होल्कर एक ऐसी शासक थीं जिन्होंने प्रजा हित में अनेक महत्वपूर्ण कार्य किए। उनमें अनेक उत्कृष्ट गुण विद्यमान थे। साथ ही उन्होंने अंधविश्वासों और रूढ़ियों का भी जमकर विरोध किया। वे अँधेरे में प्रकाश-किरण के समान थीं। अपने उत्कृष्ट विचारों एवं नैतिक आचरण के चलते ही समाज ने उन्हें देवी का दर्जा दिया। भारत की विरासत की परंपराओं और आस्था को समृद्ध करने में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा, जिन्हें आज भी याद किया जाता है।

अहिल्याबाई का जन्म 31 मई 1725 को महाराष्ट्र के वर्तमान अहमदनगर जिले के चौंडी गाँव में हुआ था। उनके पिता का नाम मनकोजी राव शिंदे और माता का नाम सुशीला बाई था। उनके पिता गाँव के साधारण किसान और पाटिल थे। अहिल्याबाई उनकी एकमात्र पुत्री थी। अहिल्याबाई निर्भीक, चंचल और वाक्पटु थी।

एक समय की बात है। मराठों की सेना का कैंप चौंडी गाँव के बाहर मैदान में था, जिसे देखने के लिए बच्चों की भीड़ लग गई थी। भीड़ को चीरती हुई एक नौ वर्ष की बालिका आगे बढ़ी और सूबेदार के आगे जाकर खड़ी हो गई। सूबेदार ने उसे ऊपर से नीचे तक देखा। एक साधारण रूप-रंग की बच्ची का

साहस देखकर वह अचंभित हुआ। उन्होंने मुस्कुराते हुए प्रश्न किया, "तुम यहाँ क्यों आई हो?" निर्भीक बालिका ने कहा, "आपको देखने आई हूँ।"

"अच्छा बताओ मैं कौन हूँ?" उसने कहा, "मल्हार राव होल्कर।"

"तुम्हें कैसे पता मैं मल्हार राव होल्कर हूँ?"

"मैंने अपने पिता जी से आपका नाम सुना है।"

एक छोटी-सी सौम्य, शांत, तेजस्विनी बालिका ने मालवा के सूबेदार मल्हार राव को अपने गुणों से इस कदर प्रभावित किया कि वे अपने पुत्र खंडे राव के विवाह के लिए मानकोजी के समक्ष प्रस्ताव रखने से भी नहीं हिचकिचाए। इतिहासकारों के अनुसार अहिल्याबाई का विवाह महज 10 वर्ष की आयु में ही होल्कर वंशीय राज्य के संस्थापक मल्हार राव होल्कर के पुत्र खंडे राव के साथ हो गया। बालिका के संस्कारों से प्रभावित मल्हार राव आश्वस्त थे कि यह बालिका अपने संस्कारों, कुशल व्यवहार और सेवा भावना से सभी का हृदय जीत लेगी । यह खंडे राव को सही दिशा में लाने में अवश्य सफल होगी और हुआ भी यही। बालिका अहिल्या में आदर्श भारतीय नारी के सभी गुण विद्यमान थे। उनके विवेक, नम्रता, सेवा, त्याग और सहनशीलता जैसे गुणों का ही यह परिणाम था कि खंडे राव में आत्म-गौरव व वीरता का भाव उत्पन्न हुआ।

अहिल्याबाई धर्म-परायण स्त्री थीं। वह शिव की अनन्य भक्त थीं और छोटी उम्र से ही अपनी संस्कृति पर गर्व करती थीं। अहिल्याबाई अपने बुद्धि-चातुर्य के कारण जानी जाती थीं। अपने कुशाग्र बुद्धिबल से समस्याओं का सहज समाधान कर लेती थीं। मल्हार राव होल्कर द्वारा उन्हें अल्प आयु में ही कई महत्वपूर्ण दायित्व दिए गए।

अहिल्याबाई का जीवन सदा चुनौतियों भरा रहा। उनके जीवन में अनेक समस्याएँ आईं; लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी। भरतपुर का युद्ध मल्हार राव, खंडे राव और देवी अहिल्याबाई की मानो परीक्षा लेने ही आया था। जाटों और मराठों के बीच घमासान युद्ध हुआ । इस युद्ध की कीमत खंडे राव के जीवन से चुकानी पड़ी। मल्हार राव के लिए पुत्र की मृत्यु की वेदना असहनीय थी, वहीं अहिल्याबाई ने सती

होने का प्रण लिया, लेकिन मल्हार राव के समझाने के बाद अहिल्या ने सती होने का विचार त्यागा और जी-जान से प्रजा की सेवा करने का दायित्व निभाया। मल्हार राव के संरक्षण व निर्देशन में अहिल्याबाई राजकाज में कुशल हो गईं। मल्हार राव कुशल शासक थे। कई बार युद्धों में व्यस्त होने के कारण राज्य से जब वे बाहर रहते तो पत्रों के माध्यम से अहिल्याबाई का मार्गदर्शन भी करते थे।

होल्कर राज्य के संस्थापक, मराठा साम्राज्य के भीष्म पितामह मल्हार राव का 1766 ईस्वी में निधन हो गया। मराठा साम्राज्य के आधार स्तंभों में से एक पराक्रमी, शक्तिशाली और स्वामी भक्त सरदार मल्हार राव के जाने से मराठा साम्राज्य को भी गहरा आघात लगा था। एक के बाद एक अपने प्रियजनों पहले पति और अब पिता तुल्य ससुर का इस तरह बिछड़ना अहिल्याबाई के लिए असहनीय था। अहिल्याबाई का पुत्र माले राव मात्र 21 वर्ष की आयु में मालवा की गद्दी पर आसीन हुआ। अहिल्याबाई के लिए अपनी प्रजा के हित के लिए कार्य करने का बड़ा दायित्व था।

शासन संभालने के कुछ दिनों बाद ही साल 1767 में उनके जवान पुत्र माले राव की भी मृत्यु हो गई। पति, जवान पुत्र और पिता समान ससुर को खोने के बाद भी उन्होंने जिस तरह साहस से काम किया, वह अत्यंत सराहनीय है।

महारानी अहिल्याबाई एक विनम्र एवं उदार शासक थीं जिनमें दया और परोपकार की भावना कूट-कूट कर भरी हुई थी। उन्होंने अपना पूरा जीवन समाज सेवा के लिए समर्पित कर दिया था। अहिल्याबाई हमेशा अपनी प्रजा और गरीबों की भलाई के बारे में सोचती रहती थीं। उन्होंने समाज में विधवा महिलाओं की स्थिति और महिलाओं की शिक्षा पर उल्लेखनीय कार्य किया। अपने जीवन में तमाम परेशानियाँ झेलने के बाद जिस तरह अहिल्याबाई ने अपनी नारी शक्ति का इस्तेमाल किया था, वह काफी प्रशंसनीय है। 13 अगस्त 1795 ईस्वी में अहिल्याबाई होल्कर की मृत्यु हो गई।

महारानी का हृदय समाज के सभी वर्गों के लिए धड़कता था। उन्होंने काशी विश्वनाथ मंदिर के साथ-साथ पूरे देश में अनेक मंदिरों का निर्माण व पुनर्निर्माण का कार्य करवाया। विभिन्न कल्याणकारी व परोपकारी कार्यों द्वारा राष्ट्र निर्माण में महती योगदान दिया। देश में धार्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय एकता कायम करने के लिए सराहनीय प्रयास किए। महारानी अहिल्याबाई अपने धर्माचरण, शासन प्रबंध,

विद्वानों का सम्मान व न्याय, दानशीलता, उदार धर्म नीति, भक्ति भावना, वीरता, त्याग व बलिदान, साहस, शौर्य से परिपूर्ण गुणों के कारण युगों-युगों तक अमर रहेंगी। इतिहास के दिग्गज शासकों के गुणों से परिपूर्ण रानी हम सभी की प्रेरणास्रोत हैं। रानी का नाम सदा स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाएगा। भारत सरकार ने 25 अगस्त सन् 1996 में उनके सम्मान में एक डाक टिकट जारी किया था। इसके अलावा अहिल्याबाई के नाम पर एक पुरस्कार भी शुरू किया गया । भारत सरकार तथा विभिन्न राज्यों की सरकारों के द्वारा उनकी प्रतिमाएँ बनवाई गई हैं तथा उनके नाम से कई कल्याणकारी योजनाओं का क्रियान्वयन किया जा रहा है।

लेखन व संकलन

बलदाऊ राम साहू

संकलक/ लेखक से परिचय

(जन्म – 21 फरवरी 1958)

श्री बलदाऊ राम साहू शिक्षाविद व बाल साहित्यकार हैं। वे हिंदी व लोक भाषा छत्तीसगढ़ी के सशक्त रचनाकार हैं। अब तक उनकी तीस से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हैं- सुरुज नवा उगइया हे, बगरे हे अंजोर मया के छत्तीसगढ़ी ग़ज़ल संग्रह, मोटरा संग मया नंदागे और ददरिया में लोकतत्व-एक दृष्टि उनकी चर्चित पुस्तकें हैं। बाल-साहित्य में कविता, कहानी, चित्रकथा के बीस से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हैं।

पाठ से

मेरी समझ से

नीचे दिए गए प्रश्नों का सटीक उत्तर कौन-सा है? उसके सामने (*) बनाइए –

1. अहिल्याबाई का जन्म कब हुआ था?

- 31 मई 1766 में
- 31 मई 1795 में
- 31 मई 1767 में
- 31 मई 1725 में

2. होल्कर राज्य के संस्थापक थे –

- अहिल्याबाई होल्कर
- मल्हार राव होल्कर
- माले राव होल्कर
- खंडे राव होल्कर

3. "भीड़ को चीरती हुई एक नौ वर्ष की बालिका आगे बढ़ी और सूबेदार के आगे जाकर खड़ी हो गई।"

उपरोक्त वाक्य से बालिका अहिल्या बाई के किस स्वभाव का पता चलता है कि...

- वह परोपकारी थी।
- वह सहनशील थी।
- वह तेजस्वी थी।
- वह निर्भीक थी।

मिलकर करें मिलान

पाठ में से कुछ महत्वपूर्ण बिंदु स्तंभ 1 में दिए गए हैं और उनके भाव स्तंभ 2 में दिए गए हैं। अपने समूह में इन पर चर्चा कीजिए और रेखा खींचकर सही भाव से मिलान कीजिए।

स्तंभ 1	स्तंभ 2
1. मराठों की सेना के सूबेदार थे	1. माले राव
2. मराठों और जाटों के बीच हुए युद्ध में मृत्यु हुई	2. अहिल्याबाई होल्कर
3. 21 वर्ष की अल्प आयु में गद्दी में आसीन हुए	3. मल्हार राव होल्कर
4. 1996 में किसके सम्मान में डाक टिकट जारी हुए	4. खंडे राव

पंक्तियों पर चर्चा

पाठ से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। इन्हें ध्यान से पढ़िए और इन पर विचार कीजिए। आपको इनका क्या अर्थ समझ में आया? अपने विचार अपनी कक्षा में साझा कीजिए और लिखिए।

(क) बालिका अहिल्या में आदर्श भारतीय नारी के सभी गुण विद्यमान थे। उनके विवेक, नम्रता, सेवा, त्याग और सहनशीलता जैसे गुणों का ही यह परिणाम था कि खंडे राव में आत्म-गौरव व वीरता का भाव उत्पन्न हुआ।

(ख) अहिल्याबाई का जीवन सदा चुनौतियों से भरा रहा। उनके जीवन में अनेक समस्याएँ आईं, लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी।

सोच-विचार के लिए

निबंध को एक बार फिर से पढ़िए और निम्नलिखित के बारे में पता लगाकर अपनी लेखन पुस्तिका में लिखिए–

(क) अहिल्याबाई एक विनम्र और उदार शासक थीं, जिनमें दया और परोपकार की भावना कूट-कूट कर भरी हुई थी।

(ख) मल्हार राव होल्कर ने अपने पुत्र खंडे राव का विवाह अहिल्याबाई से क्यों किया। इन कथनों के समर्थन में पाठ से खोजकर लिखिए।

अनुमान या कल्पना से –

1. मल्हार राव के लिए पुत्र की मृत्यु की वेदना असहनीय थी, वहीं अहिल्याबाई ने सती होने का प्रण लिया, लेकिन मल्हार राव के समझाने के बाद अहिल्या ने सती होने का विचार त्याग दिया। उन्होंने यह कदम क्यों उठाया होगा?

2. अपनी कक्षा में चर्चा कीजिए –

(क) 'अहिल्याबाई हमेशा अपनी प्रजा और गरीबों की भलाई के बारे में सोचती रहती थीं।' अहिल्याबाई के कौन-कौन से कार्यों से उनके इस गुण का पता चलता है?

(ख) इस पाठ में अहिल्याबाई के जीवन के बारे में आपने विस्तार से जाना। आप उनके जीवन के किस घटना से अत्यधिक प्रभावित हुए?अपने विचार लिखिए।

शब्दों की बात

नीचे शब्दों से जुड़ी कुछ गतिविधियाँ दी गई हैं। इन्हें करने के लिए आप शब्दकोश, अपने शिक्षकों और मित्रों की सहायता भी ले सकते हैं।

इस पाठ में ऐसे अनेक शब्द आए हैं जो अहिल्याबाई के गुणों को बताते हैं। उन शब्दों की पहचान करके अपने समूह से चर्चा कीजिए एवं उन्हें निर्धारित स्थान पर लिखिए।

संकेत – (सहनशीलता, त्याग आदि)

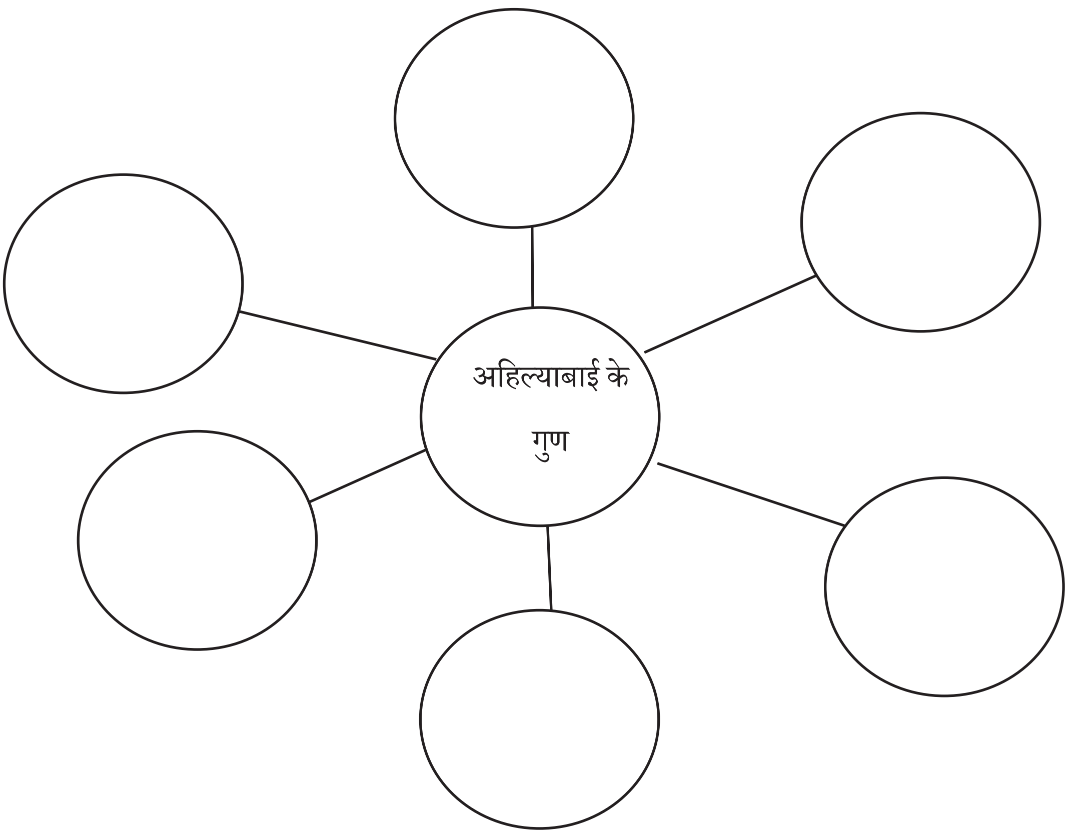

पाठ से आगे

आपकी बात

अपने समूह में चर्चा कीजिए –

(क) 'भारत का इतिहास महान योद्धाओं, शूरवीरों एवं क्रांतिकारियों की प्रेरणादायी गाथाओं से भरा हुआ है।'

आप भारत के जिन क्रांतिकारियों से परिचित है? चर्चा कीजिए।

(ख) अहिल्याबाई होल्कर के पिता एक साधारण किसान थे।

आपके पिताजी क्या व्यवसाय करते हैं?

डाक टिकट –

'भारत सरकार ने 25 अगस्त 1996 में उनके सम्मान में एक डाक टिकट जारी किया था।'

(क) क्या आपने कभी डाक टिकट देखा है? संसार के सभी देश डाक टिकट जारी करते हैं। भारत में भी समय-समय पर विभिन्न डाक टिकट जारी किए जाते हैं। ऐसे ही महान विभूतियों के नाम से जारी डाक टिकटों का संकलन अपने शिक्षक, सहपाठी एवं इंटरनेट की सहायता से कीजिए।

(ख) आज के संदर्भ में डाक टिकट की क्या उपयोगिता है? समूह में चर्चा कीजिए।

(ग) डाक टिकट कहाँ मिलता है?

शब्दों की बात –

रानी चिन्नमा

रानी लक्ष्मी बाई

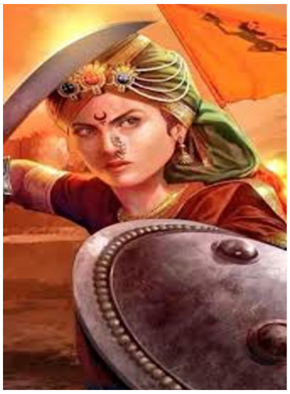

रानी दुर्गावती

रानी कर्णावती

इन वीरांगनाओं के बारे में शिक्षक से चर्चा करते हुए दस-दस वाक्य लिखिए।

संग्रहालय ऐसा स्थान होता है जहाँ विभिन्न कालों की प्राचीन वस्तुएँ देखने को मिलती हैं।

अपने आस-पास के किसी संग्रहालय में जाकर देखिए आपको क्या-क्या ऐतिहासिक वस्तुएँ देखने को मिलती हैं, उनकी सूची बनाकर कक्षा में बताइए।

अस्त्र-शस्त्र –

प्राचीनकाल में राजा-महाराजाओं द्वारा युद्ध में विभिन्न प्रकार के अस्त्र-शस्त्रों का प्रयोग किया जाता था।

तलवार

ढाल

भाला

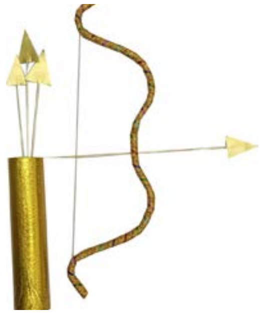

तीर - धनुष

क. इनके बारे में जानकारी एकत्रित करें। इन्हें मिट्टी अथवा कागज़ की सहायता से बनाने का प्रयास करें।

ख. ऊपर दिए गए चित्रों में से अस्त्र और शस्त्र छाँटिए।

आओ मिलकर करें –

1. अहिल्याबाई होल्कर के जीवन का नाट्य रूपांतरण कर अभिनय कीजिए।

2. अपने देश/राज्य के योद्धाओं, शूरवीरों और क्रांतिकारियों के मुखौटे तैयार करें।

झरोखे से –

हमने अहिल्याबाई के बारे में जाना है। अब यहाँ भारत की एक और वीरांगना अवन्तीबाई के बारे में जानेंगे।

अवंतीबाई लोधी

अवंतीबाई लोधी का जन्म 16 अगस्त सन् 1831 को मनकेहड़ी गाँव जिला सिवनी में जमींदार राव जुझार सिंह के घर लोधी परिवार में हुआ था। उनका विवाह रामगढ़ (वर्तमान डिंडोरी) के राजा लक्ष्मण सिंह के पुत्र राजकुमार विक्रमादित्य सिंह लोधी से हुआ था। उनके दो बच्चे कुंवर अमन सिंह और कुंवर शेर सिंह थे। सन् 1850 में राजा लक्ष्मण सिंह की मृत्यु हो गई और राजा विक्रमादित्य ने गद्दी संभाली। राजा के बीमार होने के समय उनके दोनों बेटे नाबालिग ही थे। उस परिस्थिति में एक रानी के रूप में उन्होंने राज्य के मामलों को कुशलतापूर्वक संचालित किया। अंग्रेजों को राजा के नाबालिग बेटों के संरक्षक के रूप में, खबर मिलने पर, उन्होंने रामगढ़ राज्य में "कोर्ट ऑफ वार्ड्स" की कार्रवाई की और राज्य के प्रशासन के लिए शेख सरबराहकार को नियुक्त किया। रानी अवंतिबाई को मोहम्मद अब्दुल्ला के साथ रामगढ़ भेज दिया गया। इसे अपना अपमान मानते हुए रानी ने सरबराहकार को रामगढ़ से निष्कासित कर दिया। इस साहसिक कार्य से रानी की लोकप्रियता और भी बढ़ गई। रामगढ़ में महल के खंडहरों से कुछ दूर पहाड़ी के नीचे की ओर रानी की समाधि है। रानी अवंतीबाई लोधी भारत की प्रथम शहीद वीरांगना थीं।

साझी समझ –

इस निबंध में अहिल्याबाई होल्कर के कौन-से गुण ने आपको सबसे अधिक प्रभावित किया है और क्यों? उसको साथियों को बताइए।

खोजबीन के लिए

क. निम्नलिखित शासकों के चित्र एवं जानकारी एकत्रित कर कक्षा में चर्चा कीजिए।

- महाराणा प्रताप
- वीर शिवाजी
- रानी लक्ष्मीबाई
- बाजीराव पेशवा
- सम्राट अशोक
- बस्तर के राजा प्रवीर चंद्र भंज देव

ख. अहिल्याबाई होल्कर ने महिलाओं की शिक्षा के लिए कई उल्लेखनीय कार्य किए हैं। इसी तरह के कार्य करने वाली महिलाओं के उल्लेखनीय कार्यों की सूची तैयार कीजिए।

शब्दकोश

यहाँ आपके लिए एक छोटा-सा शब्दकोश दिया गया है। इस शब्दकोश में वे शब्द हैं जो विभिन्न पाठों में आए हैं और आपके लिए नए हो सकते हैं। किसी-किसी शब्द के कई अर्थ भी हो सकते हैं। पाठ के संदर्भ से जोड़कर आप यह अनुमान स्वयं लगाएँ कि कौन-सा अर्थ पाठ के लिए अधिक उपयुक्त है।

कहीं-कहीं शब्दों के अनेक समानार्थी भी दिए गए हैं। इससे आप प्रसंग के अनुसार अनुकूल शब्द का चयन करना सीख सकेंगे। यह शब्दकोश आपको शब्दों के न केवल सही अर्थ जानने में मदद करेगा अपितु शब्दों की सही वर्तनी भी सिखाएगा।

शब्द का अर्थ देने से पहले मूल शब्द के बाद कोष्ठक में एक संकेताक्षर दिया गया है। इन संकेतों से हमें शब्दों की भाषा और व्याकरण संबंधी जानकारी मिलती है। यहाँ जो संकेताक्षर अथवा संक्षिप्त रूप प्रयुक्त हुए हैं, वे इस प्रकार हैं—

अं.– अंग्रेज़ी	अ.– अव्यय	(अ.)– अरबी	अ.क्रि.– अकर्मक क्रिया
पु.– पुल्लिंग	फा.– फारसी	वि.– विशेषण	सं.– संस्कृत
स.क्रि.– सकर्मक क्रिया	सर्व.– सर्वनाम	स्त्री.– स्त्रीलिंग	

शब्दार्थ

अ

अंकुर [पु.सं.]– कली, नोंक, रोआँ, जल, रुधिर, विकास आदि के सूचक चिह्न

अंगारक [पु.सं.]– कार्बन, छोटा, अंगारा

अकस्मात [अ.सं.]– अचानक, संयोगवश, सहसा, बिना कारण

अचंभित [वि.]– चकित, विस्मित

अधर [वि.सं.]– होंठ, नीचा, अंतरिक्ष, पाताल

अधीर [वि.सं.]– धैर्यरहित, उतावला, आकुल, दृढ़तारहित

अनगिनत [वि.]– बेहिसाब, अगणित

अनुमति [स्त्री.सं.]– कोई काम करने, जाने-आने आदि के लिए किसी से ली गई स्वीकृति

अपरूप [वि.सं.]– कुरूप, भद्दा, अपूर्व

अप्रेंटिस [पु.अं.]– काम सीखने के लिए काम करने वाला व्यक्ति

अभिलाषा [स्त्री.सं.]– इच्छा, चाह, लोभ

अमराई [स्त्री.]– आम का बाग, उद्यान

अमावस [स्त्री.]– कृष्ण पक्ष की अंतिम रात्रि, अमावस्या

अरि-मस्तक [पु.सं.]– शत्रु का माथा

अर्पण [पु.सं]– देना, दान करना, भेंट करना, वापस करना

असबाब [पु.(अ.)]– आवश्यक सामग्री, चीज़, वस्तु, मुसाफिर के साथ का सामान

असुर [पु.सं.]– दैत्य, दानव, खल, बादल

अस्तबल [पु.(अ.)]– अश्वशाला, तबेला

आ

आगमन [पु.सं.]– लौटना, आना, प्राप्ति, उत्पत्ति

आघात [पु.सं.]– चोट, प्रहार, धक्का, घाव

आच्छादित [वि.सं.]– ढका हुआ, छिपा हुआ

आत्मबल [पु.]– आत्मा का बल, मन का बल

आबद्ध [वि.सं.]– बँधा हुआ, बाधित, जकड़ा हुआ, निर्मित

आहिस्ता [अ.फा.]– धीरे-से, धीमी आवाज़ से

उ

उदारता [स्त्री.सं.]– दानशीलता, उदार स्वभाव

उपादान [पु.सं.]– ग्रहण, स्वीकार, वह द्रव्य जिससे कोई वस्तु बने, प्रयोग

क

कंटोप [पु.]– वह टोपी जिससे कान ढके रहें

कपाल [पु.सं.]– खोपड़ी, मस्तक, घड़े का टुकड़ा, ढक्कन

करवाल [पु.सं.]– तलवार, खड्ग, नाखून

कलंकित [वि.सं.]– कलंकयुक्त, मोरचा लगा हुआ

कसौटी [स्त्री.]– परख, जाँच, एक काला पत्थर जिस पर सोना घिसकर परखा जाता है

क्रीडा [स्त्री.सं.]– खेल-कूद, किलोल, हास्य-विनोद

क्ष

क्षीण [पु.सं.]– दुर्बल, दुबला-पतला, क्षतिग्रस्त, घटा हुआ

ख

खरहरा [पु.]– कंघी करना, लोहे की कई दंतपंक्तियों वाली चौकोर कंघी जिससे घोड़े के बदन की गर्द साफ़ की जाती है

घ

घटा [स्त्री.सं.]– जल भरे बादलों का समूह, मेघमाला

घहर [अ.क्रि.]– पसरना, गरजना, गर्जन

घृणा [स्त्री.सं.]– नफरत, घिन

च

चित्त [पु.सं.]– मन, अंत:करण की चिंतना

चिरायु [वि.सं.]– दीर्घायु, बहुत दिन जीने वाला, चिरजीवी

चोगा [पु.फा.]– लंबा, ढीला-ढाला अँगरखा जिसका आगे का भाग खुला होता है, गाउन

छ

छटा [स्त्री.सं.]– शोभा, छवि, झलक, बिजली

छद्‌म [पु.सं.]– छल-कपट, बदला हुआ भेष

छहर [स्त्री.]– बिखरना, बिखरने की क्रिया

छीको [पु.]– रस्सी, तार आदि से बनी झोली जैसी चीज़ जिसे छत आदि से लटकाकर उस पर खाने-पीने की चीज़ें रखते हैं, सिकहर, छीका

ज

जन्मदात्री [स्त्री.]– माता, माँ, जननी

जलज [वि.]– कमल, जल में उत्पन्न

जलधर [पु.सं.]– बादल, मेघ

जौहरी [पु.(अ.)]– जवाहरात का रोज़गार करने वाला, रत्न-व्यवसायी, पारखी

त

तरुणाई [स्त्री.]– युवावस्था, जवानी

तरुवर [पु.सं.]– वृक्ष, पेड़

ताड़ [पु.]– एक लंबा वृक्ष जिसमें शाखाएँ नहीं होतीं सिर्फ़ सिरे पर पत्तियाँ होती हैं

तिमिर [पु.सं.]– अंधकार, आँख का एक रोग, अँधेरा

तुच्छातितुच्छ [वि.सं.]– एकदम गया-गुजरा, अत्यंत निकृष्ट

तुर्रा [पु.(अ.)]– टोपी आदि में लगी हुई कलगी, अनोखा

द

दरक [स्त्री.]– दरकने की क्रिया, दरार, चीर

दीवान [पु.फा.]– प्रधानमंत्री, राजा या बादशाह की बैठक या थाने का मुंशी जिसके ज़िम्मे लिखापढ़ी का काम होता है

दूब [स्त्री]– एक प्रकार की घास, दूर्वा

देववाणी [स्त्री.]– देवताओं की वाणी, आकाशवाणी

द्रव्य [पु.सं.]– वस्तु, पदार्थ, धन

ध

धरा [स्त्री.सं.]– पृथ्वी, धरती

धावा [पु.]– किसी को जीतने, लूटने आदि के लिए बहुत से लोगों का एक साथ दौड़ पड़ना, हमला

धृष्टतापूर्ण [स्त्री.सं.]– ढिठाई के साथ, उद्दंडतायुक्त, निर्दयता के साथ

न

नद [पु.सं.]– बड़ी नदी, सरिता

नाईं [अ.]– तरह, भाँति

निदान [पु.सं.]– अंत में, आखिर, आदि कारण, रोग का कारण, रोग का निर्णय

निरापद [वि.सं.]– निर्विघ्न, सुरक्षित, आपत्ति से रहित

निर्भीक [वि.सं.]– जो किसी से भय न खाए, निडर, निरापद

निषंग [पु.सं.]– तरकश, तूणीर, तलवार

नेकनामी [स्त्री.फा.]– सुख्याति, सुप्रसिद्धि, सुकीर्ति

नौसिखिया [वि.]– अनुभवहीन, जिसने हाल में ही सीखा हो

न्योछावर [स्त्री.]– समपर्ण करना, त्यागना

प

पठायो [स.क्रि.]– भेजना

पतियायो [स.क्रि.]– विश्वास करना, बात मानना

पराग-कण [पु.सं.]– फूल के भीतर की धूल, पुष्परज

पात्र [पु.सं.]– किरदार, अभिनेता, बरतन

पावस [पु.]– वर्षाऋतु, मानसून, समुद्र की ओर से आनेवाली वर्षा-सूचक हवा

पुतली [स्त्री.]– आँख के बीच का काला भाग जिसके मध्य में रूप ग्रहण करने वाली इंद्रिय होती है

पुनीत [वि.सं.]– पवित्र किया हुआ, शुद्ध

पुलकी [वि.सं.]– रोमांचयुक्त, आनंदित

पेचीदा [वि.फा.]– कठिन, उलझन वाला

पैठना [अ.क्रि.]– गहरे में जाना, प्रवेश करना

प्रफुल्लित [वि.]– खिला हुआ, अति प्रसन्न, प्रमुदित

प्राणवत्ता [स्त्री.सं.]– प्राणवान, जीवित होने के भाव

ब

बज्र-मय [वि.सं.]– कठोर, उग्र, भीषण

बड़ेन [पु.वि.]– उच्च, सामर्थ्यशाली

बदतर [वि.फा.]– अधिक बुरा, ज्यादा खराब

बरबस [अ.]– अकारण, बलपूर्वक, व्यर्थ

बहियन [स्त्री.]– बाँह, भुजा, बाजू

बहुतायत [स्त्री.]– अधिकता, बढ़ती, विशेषता

बांधव [पु.सं.]– निकट-संबंधी, भाई-बंधु, स्वजन

बाग [स्त्री.]– लगाम, रस्सी

बावरी [स्त्री.]– चौड़ा कुआँ जिसमें नीचे जाने के लिए सीढ़ियाँ बनी हों, जलाशय, बावली

बिहँसि [अ.क्रि.]– मंद-मंद मुस्कुराना, खिलना

भ

भटक्यो [अ.क्रि.]– भटकना, इधर-उधर फिरना

भ्रांति [स्त्री.सं.]– भ्रम, संदेह, चक्कर, अस्थिरता

म

मंदाग्नि [स्त्री.सं.]– पाचन शक्ति का दुर्बल हो जाना, हाजमे का बिगड़ जाना

मद [स्त्री.(अ.)]– खाता, लेखा, उन्माद, अहंकार

मधुबन (मधुवन) [पु.]– फूलों का बगीचा, बाग

मुद्राएँ [स्त्री.सं.]– मुख,हाथ, गर्दन आदि की कोई विशेष भावसूचक स्थिति, मुख चेष्टा, नाम की मोहरें

मुल्क [पु.(अ.)]– देश, राज्य, प्रदेश

मोहना [स.क्रि.]– लुभाना, छलना

र

रईस [पु.(अ.)]– उच्च वर्ग का आदमी, धनी, अमीर, शिष्ट

रकबा [पु.]– क्षेत्रफल, घिरी हुई ज़मीन, घेरा, अहाता

रण [पु.सं.]– युद्ध, संग्राम, लड़ाई, गति

रियासत [स्त्री.(अ.)]– राज, शासन, अमीरी

रेजीमेंट [स्त्री. अं.]– सेना का एक स्थायी विभाग, कर्नल के अधीन और कई टुकड़ियों में विभक्त

रोपना [स.क्रि.]– लगाना, जमाना, पौधा लगाना

रोमावलि [स्त्री.सं.]– रोमों की पंक्ति, रोयाँ

ल

लघु [वि.सं.]– छोटा, निर्बल, फुर्तीला, हल्का, कम

लट्टू होना [पु.]– मोहित होना, मुग्ध होना, हैरान होना

लौ [स्त्री.]– ज्वाला, दीपशिखा, चाह, आशा, कामना

व

वकालतनामा [पु.(अ.)]– किसी मुकदमें में वकील होने का प्रमाण-पत्र, वह लेख जिसके जरिए किसी वकील को किसी मुकदमें की पैरवी का अधिकार दिया जाए

वसुंधरा [स्त्री.सं.]– पृथ्वी, देश

वाद्ययंत्र [पु.सं.]– बाजा, बजाने का यंत्र

विकराल [वि.सं.]– भीषण, भयंकर

विगलित [वि.सं.]– पिघला हुआ, बहा हुआ, बिखरा हुआ, गिरा हुआ, सूखा हुआ, शिथिल

विज्ञापन [पु.सं.]– निवेदन, समाचार-पत्रों आदि में प्रचार

विषाक्त [वि.सं.]– विष मिश्रित

वीरगति [वि.सं.]– युद्धक्षेत्र में या युद्ध करते हुए मृत्यु

वैरी [वि.सं.]– शत्रु, शत्रुतापूर्ण, विरोधी, योद्धा

व्यग्र [वि.सं.]– व्याकुल, परेशान, घबराया हुआ, व्यस्त

श

शर्मिंदा [वि.फा.]– लज्जित, लजाया हुआ

शस्य-श्यामला [वि.सं.]– नई घास, फसल, अन्न, धान, श्रेष्ठ

श्राप [पु. सं.]– अमुक का बुरा हो ऐसी बुरी भावना व्यक्त करना, शाप, भर्त्सना

श्वास-प्रश्वास [पु.सं.]– साँस लेना और निकालना

स

संचय [पु.सं.]– एकत्र करना, जोड़, बड़ी राशि, ढेर, संधि

सचेष्ट [वि.सं.]– चेष्टाशील, चेष्टा करने वाला

सनद [स्त्री.(अ.)]– वह जिस पर पीठ टेकी जाए, प्रमाण-पत्र, अनुमति-पत्र

सवेरा [पु.]– प्रातःकाल, सुबह, सूर्योदय काल, सबेरा

समाँ [पु.]– समय, ऋतु, बहार

समृद्ध [वि.सं.]– संपन्न, सशक्त, धनी, उन्नतिशील

सरवर [पु.फा.]– सरोवर, ताल, तालाब, झील

सरित [स्त्री.सं.]– नदी, सरिता, धारावाहिक

साक्षात्कार [सं.पु.]– प्रत्यक्ष भेंट, मुलाकात, ज्ञान, अनुभूति

साधना [स्त्री.सं.]– अभ्यास करना, आराधना, उपासना, इकट्ठा करना

सिंधु [पु.सं.]– समुद्र, सागर, एक प्रसिद्ध नदी, दान

सिक्त [वि.सं.]– सींचा हुआ, भींगा हुआ, गीला

सुयश [पु.सं.]– सुंदर यश, सुकीर्ति

सुरम्य [वि.सं.]– अति रमणीय, मनोहर

सूक्ष्म पदार्थ [वि.सं.]– बहुत बारीक तत्व, वस्तु

सूक्ष्मदर्शी [वि.सं.]– बहुत बारीक देखने वाला यंत्र, अणु रूप देखने वाला यंत्र

स्नेह [पु.सं.]– प्रेम, कोमलता, तेल, दयालुता

ह

हतप्रभ [वि.सं.]– जिसकी कांति क्षीण हो गई हो

हय-टाप [स्त्री.सं.]– घोड़े के पाँव के पृथ्वी पर पड़ने से उठी आवाज़

पहेलियों के उत्तर

पाठ संख्या			
1.	**मातृभूमि**	*शब्दजाल*	अलगोजा, बीन, बाँसुरी, सींगी, शहनाई, नादस्वरम, भंकोरा, शंख
		आज की पहेली	हिमालय, गंगा, भारत, कलियाँ, पवन
3.	**पहली बूँद**	*शब्द पहेली*	नगाड़ा, नयन, जलधर, दूब, अश्रु, अंबर
5.	**रहीम के दोहे**	*आज की पहेली*	चना, माचिस
6.	**मेरी माँ**	*आज की पहेली*	मंगलमयी, प्रत्येक, ग्यारह, धार्मिक, महान, स्वाधीन, दुखभरी, साधारण, छोटी, बड़ा, खूब, मनोहर
7.	**जलाते चलो**	*आज की पहेली*	पवन, मारुत, वायु, समीर, बयार, अनिल
8.	**सत्रिया और बिहू नृत्य**	*आज की पहेली*	मूली, नारियल, होंठ, चींटी
9.	**मैया मैं नहिं माखन खायो**	*आज की पहेली*	खोया, पनीर, मिठाई, छाछ, लस्सी, मक्खन, शरबत, आइसक्रीम
11.	**चेतक की वीरता**	*आज की पहेली*	जलज, पतंग, अंधेरा, गुलाबजामुन, मानचित्र
12.	**हिंद महासागर में छोटा-सा हिंदुस्तान**	*आज की पहेली*	मेरा भारत मेरा गौरव
13.	**पेड़ की बात**	*आज की पहेली*	रात, तमाम, ममता, ताप, पल्लव, वसंत, तना, नाम, मज़बूत, तरल, लटक, कम

’ब्रेल भारती’ हिंदी वर्ण व गिनती

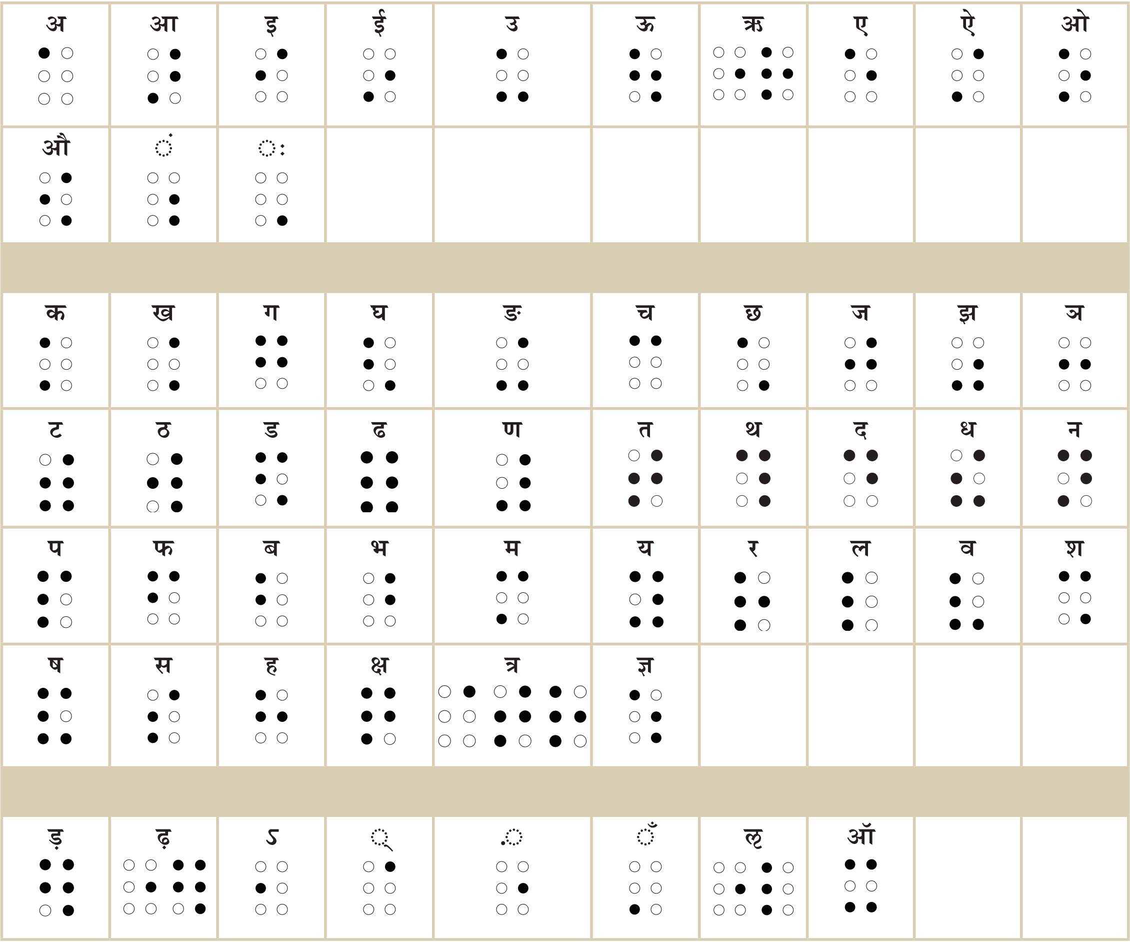

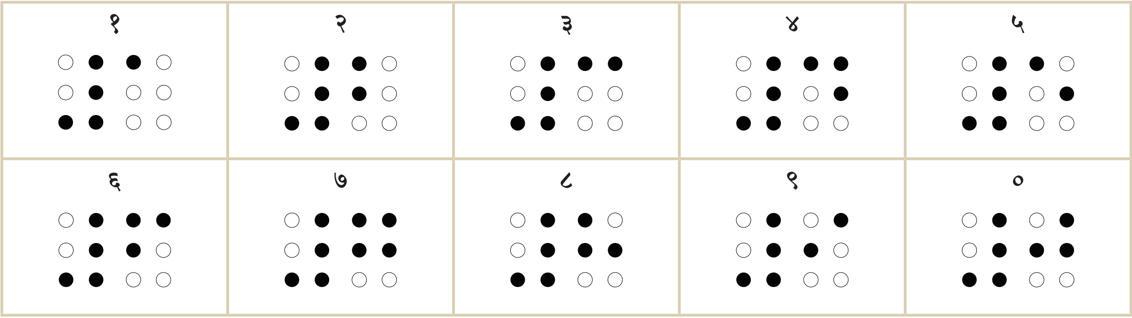

टिप्पणी

टिप्पणी

टिप्पणी

टिप्पणी